CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi



नन्दा; द्वितीया, सप्तमी और द्वादशी इनकी संज्ञा भद्रा; तृतीया, अष्टमी एवं त्रयोदशी इनकी संज्ञा जया; चतुर्थी, नवमी और चतुर्दशी इनकी संज्ञा रिक्ता; तथा पञ्चमी, दशमी और पूर्णिमा (कृष्णपक्ष में अमावास्या) इन तिथियों की संज्ञा पूर्णा है ॥ ६ ॥

स्पष्टता के लिये चक्र—

| संज्ञा | नन्दा | भद्रा | जया | रिक्ता | पूर्णा |
|---|---|---|---|---|---|
| | १ | २ | ३ | ४ | ५ |
| तिथि | ६ | ७ | ८ | ९ | १० |
| | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ वा ३० |

वारवेला-कथनम्—

तुर्योऽर्के सप्तमश्चन्द्रे द्वितीयो भूमिनन्दने ।
चन्द्रपुत्रे पञ्चमश्च देवाचार्ये तथाष्टमः ॥ ७ ॥
दैत्यपूज्ये तृतीयश्च शनौ षष्ठश्च निन्दितः ।
प्रहरार्धः शुभे कार्ये वारवेला च कथ्यते ॥ ८ ॥

वारवेला (अर्द्धप्रहरा) का विचार—रविवार में चतुर्थ अर्द्धप्रहर (याने डेढ़ पहर दिन उठने के वाद दो प्रहर तक), सोमवार में सप्तम, मंगल में द्वितीय, बुध में पञ्चम, बृहस्पति में अष्टम, शुक्र में तृतीय, एवं शनिवार में षष्ठ अर्द्धप्रहर को वारवेला कहते हैं और सभी शुभ कामों में यह वर्जित है ॥ ७-८ ॥

वारवेलाचक्र—

| र. | चं. | मं. | बु. | बृ. | शु. | श. | दिन |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ४ | ७ | २ | ५ | ८ | ३ | ६ | अर्धप्रहर |

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi



विवाहे त्याज्यदोषाः—

भद्रां क्रकचयोगं च तिथ्यन्तं यमघण्टकम् ।
दग्धां तिथिं च भान्तं च कुलिकं च विवर्जयेत् ॥ ९ ॥

विवाह में त्याज्य—भद्रा ( अग्रिम श्लोकोक्त ), क्रकचयोग, सभी तिथियों की अन्तिम दो घटी, यमघण्ट, दग्धतिथि, नक्षत्रों के अन्त की तीन घटी ( यह सब दोष आगे कहेंगे ), कुलिक इन सब दोषों का विवाह में अवश्य त्याग करना चाहिए ॥ ९ ॥

तिथिपरा भद्रावस्थितिः—

दशम्यां च तृतीयायां कृष्णपक्षे परे दले ।
सप्तम्यां च चतुर्दश्यां विष्टिः पूर्वदले स्मृता ॥ १० ॥
एकादश्यां चतुर्थ्यां च शुक्लपक्षे परे दले ।
अष्टम्यां पूर्णिमायां च विष्टिः पूर्वदले स्मृता ॥ ११ ॥

भद्रा की अवस्थिति—कृष्णपक्ष की तृतीया एवं दशमी तिथिके उत्तरार्ध में भद्रा रहती है। सप्तमी एवं चतुर्दशी के पूर्वार्द्ध में भद्रा रहा करती है। इसी तरह शुक्ल पक्ष की चतुर्थी और एकादशी के उत्तरार्द्ध में तथा अष्टमी, पूर्णिमा के पूर्वार्द्ध में भद्रा का अवस्थान जानना चाहिए ॥ १०–११ ॥

भद्रावस्थानचक्र—

| पक्ष | तिथि | दल |
|---|---|---|
| कृष्ण | ३।१० | पर |
| | ७।१४ | पूर्व |
| शुक्ल | ४।११ | पर |
| | ८।१५ | पूर्व |

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi



राशिपरा भद्रावस्थितिः—

**मेषवृषभमिथुनालिनि स्वर्गं कन्यामृगधनुतौलिनि नागे।**
**कर्ककुम्भहरिमीने मर्त्यें विचरति भद्रा त्रिभुवनमध्ये ॥१२॥**

स्वर्ग, मर्त्य, पाताल के भेद से भद्रा का वासस्थान—यदि चन्द्रमा मेष, वृष, मिथुन, और वृश्चिक इन राशियों पर रहे तो जानना कि भद्रा स्वर्ग में है। मकर, कन्या, तुला और धनु इन राशियों में चन्द्रमा रहे तो भद्रा का वास नागलोक (पाताल) में जाने। उसी तरह सिंह, कर्क, कुम्भ और मीन इन राशियों पर चन्द्रमा के रहने पर भद्रा का वास मर्त्यलोक में जानना चाहिए॥ १२ ॥

भद्रावासफलम्—

**स्वर्गे भद्रा शुभं कुर्यात् पाताले च धनागमम्।**
**मृत्युलोके यदा विष्टिः सर्वकार्यविनाशिनी ॥ १३ ॥**

उसके अनुसार भद्रावास का फल—स्वर्ग में भद्रा रहे तो शुभ हो, पाताल में रहे तो धन का आगम हो। परन्तु यदि भद्रा मृत्युलोक में रहे तो सभी कामों का नाश करने वाली होती है। आशय यह है कि केवल मर्त्यलोक में रहने से भद्रा का दोष लगता है, अन्यथा नहीं ॥ १३ ॥

भद्रा-मुखज्ञानं, तत्फलं च—

**संमुखे मृत्युलोकस्था पाताले च अधोमुखी।**
**ऊर्ध्वस्था स्वर्गगा भद्रा संमुखे मरणप्रदा ॥ १४ ॥**

भद्रामुखज्ञान और फल—यदि भद्रा मर्त्यलोक में (पूर्वश्लोकानुसार) रहे तो सम्मुख, पाताल में रहे तो अधोमुख, एवं स्वर्ग में रहने से ऊर्ध्वमुख कहा जाता है। यदि भद्रा सम्मुख पड़े तो मरण कहना चाहिए। अर्थतः ऊर्ध्वमुख और अधोमुख रहने से अच्छा होता है ॥ १४ ॥

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi


दिनरात्रिभेदेन भद्रापरिहारः—

**दिवा भद्रा यदा रात्रौ रात्रिभद्रा यदा दिने ।**
**तदा विष्टिकृतो दोषो न भवेत्सर्वसौख्यदा ॥ १५ ॥**

दिन-रात्रि के भेद से भद्रा का परिहार—( तिथियों के पूर्वार्ध की भद्रा दिवाभद्रा और उत्तरार्ध की भद्रा रात्रिभद्रा मानी गई है ) यदि दिवाभद्रा ( याने पूर्वार्ध वाली ) रात्रि में पड़े और रात्रिभद्रा दिन में पड़े तो भद्रा का दोष किसी काम में नहीं लगता, प्रत्युत वह सौख्य देने वाली होती है ॥ १५ ॥

दग्धतिथयः—

**मीने चापे द्वितीया च चतुर्थी वृषकुम्भयोः ।**
**मेषकर्कटयोः षष्ठी कन्यायुग्मेषु चाष्टमी ॥ १६ ॥**
**दशमी वृश्चिके सिंहे द्वादशी मकरे तुले ।**
**एतास्तु तिथयो दग्धाः शुभे कर्मणि वर्जिताः ॥ १७ ॥**

दग्धतिथि—धनु, मीन राशि में सूर्य रहे तो द्वितीया; वृष, कुम्भ राशि के सूर्य में चतुर्थी; मेष, कर्क राशि के सूर्य में षष्ठी; मिथुन,कन्या राशि के सूर्य में अष्टमी; एवं सिंह, वृश्चिक राशि के सूर्य में दशमी, तथा तुला, मकर के सूर्य में द्वादशी, ये दग्ध तिथियां कहलाती हैं । इन में कोई शुभ कर्म न करना चाहिए ॥ १६–१७ ॥

मासान्तादिषु वर्ज्यकालः—

**मासान्ते दिनमेकं तु तिथ्यन्ते घटिकाद्वयम् ।**
**घटिकानां त्रयं भान्ते विवाहे परिवर्जयेत् ॥ १८ ॥**

मासान्तादि में वर्जित समय—मासान्त ( सौर गणना से ) में एक दिन, तिथ्यन्त में केवल दो घटी, तथा नक्षत्रान्त में तीन घटी सभी शुभ कामों में ( खास कर विवाह में ) अवश्य छोड़ देना चाहिए ॥ १८ ॥

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi



तत्फलम्—

**मासान्ते म्रियते कन्या तिथ्यन्ते स्यादपुत्रिणी।**
**नक्षत्रान्ते च वैधव्यं विष्टौ मृत्युर्द्वयोर्भवेत् ॥ १९ ॥**

मासान्तादि का फल—यदि मासान्त में विवाह करे तो कन्या मरे, तिथ्यन्त में विवाह करे तो उस कन्या को कभी पुत्र न हो, नक्षत्रान्त में करे तो वर की मृत्यु हो, ऐसे ही भद्रा में विवाह होनेसे कन्या, वर ( दोनों ) मर जायं ॥ १९ ॥

विवाहादौ कुलिकयोगः * ( तिथिदिनवशेन )—

**सूर्ये च सप्तमी सोमे षष्ठी भौमे च पञ्चमी।**
**बुधे चतुर्थी देवेज्ये तृतीया भृगुनन्दने ॥ २० ॥**
**द्वितीया वर्जनीया च प्रतिपच्च शनैश्चरे।**
**कुलिकाख्यो हि योगोऽयं विवाहादौ न शस्यते ॥२१॥**

दिन के वश से कुलिक योग—यदि एतवार के दिन सप्तमी पड़े, सोम को षष्ठी पड़े, मंगल को पञ्चमी पड़े, बुध को चतुर्थी पड़े, बृहस्पति को तृतीया पड़े, शुक्र को द्वितीया पड़े एवं शनिश्चर को प्रतिपदा पड़े तो कुलिक योग होता है। अर्थतः तिथि और दिन की संख्या का योग ज्यों ही आठ के बराबर होगा, कुलिक योग पड़ जायगा। यह योग विवाह आदि शुभ कामों के लिए अच्छा नहीं है ॥ २०–२१ ॥

---

* कुलिकयोगबोधकं मदीयं पद्यम्—

तिथिवासरयोर्योगो यदा स्यादष्टसंमितः।
तदा कुलिकयोगः स्याद्विवाहादौ विवर्जितः॥
( पक्षद्वयेऽपि सप्तमीपर्यन्तमेव कुलिकयोगस्य संभवः )

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi



कुलिकयोगचक्र—

| सू० | चं० | मं० | बु० | बृ० | शु० | श० | दिन |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ७ | ६ | ५ | ४ | ३ | २ | १ | तिथि |
| ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | दि+ति |

अवर्गादीनां गरुडादिसंज्ञाः—

**अवर्गो गरुडो ज्ञेयो बिडालः स्यात्कवर्गकः ।**
**चवर्गः सिंहनामा स्याट्टवर्गः कुक्कुरः स्मृतः ॥ २२ ॥**
**सर्पाख्यः स्यात्तवर्गोऽपि पवर्गो मूषकः स्मृतः ।**
**यवर्गो मृगनामा स्यात्तथा मेषः शवर्गकः ॥ २३ ॥**

वर्गसंज्ञा—अवर्ग = गरुड़, कवर्ग = बिड़ाल (बिल्ली), चवर्ग = सिंह, टवग = कुक्कुर, तवर्ग = सर्प, पवर्ग = मूषक (चूहा), यवर्ग=हरिण, तथा शवर्ग=मेष ये आठों वर्ग कहे गए हैं ॥२२-२३॥

स्पष्टार्थचक्र—

| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अवर्ग | कवर्ग | चवर्ग | टवर्ग | तवर्ग | पवर्ग | यवर्ग | शवर्ग |
| गरुड़ | बिड़ाल | सिंह | कुत्ता | सर्प | मूषक | हरिण | मेष |

वर्गभेदेन मित्रसमशत्रुकथनम्—

**स्ववर्गात् पञ्चमः शत्रुश्चतुर्थो मित्रसंज्ञकः ।**
**उदासीनस्तृतीयश्च वर्गभेदस्त्रिधोच्यते ॥ २४ ॥**

उपर्युक्त वर्गों में मित्रादि तीनों भेद का निरूपण—निज वर्ग से पञ्चम शत्रु, चतुर्थ मित्र एवं तृतीय उदासीन (सम) कहा जाता है। जैसे कि—अवर्ग से पांचवां तवर्ग है अतः गरुड़ का सर्प शत्रु हुआ, ऐसे ही सब में जानना चाहिये ॥ २४ ॥

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi


स्पष्टता के लिए चक्र—

| अवर्ग | कवर्ग | चवर्ग | टवर्ग | तवर्ग | पवर्ग | यवर्ग | शवर्ग | वर्ग |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तवर्ग | पवर्ग | यवर्ग | शवर्ग | अवर्ग | कवर्ग | चवर्ग | टवर्ग | शत्रु |
| टवर्ग | तवर्ग | पवर्ग | यवर्ग | शवर्ग | अवर्ग | कवर्ग | चवर्ग | मित्र |
| चवर्ग | टवर्ग | तवर्ग | पवर्ग | यवर्ग | शवर्ग | अवर्ग | कवर्ग | उदासीन |

गणविचारः—

**अश्विनीमृगरेवत्यो हस्तः पुष्यः पुनर्वसुः ।**
**अनुराधा श्रुतिः स्वाती कथ्यते देवतागणः ॥ २५ ॥**
**तिस्रः पूर्वाश्चोत्तराश्च तिस्रोऽप्यार्द्रा च रोहिणी ।**
**भरणी च मनुष्याख्यो गणश्च कथितो बुधैः ॥ २६ ॥**
**कृत्तिका च मघाऽऽश्लेषा विशाखा शततारकाः ।**
**चित्रा ज्येष्ठा धनिष्ठा च मूलं रक्षोगणः स्मृतः ॥ २७ ॥**

देव, मनुष्य, राक्षस के भेद से गणनिरूपण—अश्विनी, मृगशिर, रेवती, हस्त, पुष्य, पुनर्वसु, अनुराधा, श्रवण, स्वाती इतने नक्षत्र देवगण; उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़, उत्तरभाद्र, पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाषाढ़, पूर्वभाद्र, आर्द्रा, रोहिणी, तथा भरणी इतने नक्षत्र मनुष्यगण; एवं कृत्तिका, मघा, आश्लेषा, विशाखा, शतभिषा, चित्रा, ज्येष्ठा, मूल, धनिष्ठा इतने नक्षत्र राक्षसगण होते हैं ॥ २५–२७ ॥

गणवशेन फलम्—

**स्वगणे परमा प्रीतिर्मध्यमा देवमर्त्ययोः ।**
**मर्त्यराक्षसयोर्मृत्युः कलहो देवरक्षसोः ॥ २८ ॥**

यदि वर कन्या दोनों का एक ही गण हो तो दोनों में बड़ा प्रेम हो, यदि दोनों में एक देवगण दूसरा मानवगण हो तो मध्यम

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi


प्रेम कहे, यदि एक देवगण दूसरा राक्षसगण हो तो दोनों में प्रेम नहीं वैरभाव हो जाय। ऐसे ही यदि एक मनुष्यगण, दूसरा राक्षसगण हो तो (बहुधा) मनुष्यगण वाले वर (या कन्या) की मृत्यु हो जाती है॥ २८॥

भकूटविचारः—

षष्ठाष्टके मृतिर्नन्दनवमे त्वनपत्यता।
नैःस्वं द्विर्द्वादशेऽन्येषु दम्पत्योः प्रीतिरुत्तमा॥ २९॥

मेलापक-विचार से यदि षष्ठाष्टक योग पड़े तो मृत्यु हो, नवपञ्चक पड़े तो सन्तान-हीन हो, द्विर्द्वादश पड़े तो दरिद्रता जाने, इन योगों के अतिरिक्त रहे तो वर कन्या में परस्पर प्रीति रहेगी ऐसा जानना चाहिये। (यदि वर कन्या में एक की राशि से दूसरे की राशि छठी या आठवीं पड़े तो षष्ठाष्टक, नौवीं-पांचवीं पड़े तो नवपञ्चक एवं दूसरो बारहवीं पड़े तो द्विर्द्वादश योग जानना चाहिये)॥ २९॥

वर्णविचारः—

मीनालिकर्कटा विप्राः क्षत्रं मेषो हरिर्धनुः।
शूद्रो युग्मं तुला कुम्भो वैश्यः कन्या वृषो मृगः॥३०॥

मीन, वृश्चिक और कर्क ये ब्राह्मण वर्ण; मेष, सिंह, धनु क्षत्रिय वर्ण; मिथुन, तुला, कुम्भ शूद्र वर्ण तथा कन्या, वृष, मकर वैश्य वर्ण कहे गये हैं। (इसके अनुसार वर-कन्या की राशि से उनके वर्ण का ज्ञान करना चाहिये)॥ ३०॥

कन्यावर्णवशेन फलम्—

नोत्तमामुद्वहेत्कन्यां ब्राह्मणीं च विशेषतः।
म्रियते हीनवर्णश्च ब्रह्मणा रक्षितो यदि॥ ३१॥
विप्रवर्णा च या नारी शूद्रवर्णश्च यः पतिः।
ध्रुवं भवति वैधव्यं शक्रस्य दुहिता यदि॥ ३२॥

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi



पूर्वकथनानुसार यदि वर के राशिवर्ण से कन्या-राशि का वर्ण उत्तम हो तो विवाह न करना चाहिये ( अर्थतः ब्राह्मण राशि वर्ण वाले वर का क्षत्रिय, वैश्य एवं शूद्र राशि वर्ण वाली कन्या के साथ, क्षत्रिय राशि वाले वर का वैश्य-शूद्र राशि वर्ण की कन्या के साथ, इसी तरह वैश्य राशि वर्ण का शूद्र राशि वर्ण वाली कन्या के साथ विवाह उत्तम है, समान राशि वर्ण में भी ग्राह्य होता है ) तत्रापि यदि कन्या ब्राह्मण राशि वर्ण वाली हो तो अवश्य ही मना है, क्योंकि साक्षात् ब्रह्मा से भी रक्षित होने पर हीन राशि वर्ण वर श्रेष्ठ राशि वर्ण वाली कन्या से विवाह करे तो निश्चय मर जाय। उस में भी यदि कन्या ब्राह्मण राशि वर्ण, और वर शूद्र राशिवर्ण हो जाय तो इन्द्र की भी कन्या विधवा हो सकती है, अतः इन सब का विचार भली-भांति करके विवाह स्थिर करें ॥ ३१–३२ ॥

नक्षत्राणां पूर्वभागादिसंज्ञाः—

**पौष्णादिकं षट्कमुशन्ति पूर्वमार्द्रादिकद्वादश मध्यमेवम् ।**
**पौरन्दराद्यं नवकं भचक्रं परं च भागं गणका विदग्धाः ॥३३॥**

रेवती से मृगशिर तक छः नक्षत्रों को पूर्व भाग, आर्द्रा से अनुराधा तक बारह नक्षत्रों को मध्यभाग, और ज्येष्ठा से उत्तर-भाद्र तक नौ नक्षत्रों को पूर्वाचार्यों ने पर भाग कहा है ॥३३॥

चक्र—

| संज्ञा | नक्षत्र— |
|---|---|
| पूर्व भाग | रेवती, अश्विनी, भरणी, कृत्तिका, रोहिणी, मृगशिर, |
| मध्य भाग | आर्द्रा, पुन., पु., आ., म., पू.फ., उ.फ., ह., चि., स्वा., वि., अनु., |
| पर भाग | ज्ये., मू., पू. षा., उ. षा, श्र., ध., श. पू. भा., उ. भा., |

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi


तेषां फलम्—

**पूर्वभागे पतिः श्रेष्ठो मध्यभागे च कन्यका ।**
**परभागे च नक्षत्रे द्वयोः प्रीतिर्महीयसी ॥ ३४ ॥**

यदि वर-कन्या (दोनों) के जन्मनक्षत्र पूर्वभाग (रेवती से मृगशिर तक) में पड़े तो वर के लिये अच्छा (याने वर में कन्या अधिक प्रेम करती है), मध्यभाग (आर्द्रा से अनुराधा तक) पड़े तो कन्या के लिये अच्छा (कन्या में वर अधिक प्रेम करता है) तथा परभाग (ज्येष्ठा से उत्तरभाद्र तक) में पड़े तो दोनों में परस्पर प्रेम अधिक होता है ॥ ३४ ॥

राशीनां चतुष्पदादिसंज्ञा—

**चापान्त्यार्धं मृगाद्यर्धं मेषसिंहौ तथा वृषः ।**
**चतुष्पदाः कीटसंज्ञः कर्कोऽलिश्च सरीसृपः ॥ ३५ ॥**
**तुला च मिथुनं कन्या पूर्वार्द्धं धनुषश्च यत् ।**
**द्विपदोऽथ मृगान्त्यार्द्धं कुम्भमीनौ जलाश्रिताः ॥ ३६ ॥**

धनु का उत्तरार्ध, मकर का पूर्वार्ध, मेष, सिंह और वृष ये राशि चतुष्पद-संज्ञक हैं। एवं कर्क कीट-संज्ञक, वृश्चिक सरीसृप-संज्ञक, तुला, मिथुन, कन्या (संपूर्ण राशि) तथा धनु का पूर्वार्ध इतने द्विपद-संज्ञक हैं। कुम्भ, मीन तथा मकर का उत्तरार्ध ये जलचर-संज्ञक हैं ॥ ३५-३६ ॥

वश्यविचारः—

**सिंहं विना वशाः सर्वे द्विपदानां चतुष्पदाः ।**
**भक्ष्या जलचरास्तेषां भयस्थाने सरीसृपाः ॥ ३७ ॥**

चतुष्पदों में सिंह के अतिरिक्त सभी द्विपद के वश्य हैं, और जलचर भक्ष्य हैं, केवल सरीसृप भय देने वाले होते हैं ॥ ३७ ॥

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi


योनिज्ञानम्—

* अश्विनी वारुणश्चाश्वौ रेवती भरणी गजः ।
पुष्यश्च कृत्तिका छागो नागश्च रोहिणी मृगः ॥ ३८ ॥
आर्द्रा मूलमपि श्वा च मूषकः फल्गुनी मघा ।
मार्जारोऽदितिराश्लेषा गोजातिश्चोत्तराद्वयम् ॥ ३९ ॥
महिषौ स्वातिहस्तौ च मृगो ज्येष्ठानुराधिका ।
व्याघ्रश्चित्रा विशाखा च श्रुत्याषाढौ च मर्कटौ ॥ ४० ॥
वसुभाद्रपदौ सिंहौ वैश्वं च नकुलोऽभिजित् ।
योनयः कथिता भानां वैरमैत्रे विचार्यताम् ॥ ४१ ॥

इसकी टीका मूल ही से स्पष्ट है, तथापि अगले श्लोक के चक्र में देख लें ॥ ३८-४१ ॥

योनिवैरम्—

गोव्याघ्रं गजसिंहमश्वमहिषं स्वैणं च बभ्रूरगं
वैरं वानरमेषकं च सुमहत्तद्वद्बिडालोन्दुरु ।
लोकानां व्यवहारतो निगदितं ज्ञात्वा प्रयत्नादिदं
दंपत्योर्नृपभृत्ययोरपि सदा वर्ज्यं शुभस्यार्थिभिः ॥४२॥

अब प्राकृतिक योनिवैर दिखलाते हैं—गौ को व्याघ्र के साथ, हाथी को सिंह के साथ, घोड़े को महिष के साथ, नकुल को सर्प के साथ, वानर को छाग के साथ एवं बिल्ली को चूहे के साथ वैरभाव रहता है, अतः वरकन्या के जन्म-नक्षत्र के अनुसार यदि योनिवैर पड़े तो विवाह न करे अन्यथा वर-कन्या में सदैव वैर-भाव रहेगा। ऐसे ही सेव्य-सेवक में भी विचार करके सेवक की नियुक्ति करनी चाहिये ॥ ४२ ॥

---

* अत्र फल्गुनी-शब्देन पूर्वफल्गुनी, आषाढ़-शब्देन पूर्वाषाढ़, भाद्रपद-शब्देन पूर्वभाद्रपदा इत्यवधेयम् ।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi



योनिवैरविचारचक्र—

| योनिवैरं | नक्षत्राणि | योनिः | योनिवैरं | नक्षत्राणि | योनिः |
|---|---|---|---|---|---|
| महिष | अश्विनी | अश्व | व्याघ्र | उ. फ. | गौ |
| | शतभिषा | | | उ. भा. | |
| सिंह | भरणी | गज | अश्व | स्वाती | महिष |
| | रेवती | | | हस्त | |
| मर्कट | पुष्य | छाग | श्वान | ज्येष्ठा | मृग |
| | कृत्तिका | | | अनुराधा | |
| नकुल | मृग | सर्प | गौ | विशाखा | व्याघ्र |
| | रोहिणी | | | चित्रा | |
| मृग | आर्द्रा | श्वान | छाग | पू. षा. | मर्कट |
| | मूल | | | श्रवण | |
| मार्जार | पू. फ. | मूषक | गज | पू. भा. | सिंह |
| | मघा | | | धनिष्ठा | |
| मूषक | अश्लेषा | मार्जार | सर्प | उ. षा. | नकुल |
| | पुनर्वसु | | | अभिजित् | |

भकूटे विशेषः—

मरणं पितृमात्रोश्चेत्सङ्ग्राह्यं नवपञ्चकम् ।
वरस्य पंचमे कन्या कन्याया नवमे वरः ॥ ४३ ॥
एतत्त्रिकोणकं ग्राह्यं पुत्रपौत्रसुखावहम् ।
षडष्टके भवेन्मृत्युर्यत्नतस्तं विचारयेत् ॥ ४४ ॥

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi


यदि वर का पिता और कन्या की माता विवाह-विचार के पहले मर गई हो तो नव-पञ्चक में भी विवाह हो सकता है, क्योंकि इस नवपञ्चक ( वर की राशि से कन्या की राशि नौवीं और कन्या की राशि से वर की राशि पांचवीं ) का अनिष्ट फल उन्हीं दोनों के ऊपर पड़ता है। किन्तु वर की राशि से कन्या की राशि पांचवीं और कन्या की राशि से वर की राशि नौवीं इस तरह का नव-पञ्चक पड़े तो यह पुत्र-पौत्र-सुखों को देने वाला होता है ( यह उत्तम है ), तथा षडष्टक में मृत्यु होती है अतः षडष्टक के लिए यत्नपूर्वक विचार करना चाहिए ॥ ४३-४४ ॥

विवाहे बलविचारः—

**वरस्य भास्करबलं कन्यायाश्च गुरोर्बलम् ।**
**द्वयोश्चन्द्रबलं ग्राह्यं विवाहो नान्यथा भवेत् ॥ ४५ ॥**

विवाह में वर के लिये सूर्य का बल, कन्या के लिए बृहस्पति का बल और वर-कन्या दोनों के लिए चन्द्रमा का बल विचारणीय है। यदि सूर्य, गुरु एवं चन्द्रमा का बल पूर्ण न हो तो विवाह न करना चहिये ॥ ४५ ॥

वरस्य सूर्यविचारः—

**अष्टमे च चतुर्थे च द्वादशे च दिवाकरे ।**
**विवाहितो वरो मृत्युं प्राप्नोत्यत्र न संशयः ॥ ४६ ॥**
**जन्मन्यथ द्वितीये वा पंचमे सप्तमेऽपि वा ।**
**नवमे च दिवानाथे पूजया पाणिपीडनम् ॥ ४७ ॥**
**एकादशे तृतीये वा षष्ठे वा दशमेऽपि वा ।**
**वरस्य शुभदो नित्यं विवाहे दिननायकः ॥ ४८ ॥**

यदि वर की जन्मराशि से आठवें, चौथे एवं बारहवें में सूर्य पड़े तो ऐसे समय में विवाह करने पर वर मर जाता है, इसमें संशय नहीं है। यदि पहले, दूसरे, पांचवें, सातवें एवं नौवें में सूर्य

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi


पड़े तो सूर्य का दान पूजादि करके विवाह शुभ हो सकता है। और यदि ग्यारहवें, तीसरे, छठें या दशवें इन स्थानों में सूर्य पड़े तो विवाह अधिक शुभप्रद होता है ॥ ४६–४८ ॥

बृहस्पतिविचारः—

**अष्टमे द्वादशे वापि चतुर्थे वा बृहस्पतौ ।**
**पूजा तत्र न कर्तव्या विवाहे प्राणनाशकः ॥ ४९ ॥**
**षष्ठे जन्मनि देवेज्ये तृतीये दशमेऽपि वा ।**
**भूरिपूजापूजितः स्यात्कन्यायाः शुभकारकः ॥ ५० ॥**
**एकादशे द्वितीये वा पंचमे सप्तमेऽपि वा ।**
**नवमे च सुराचार्यः कन्यायाः शुभकारकः ॥ ५१ ॥**

यदि कन्या की राशि से आठवें, बारहवें और चौथे बृहस्पति हो तो पूजा करने पर भी विवाह न करना चाहिये, क्योंकि ऐसी स्थिति में बृहस्पति प्राणनाशक होते हैं। यदि छठे, पहिले, तीसरे एवं दशवें में रहें तो पूजा करने पर शुभकारक हो जाते हैं। यदि ग्यारहवें, दूसरे, पांचवें, सातवें या नौवें बृहस्पति पड़ें तो अच्छा है, अतः इसी हालत में विवाह करना शुभ है ॥ ४९–५१ ॥

चन्द्रविचारः—

**आद्ये चन्द्रः श्रियं कुर्यान्मनस्तोषं द्वितीयके ।**
**तृतीये धनसम्पत्ति चतुर्थे कलहागमम् ॥ ५२ ॥**
**पंचमे ज्ञानवृद्धिं च षष्ठे सम्पत्तिमुत्तमाम् ।**
**सप्तमे राजसम्मानं मरणं चाष्टमे तथा ॥ ५३ ॥**
**नवमे धर्मलाभञ्च दशमे मानसेप्सितम् ।**
**एकादशे सर्वलाभं द्वादशे हानिमेव च ॥ ५४ ॥**

यदि–वर कन्या की जन्मराशि से चन्द्रमा प्रथम स्थान में हो तो लक्ष्मी को बढ़ावें तथा दूसरे में मनःसन्तोष, तीसरे में धन-सम्पत्ति, चौथे में झगड़ा, पांचवें में ज्ञान की वृद्धि, छठे में उत्तम

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi


सम्पत्ति, सातवें में राजा से सम्मान, आठवें में मरण, नवम में धर्म का लाभ, दशम में अभीष्ट-सिद्धि, ग्यारहवें में सर्व-लाभ एवं बारहवें में हानि करता है ॥ ५२-५४ ॥

वयःपरत्वेन कन्याया गौर्यादिसंज्ञा—

**अष्टवर्षा भवेद्गौरी नववर्षा च रोहिणी ।**
**दशवर्षा भवेत्कन्या अत ऊर्ध्वं रजस्वला ॥ ५५ ॥**

आठ वर्ष की उमर वाली कन्या गौरी, नौ वर्ष की रोहिणी, दशवर्ष वाली कन्या तथा इसके ऊपर उमर वाली रजस्वला कही जाती है ॥ ५५ ॥

तद्दानफलम्—

**गौरीं ददन्नागलोके वैकुण्ठे रोहिणीं ददत् ।**
**कन्यां ददन्मृत्युलोके रौरवे तु रजस्वलाम् ॥ ५६ ॥**

गौरी-अवस्था में ( ८ वर्ष में ) कन्यादान करने से नागलोक, रोहिणी ( ९ वर्षा ) का दान करने से वैकुण्ठ, कन्या ( १० वर्ष ) में दान करने से मर्त्यलोक एवं रजस्वला-दान करने से रौरव नामक नरक में यजमान जाता है ( अतः १० वर्ष के भीतर कन्या का विवाह करना चाहिये ) ॥ ५६ ॥

तत्र बलविचारः—

**गौरी गुरोर्बले देया रोहिणी भास्करस्य च ।**
**कन्या चन्द्रबले देया सर्वदोषविवर्जिता ॥ ५७ ॥**

गौरी-अवस्था में प्रधान बृहस्पति का बल, रोहिणी-अवस्था में सूर्य का बल, एवं कन्या की अवस्था में केवल चन्द्रमा का बल देखना चाहिये ॥ ५७ ॥

मतान्तरेण—

**गुर्विन्द्वर्कबला गौरी गुर्विन्दुबलरोहिणी ।**
**रवीन्दुबलजा कन्या प्रौढा लग्नबला स्मृता ॥ ५८ ॥**


Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi



गौरी के लिए बृहस्पति, चन्द्रमा और सूर्य इन तीनों का बल; रोहिणी के लिए बृहस्पति और चन्द्रमा का बल; कन्या के लिए सूर्य और चन्द्रमा का बल लेना अपेक्षित है। परन्तु प्रौढ़ा के लिए केवल लग्न-बल से भी विवाह हो सकता है ॥ ५८ ॥

ग्रहबलफलम्—

**जीवो जीवनदाता च द्रव्यदाता च चन्द्रमाः।**
**तेजोदाता भवेत्सूर्यो भूमिदाता महीसुतः ॥ ५९ ॥**
**जीवहीना मृता कन्या सूर्यहीनो मृतो वरः।**
**चन्द्रहीना गता लक्ष्मीः स्थानहानिः कुजेऽबले ॥ ६० ॥**

वर-कन्या के विवाह के अवसर पर बृहस्पति जीवन देने वाले, चन्द्रमा धन देने वाले, सूर्य तेज ( प्रभाव ) देने वाले तथा मंगल भूमि देने वाले होते हैं ( अर्थात् ये सब ग्रह यदि पूर्ण अनुकूल हों तो सर्वथा उत्तम है ) यदि गुरुबल पर्याप्त न हो तो कन्या मर जाय, सूर्य-बल न हो तो वर की मृत्यु हो, चन्द्र-बल न हो तो लक्ष्मी का नाश हो तथा मंगल का बल न रहे तो स्थान-हानि हो, अतः यथासंभव इन सभी ग्रहों का बल देख लेना अधिक श्रेयस्कर है ॥ ५९-६० ॥

प्रौढात्वे दोषः—

**सम्प्राप्तैकादशे वर्षे या कन्या न विवाहिता।**
**मासे मासे पिता भ्राता तस्याः पिबति शोणितम् ॥६१॥**

जिस कन्या का विवाह एकादश वर्ष आरम्भ होने के पहले नहीं होता उसके पिता, माता और ज्येष्ठ भाई प्रति मास उसका शोणित ( मासिकधर्म-सम्बधी ) का पान करने का दोष पाते हैं। (इसलिए १० वर्ष के भीतर कन्यादान कर देना परमावश्यक है) ॥६१॥

प्रौढाया लग्नविचारः—

**द्वादशैकादशे वर्षे तस्याः शुद्धिर्न जायते।**

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi



पूजाभिः शकुनैर्वापि तस्या लग्नं प्रदापयेत् ॥ ६२ ॥

दशवर्ष के वाद ११-१२ वर्ष में किसी प्रकार कन्या की शुद्धि नहीं रहती, इसलिए केवल पूजा शान्ति या शकुनादि से लग्नशुद्धि कराकर उसे शीघ्र विवाहिता बना देना चाहिये। ( वस्तुतः १० वर्ष के वाद किसी विचार की आवश्यकता न माने ) ॥ ६२ ॥

रजस्वलादोषः—

माता चैव पिता चैव ज्येष्ठभ्राता तथैव च।
त्रयस्ते नरकं यान्ति दृष्ट्वा कन्यां रजस्वलाम् ॥ ६३ ॥

अविवाहित रजस्वला कन्या को देख कर माता, पिता और ज्येष्ठ भाई ये तीनों नरकगामी होते हैं ॥ ६३ ॥

नाडीविचारः—

आदिमध्यान्तकान्येवमन्तमध्यादिभानि च।
अश्विन्यादिक्रमेणैव रेवत्यन्तं सुधीर्लिखेत् ॥ ६४ ॥
ऊर्ध्वगा वेदरेखाः स्युस्तिर्यग्रेखा दश स्मृताः।
सर्पाकारं लिखेद्भानां नाडीचक्रं वदेद्बुधः ॥ ६५ ॥
नाडीदोषस्तु विप्राणां व र्दोषो महीभुजाम्।
गणदोषश्च वैश्यानां शूद्राणां योनिदोषकः ॥ ६६ ॥

आदि, मध्य, अन्त; फिर अन्त, मध्य, आदि; इस प्रकार अश्विन्यादि २७ नक्षत्रों का सर्पाकार नाडी-चक्र में न्यास करे। नाडीचक्र लिखने का प्रकार यह है कि चार रेखायें खड़ी और दश रेखायें तिरछी रखने से २७ कोष्टक का सामान्य चक्र वन जायगा, इसी चक्र के भीतर सर्प की आकृति बना दे तो यथार्थ हो। यह नाडीदोष विशेषकर ब्राह्मणों के लिए, वर्णदोष क्षत्रियों के लिए, गणदोष वैश्यों के लिये तथा योनिदोष शूद्रों के लिए अधिक अनिष्टकर है ॥ ६४ ॥-६६ ॥

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi



नाडीचक्रम्—

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| आदि | अ. | आ. | पुन. | उ. फा. | ह. | ज्ये. | मू. | श. | पू. भा. |
| मध्य | भ. | मृ. | पुष्य | पू. फा. | चि. | अनु. | पू. षा. | ध. | उ. भा. |
| अन्त | कृ. | रो. | आ. | म. | स्वा. | वि. | उ. षा. | श्र. | रे. |

नाडीफलम्—

**एकनाडीस्थनक्षत्रे दम्पत्योर्मरणं ध्रुवम् ।**
**सेवायाञ्च भवेद्धानिर्विवाहे चाशुभं भवेत् ॥ ६७ ॥**

यदि कन्या-वर दोनों के जन्मनक्षत्र एक ही नाड़ी में पड़े तो अवश्य मृत्यु हो जाय । एवं यदि सेव्य-सेवक-भाव में एक नाडी पड़े तो हानि हो, विवाह में तो अशुभ होता ही है ॥ ६७ ॥

विशेषः—

**आद्या नाडी वरं हन्ति मध्या नाडी च कन्यकाम् ।**
**अन्त्या नाडी द्वयं हन्ति नाडीदोषं त्यजेद् बुधः ॥६८॥**

आदि नाड़ी में दोनों नक्षत्र पड़े तो वर की मृत्यु हो, मध्य-नाड़ी में पड़े तो कन्या की मृत्यु हो, एवं अन्त्य नाड़ी में पड़ने से वर-कन्या दोनों की मृत्यु हो जाती है, अतः नाड़ीदोष का त्याग अवश्य करे ॥ ६८ ॥

नाडीपरिहारः—

**एकनक्षत्रजातानां नाडीदोषो न विद्यते ।**
**अन्यर्क्षपतिवेधेषु विवाहो वर्जितः सदा ॥ ६६ ॥**

यदि वर-कन्या दोनों का जन्मनक्षत्र कोई एक ही है तो नाड़ी दोष नहीं लगता। परन्तु यदि अन्य नक्षत्र हों जिनके स्वामी में परस्पर मैत्री आदि न हो, नाड़ीवेध हो तो विवाह न करना चाहिए ॥ ६९ ॥

विवाहे दशदोषविशेषाः—

**लत्ता पातो युतिर्वेधो जामित्रं बाणपञ्चकम् ।**

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi



एकार्गलोपग्रहौ च क्रान्तिसाम्यं निगद्यते ॥ ७० ॥
दग्धा तिथिश्च विज्ञेया दश दोषा महाबलाः ।
एतान्दोषान् परित्यज्य लग्नं संशोधयेद्बुधः ॥ ७१ ॥

लत्ता १, पात २, युति ३, वेध ४, जामित्र ५, बाणपञ्चक ६, एकार्गल ७, उपग्रह ८, क्रान्तिसाम्य ९, तथा दग्ध तिथि १०; ये दश दोष विवाह में महाप्रबल कहे गये हैं। इन दोषों का त्याग कर विवाह का लग्न नियत करना चाहिए ॥ ७०–७१ ॥

लत्तादोषविचारः—

नक्षत्रं द्वादशं भानुस्तृतीयं लत्तया कुजः ।
षष्ठं जीवोऽष्टमं मन्दो हन्ति दक्षिणतः सदा ॥ ७२ ॥
वामेन सप्तमं चान्द्रिर्नवमं सिंहिकासुतः ।
हन्ति भं पञ्चमं शुक्रो द्वाविंशं पूर्णचन्द्रमाः ॥ ७३ ॥

सूर्य अपने नक्षत्रके आगे बारहवें नक्षत्र को; मङ्गल तीसरे को, बृहस्पति छठे को, शनिश्चर आठवें को लत्तादोष से दूषित करते हैं। बुध अपने नक्षत्र से पीछे सप्तम नक्षत्र को, राहु नौवें को, शुक्र पांचवें को और पूर्ण चन्द्रमा बाइसवें को लत्ता से दूषित करते हैं ॥ ७२–७३ ॥

लत्ताफलम्—

रवेर्लत्ता हरेद्वित्तं कुजस्य कुरुते मृतिम् ।
बृहस्पतेर्बन्धुनाशं शनेः कुर्यात्कुलक्षयम् ॥ ७४ ॥
बुधस्य कुरुते त्रासं लत्ता राहोर्विनाशयेत् ।
शुक्रस्य दुःखदा नित्यं त्रासदा तु कलानिधेः ॥ ७५ ॥

रवि का लत्ता-दोष पड़े तो धन का नाश हो, मंगल का पड़े तो मृत्यु हो, बृहस्पति का पड़े तो बन्धुवर्ग या भाई की मृत्यु हो, शनि का पड़े तो कुलक्षय हो जाय, बुध का पड़े तो त्रास (भय) हो, राहु का पड़े तो विनाश करे, शुक्र का पड़े तो दुःख दे एवं

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi


चन्द्रमा का लत्तादोष पड़े तो त्रास हो ॥ ७४–७५ ॥

पातविचारः—

**सूर्ययुक्ताच्च नक्षत्राद्दोषः पातो विधीयते ।**
**मघाऽऽश्लेषा च चित्रा च सानुराधा च रेवती ॥ ७६ ॥**
**श्रवणोऽपि च षट्कोऽयं पातदोषो निगद्यते ।**
**अश्विनीतः समारभ्य गणयेल्लग्नभावधि ॥ ७७ ॥**

सूर्यनक्षत्र से आरम्भ कर मघा, आश्लेषा, चित्रा, अनुराधा, रेवती एवं श्रवण इन छः नक्षत्रों की जो २ संख्या हो, उनमें जो संख्या अश्विनी से विवाहनक्षत्र की संख्या के बराबर हो उस नक्षत्र से उत्पन्न पात समझना चाहिए। उदाहरण—जैसे आर्द्रा में सूर्य हैं तो आर्द्रा से मघा की संख्या ५ हुई, अब यदि विवाह-नक्षत्र मृगशिर माना जाय तो अश्विनी से गिनने पर मृगशिर की संख्या ५ ही के बराबर हुई, अतः ऐसी हालत में मघाकृत पात आगया, ऐसा ही अन्य पांचों में भी देखना चाहिए * ॥ ७६–७७ ॥

पातनामानि—

**पावकः पवमानश्च विकारः कलहोऽपरः ।**
**मृत्युः क्षयश्च विज्ञेयं पातषट्कस्य नाम हि ॥ ७८ ॥**

मघा आदि छः नक्षत्रों से समुत्पन्न पात का पृथक् २ नाम—१ पावक, २ पवमान, ३ विकार, ४ कलह, ५ मृत्यु और ६ क्षय। इस प्रकार अपने २ नाम के अनुसार फल देने वाला होता है ॥७८॥

पातफलम्—

**पातेन पतितो ब्रह्मा पातेन पतितो हरिः ।**

---

* अयमेवाशयो नारदस्यापि सम्मतो यथा—

"सूर्यभात्सार्पपित्रान्त्यत्वाष्ट्रमित्रोडुविष्णुभे ।
संख्यया दिनभे तावदश्विभात्पातदुष्टभम् ॥"

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi



**पातेन पतितः शम्भुस्तस्मात्पातं विवर्जयेत् ॥ ७९ ॥**

यही पात ब्रह्मा, विष्णु और महेश को पतित कराया, अतः इस पात का त्याग विवाहादि शुभ कार्यों में अवश्य करें, अन्यथा बड़ा अनिष्ट होता है ॥ ७९ ॥

देशवशेन पातपरिहारः—

**चित्रां गतोऽसौ तु विचित्रदेशे**
**मैत्रं मघां मालवके निषिद्धः।**
**पौष्णश्रुती चोत्तरजातदेशे**
**सर्वत्र वर्ज्यश्च भुजङ्गपातः ॥ ८० ॥**

यदि वह पात चित्रा-नक्षत्रसम्बन्धी हो तो सिर्फ विचित्र (?) देश में वर्जित है ( अन्य देशों में नहीं )। ऐसे ही अनुराधा-मघा-सम्बन्धी पात मालव देश में, रेवती-श्रवण-सम्बन्धी पात उत्तर के देशों ( तिब्वत, नेपाल चीन आदि ) में वर्जित है, परन्तु आश्लेषाकृत पात सभी देशों में त्याज्य है ॥ ८० ॥

युतिदोष-विचारः—

**यत्र राशौ भवेच्चन्द्रः पापस्तत्र यदा भवेत्।**
**युतिदोषस्तदा ज्ञेयो विना शुक्रं शुभे शुभम् ॥ ८१ ॥**

जिस राशि में चन्द्रमा स्थित रहे उसी में यदि कोई पापग्रह भी व्यवस्थित देखा जाय तो युति-दोष होता है, किन्तु शुक्र को छोड़ कर और शुभग्रह हो तो युतिदोष नहीं लगता, प्रत्युत शुभकारक होता है ॥ ८१ ॥

युतिफलम्—

**रविणा संयुतो हानिं भौमेन निधनं शशी।**
**करोति मूलनाशं च राहुकेतुशनैश्चरैः ॥ ८२ ॥**

यदि चन्द्रमा सूर्य के साथ हो तो हानि हो, मङ्गल के साथ

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi



हो तो मरण करावे, एवं राहु, केतु और शनैश्चर के साथ होने से सभी अनुकूल विषयों की जड़ का नाश करता है ॥८२॥

युतिपरिहारः—

**वर्गोत्तमगतश्चन्द्रः स्वोच्चे वा मित्रराशिगः ।**
**युतिदोषश्च न भवेद्दम्पत्योः श्रेयसे सदा ॥ ८३ ॥**

यदि वैसा ही चन्द्रमा अपने वर्गोत्तम में हो, या अपने उच्च ( वृष ) में या मित्रों के घर में दिखाई दे तो युतिदोष नहीं लगता, प्रत्युत वर-कन्या दोनों के लिए कल्याणकारक होता है ॥ ८३ ॥

विवाहे पञ्चशलाकाचक्र-विचारः—

**पञ्चोर्ध्वाः स्थापयेद्रेखाः पञ्च तिर्यङ्मुखास्तथा ।**
**द्वयोश्च कोणयोर्द्वे द्वे चक्रं पञ्चशलाककम् ॥ ८४ ॥**
**ईशाने कृत्तिका देया क्रमादन्यानि भानि च ।**
**ते ग्रहास्तु प्रदातव्या ये च यत्र प्रतिष्ठिताः ॥ ८५ ॥**
**[ लग्नस्य निकटे या च गता भवति पूर्णिमा (?)**
**तन्नक्षत्रस्थितश्चन्द्रो दातव्यो गणकोत्तमैः ॥८६॥ ]**

पांच खड़ी और पांच तिरछी एवं सम्मुख कोणों में दो २ करणाकृति रेखाओं को रखने से पञ्चशलाकाचक्र बन जाता है। उसके ईशान कोण में कृत्तिका का न्यास कर आगे ( दक्षिणावर्त्त ) रोहिणी-मृगशिर आदि अभिजित्सहित सभी ( २८ ) नक्षत्रों की स्थापना करे। बाद में विवाहकालिक जो २ ग्रह जिस २ राशि-नक्षत्र पर हों, सबको तदनुसार इस चक्र के नक्षत्रों पर अङ्कित करे, तब देखे कि विवाहलग्न का नक्षत्र किसी ग्रह से विद्ध है कि नहीं, यदि विद्ध हो ( याने विवाहनक्षत्र और ग्रह का नक्षत्र एक रेखा-स्थित हो ) तो उसका त्याग करे ॥ ८४-८६ ॥

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi



पञ्चशलाकाचक्र—

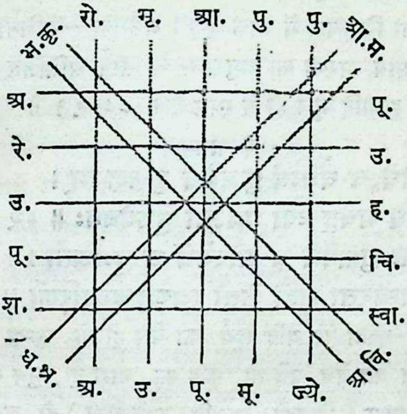


वेधकथनम्—

एकरेखायुतिर्वेधो दिननाथादिभिर्ग्रहैः ।
विवाहे तत्र मासं तु न जीवति कदाचन ॥ ८७ ॥

विवाह-नक्षत्र जिस रेखा पर हो उसी के आश्रित दूसरी तरफ यदि सूर्य, मंगल, बुध आदि ग्रह दिखलाई दें तो वेध जानना। ऐसे विद्ध नक्षत्रों में विवाह होने पर एक महीना भी वर जीवित नहीं रहता, यह निश्चय है ॥ ८७ ॥

विद्धनक्षत्राणि—

अश्विनी पूर्वफल्गुन्या भरणी चानुराधया ।
अभिजिच्चापि रोहिण्या कृत्तिका च विशाखया ॥ ८८ ॥
मृगश्चोत्तरषाढेन पूर्वाषाढा तथार्द्रया ।
पुनर्वसुश्च मूलेन ज्येष्ठया पुष्यभं तथा ॥ ८९ ॥
धनिष्ठया तथाश्लेषा मघापि श्रवणेन च ।
रेवत्युत्तरफल्गुन्या हस्तेनोत्तरभाद्रपात् ॥ ९० ॥
स्वात्या शतभिषा विद्धा चित्रया पूर्वभाद्रपात् ।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi



विद्धान्येतानि वर्ज्यानि विवाहे भानि कोविदैः ॥९१॥

उपर्युक्त नियमानुसार अधोलिखित नक्षत्रों का परस्पर वेध होता है ( जो कि चक्र में साफ है )। जैसे कि—अश्विनी को पूर्वफल्गुनी के साथ, भरणी को अनुराधा के साथ अभिजित् को रोहिणी के साथ इत्यादि मूल ही से स्पष्ट है ॥ ८८–९१ ॥

वेधफलम्—

रविवेधे च वैधव्यं कुजवेधे कुलक्षयम् ।
बुधवेधे भवेद्वन्ध्या प्रव्रज्या गुरुवेधतः ॥ ९२ ॥
अपुत्रा शुक्रवेधे च सौरवेधे च दुःखिता ।
पुरुषान्यरता राहौ केतौ स्वच्छन्दचारिणी ॥ ९३ ॥

विवाह-नक्षत्र पर यदि सूर्य का वेध हो तो कन्या विधवा हो जाय, मंगल का वेध पड़े तो कुल का नाश हो, बुध का वेध हो तो कन्या वांझ ( जिसको सन्तति नहीं होती ) हो, बृहस्पति का वेध पड़े तो प्रव्रज्या ( घर छोड़ कर संन्यास ग्रहण करने वाला ) हो जाय, शुक्र का वेध रहे तो पुत्र-हीना, शनैश्वर के वेध होने पर दुःखिता, राहु के वेध में पराये पुरुष से संसर्ग रखने वाली एवं केतु का वेध हो तो अपने मन से जहां-तहां भ्रमण करने वाली होती है ॥ ९२–९३ ॥

युतिदोषविचारः—

शनिराहुकुजादित्या यदा जन्मर्क्षसंस्थिताः ।
विवाहिताऽत्र या कन्या सा ध्रुवं विधवा भवेत् ॥९४॥

यदि विवाह के समय कन्या के जन्म-राशि पर शनि, राहु, मंगल और सूर्य वर्तमान हों तो वह कन्या विधवा हो जाती है, ( अतः इसको भी भलीभांति देख लेना आवश्यक है ) ॥ ९४ ॥

जामित्रदोषकथनम्—

चतुर्दशं च नक्षत्रं जामित्रं लग्नाभात्स्मृतम् ।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi


शुभयुक्तं तदिच्छन्ति पापयुक्तं च वर्जयेत् ॥ ९५ ॥
तत्र चान्द्रिर्भृगुर्जीवो जामित्रे शुभकारकाः ।
स्वर्भानुभानुमन्दारा जामित्रे न शुभप्रदाः ॥ ९६ ॥

विवाहनक्षत्र से चौदहवां नक्षत्र जामित्र कहा गया है, उसमें यदि शुभ ग्रह हो तो क्षति नहीं, किन्तु पापग्रह हो तो अवश्य त्याग करे। उस जामित्र में यदि बुध, बृहस्पति और शुक्र रहें तो वे शुभकारक होते हैं। राहु, सूर्य, शनि और मंगल हो तो अशुभ जाने ॥९५-९६॥

चन्द्राद्वा लग्नतो वापि ग्रहा वर्ज्याश्च सप्तमे ।
तत्र स्थिता ग्रहा नूनं व्याधिवैधव्यकारकाः ॥ ९७ ॥

चन्द्रमा से अथवा लग्न से सातवीं जगह पर यदि शुभ या पाप कोई ग्रह हो तो उसका त्याग करना चाहिए, क्योंकि सप्तमस्थ ग्रह निश्चयेन सदैव व्याधि और वैधव्य करने वाले होते हैं ॥ ९७ ॥

बाणविचारः—

रसाग्निभूनागसुखाः क्रमेण संक्रान्तितो यातदिनैश्च योज्याः ।
ग्रहैर्विभक्ता यदि पञ्च शेषा रोगस्तथाग्निर्नृपचौरमृत्यु॥९८॥

विवाहलग्न के जितने दिन पहले संक्रान्ति हुई हो उतनी संख्या ( यात दिन ) को क्रम से ६।३।१।८।४। इन अंकों में मिला दे, बाद में पांचों जगह नौ से भाग दे, तब जहां शेष ५ आवे वहां बाण जानना, पहली जगह रोगबाण, दूसरी जगह अग्निबाण, तीसरी जगह राजबाण, चौथी जगह चौरबाण एवं पांचवीं जगह मृत्युबाण होता है ॥ ९८ ॥

यद्यर्कवारे किल रोगबाणः सोमे नृपाख्यः क्षितिजे च वह्निः ।
सौरे च मृत्युर्धिषणे च चौरो विवाहकाले परिवर्जनीयः॥९९॥

यदि रविवार को रोगबाण, सोमवार को राजबाण, मंगलवार को अग्निबाण, शनिवार को मृत्युबाण और गुरुवार को चौरबाण

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi



आवे तो किसी भी हालत में विवाह नहीं करना चाहिए। यहां अर्थान्तर से सिद्ध होता है कि रविवार में रोग छोड़ कर और बाण रहे भी तो विवाह हो सकता है, ऐसे ही और दिनों में भी अनुगम करना चाहिए ॥ ९९ ॥

दिनरात्रिवशेन परिहारः—

**रोगं चौरं त्यजेद्रात्रौ दिवा राजाग्निपञ्चकम् ।**
**उभयोः सन्ध्ययोर्मृत्युमन्यकालमनिन्दितः ॥ १०० ॥**

रात्रि में रोगवाण और चौरवाण निन्दित हैं, दिन में राजवाण, अग्निवाण एवं दोनों सन्ध्या में मृत्युवाण अवश्य त्याज्य है, किन्तु अन्य काल में निन्दित नहीं है ॥ १०० ॥

(१) विद्युदादिदोषः—

**सूर्यभात्पञ्चमे विद्युन्नक्षत्रे शूलमष्टमे ।**
**चतुर्दशेऽशनेः पातः केतुरष्टादशे तथा ॥ १०१ ॥**
**ऊनविंशे भवेदुल्का निर्घातश्च द्विविंशके ।**
**त्रयोविंशतिके कम्पः पञ्चविंशे तु वज्रकः ॥ १०२ ॥**

सूर्यनक्षत्र से पञ्चम नक्षत्र विद्युत्, आठवां शूल, चौदहवां अशनिपात, अठारहवां केतु, उन्नीशवां उल्का, बाइशवां निर्घात, तेइशवां कम्प, एवं पचीशवां वज्र दोष से व्याप्त रहता है ( अतः इन नक्षत्रों में विवाह नहीं करना चाहिए ) ॥ १०१-१०२ ॥

तत्फलम् —

**पुत्रनाशकरी विद्युत् पत्युः शूलो विनाशकः ।**
**पातोऽशनेर्वंशघाती केतुर्देवरनाशकः ॥ १०३ ॥**
**द्रव्यनाशकरी चोल्का निर्घातो बन्धुनाशनः ।**
**कम्पः कम्पयते नित्यं वज्र स्त्री व्यभिचारिणी ॥ १०४ ॥**

---

( १ ) दोषोऽयमुपग्रहनाम्नापि कथ्यते । उक्तातिरिक्तेषु ७,१०,२४ तमेष्वपि नक्षत्रेषु तदवस्थानमुचितम् । अत्र रामाचार्य्योऽपि—
"शराष्टदिकशक्रनगातिधृत्यस्तिथिर्धृतिश्च प्रकृतेश्च पञ्च ।
उपग्रहाः सूर्यभतोऽब्जताराः शुभा न देशे कुरुबाह्लिकानाम् ॥" इति ।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi



यदि विवाहकाल में विद्युत् दोष पड़े तो भावी पुत्र का नाश हो, शूल पड़े तो स्वामी का नाश हो एवं अशनि पात से वंश का नाश, केतु में देवर ( स्वामी का अनुज ) का नाश, उल्का में धन का नाश, निर्घात में बन्धुवर्ग का नाश, कम्प में सदैव भयभीत रहे और वज्र दोष पड़े तो कन्या व्यभिचारिणी बन जाती है ॥

एकार्गलयोगः—

**योगाङ्के विषमे चैको देयोऽष्टाविंशतिः समे ।**
**अर्द्धं कृत्वाऽश्विनीपूर्वमङ्कर्क्षं मूर्ध्नि दीयते ॥ १०५ ॥**

विवाह के दिन विष्कम्भादि योग की संख्या विषम हो तो एक जोड़े, सम हो तो २८ जोड़े, तब आधा करने पर जो अंक आवे तत्संख्यक अश्विन्यादिगणना से समागत नक्षत्र शिर पर धरे, उसके आगे दक्षिणावर्त्त शेष नक्षत्रों का न्यास करे । उदाहरण यथा--उस दिन का योग शोभन है, तो शोभन की संख्या ५ विषम हुई, अब श्लोक के कथनानुसार एक जोड़ा तो ६ हुआ इसका आधा ३ अतः अश्विनी से तीसरा कृत्तिका को सिर पर धरे "शोभने कृत्तिका देया" । ऐसे ही सब जानना चाहिये, जो कि स्वयं आचार्य अगले श्लोकों में कहते हैं ॥ १०५ ॥

उदाहरणरूपेण—

**विष्कम्भे चाश्विनी देया प्रीतौ स्वातिर्निगद्यते ।**
**सौभाग्ये च विशाखा स्यादायुष्मान् भरणीयुतः ॥१०६॥**
**शोभने कृत्तिका देया अनुराधा च गण्डके ।**
**रोहिणी च सुकर्माख्ये धृतौ ज्येष्ठा प्रकीर्त्तिता ॥१०७॥**
**गण्डे मूलं मृगः शूले वृद्धौ चार्द्रा निगद्यते ।**
**पूर्वाषाढा ध्रुवे प्राक्ता व्याघाते च पुनर्वसुः ॥ १०८ ॥**
**हर्षणे चोत्तराषाढा वज्रे पुष्यः प्रकीर्तितः ।**
**अभिजिच्च तथा सिद्धावाश्लेषा व्यतिपातके ॥ १०९ ॥**
**वरीयसि श्रुतिर्देया परिघे च मघा तथा ।**

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi



शिवे धनिष्ठा दातव्या सिद्धौ पूर्वा च फल्गुनी ॥११०॥
साध्ये शतभिषा देया शुभे चोत्तरफल्गुनी ।
पूर्वाभाद्रपदा शुक्ले हस्तो ब्राह्मे प्रकीर्तितः ॥ १११ ॥
उत्तराभाद्रपच्चैन्द्रे चित्रा देया च वैधृतौ ।
सूर्याचन्द्रमसोर्योगे भवेदेकार्गलं तदा ॥ ११२ ॥
त्रयोदश तिरोरेखा मूर्ध्न्येकोर्ध्वाधरा स्मृता ।
योगाङ्कप्राप्तनक्षत्रे ज्ञेयमेकार्गलं बुधैः ॥ ११३ ॥

इन श्लोकों का अर्थ मूल से तथा पूर्वश्लोक की टीका में दिये हुए उदाहरण से सर्वथा स्पष्ट है । तदनुसार मानो कि परिघ योग है तो शिर पर मघा नक्षत्र पड़ेगा, और तत्कालिकचक्र का न्यास इस प्रकार होगा ॥ १०६–१३ ॥

एकार्गलचक्र—

म.

| | |
|---|---|
| पू. | आ. |
| उ. | पु. |
| ह. | पु. |
| चि. | आ. |
| स्वा. | मृ. |
| वि. | रो. |
| अ. | कृ. |
| ज्ये. | भ. |
| मू. | अ. |
| पू. | रे. |
| उ. | उ. |
| अ. | पू. |
| श्र. | श. |

ध.

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi



क्रान्तिसाम्यदोषः—

ऊर्ध्वास्तिस्रस्तिरस्तिस्रो मध्ये मीनं लिखेद्बुधः ।
सूर्याचन्द्रमसौ दृष्टावेकरेखागतौ यदि ।
वरमृत्युप्रदं तद्धि क्रान्तिसाम्यं निगद्यते ॥ ११४ ॥
मीनः कन्यकया युक्तो मेषः सिंहेन सङ्गतः ।
मकरेण वृषः कान्तश्चापोऽपि मिथुनेन च ॥११५॥
कर्केण वृश्चिको विद्धो वेधश्च तुलकुम्भयोः ।
क्रान्तिसाम्ये कृतोद्वाहो न जीवति कदाचन ॥ ११६ ॥

तीन रेखा खड़ी और तीन रेखा तिरछी रख कर खड़ी मध्य रेखा के शिर पर मीन को लिखे, फिर आगे वामावर्त मेष, वृष, मिथुन आदि सब राशियों का न्यास करने से क्रान्तिसाम्य-चक्र बन जायगा। इस तरह चक्र से साफ प्रतीत होगा कि वृष-मकर, मिथुन-धनु, कर्क-वृश्चिक, सिंह-मेष, कन्या-मीन, और तुला-कुम्भ एकरेखागत हो जायंगे, अतः यदि सूर्य-चन्द्रमा एक रेखा पर दिखाई दें तो क्रान्तिसाम्य जानना जो कि विवाह में वर के लिये महा अनिष्टकारक है ॥ ११४-११६ ॥

क्रान्तिसाम्यचक्र—

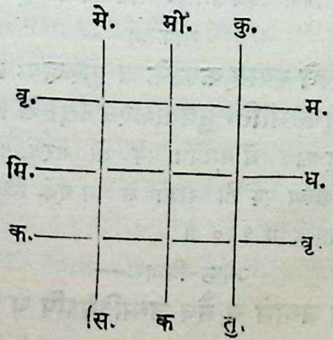


Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi


कान्तिसाम्यफलम्—

कान्तिसाम्ये च कन्याया यदि पाणिग्रहो भवेत् ।
ध्रुवं वैधव्यमायाति शक्रस्य दुहितापि चेत् ॥ ११७ ॥

यदि कान्तिसाम्य में किसी कन्या का विवाह हो तो निश्चय कर वह विधवा हो जाती है। चाहे वह साक्षात् इन्द्र ही की कन्या क्यों न हो। (इसलिए कान्तिसाम्य का परित्याग अवश्य करना चाहिए) ॥ ११७ ॥

कण्टकादिदोषाः—

मर्मवेधः कण्टकश्च शल्यं छिद्रं चतुर्थकम् ।
एतद्वेधचतुष्कं तु परित्याज्यं प्रयत्नतः ॥ ११८ ॥

मर्मवेध, कण्टक, शल्य और छिद्र ये चार वेध होते हैं। विवाह में इनका परित्याग पूरे यत्नों के साथ करना आवश्यक है ॥११८॥

तेषां लक्षणानि—

लग्ने पापे मर्मवेधः कण्टको नवपञ्चके ।
चतुर्थे दशमे शल्यं छिद्रं भवति सप्तमे ॥ ११९ ॥

यदि लग्न में कोई पापग्रह पड़े तो मर्मवेध कहा गया है, इसी तरह नौवें—पांचवें में पड़ने से कण्टक, चौथे-दशवें में पड़ने से शल्य, तथा सातवें में पड़ने से छिद्र नाम का वेध होता है ॥ ११९ ॥

तत्फलम्—

मरणं मर्मवेधे स्यात् कण्टके च कुलक्षयः ।
शल्ये च नृपतेर्भीतिः पुत्रनाशश्च छिद्रके ॥१२०॥

यदि विवाह-काल में मर्मवेध पड़े तो मरण, कण्टक पड़े तो कुल का नाश, शल्य पड़े तो राजा से भय एवं छिद्र वेध पड़े तो पुत्र का नाश होता है ॥ १२० ॥

ज्येष्ठ-विचारः—

जन्ममासे जन्मभे च नैव जन्मदिनेऽपि च ।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi



ज्येष्ठे न ज्येष्ठगर्भस्य विवाहं कारयेत्कचित् ॥ १२१ ॥

वर–कन्या के जन्ममास, जन्मनक्षत्र एवं जन्मदिन इन में विवाह न करावे और यदि ज्येष्ठ सन्तान हो तो ज्येष्ठ महीना में भी विवाह नहीं कराना चाहिए ॥ १२१ ॥

न कन्यावरयोर्ज्येष्ठ ज्येष्ठयोः पाणिपीडनम् ।
द्वयोरेकतरे ज्येष्ठे न ज्येष्ठो दोषमावहेत् ॥ १२२ ॥

यदि वर-कन्या दोनों अपने २ माता-पिता के ज्येष्ठ सन्तान हों तो ज्येष्ठ महीना में कभी विवाह करने का विचार न करे ( यह त्रिज्येष्ठ अनर्थकारक है ), यदि वर-कन्या में केवल एक ज्येष्ठ सन्तान हो तो ज्येष्ठ महीना में भी विवाह हो सकता है ॥ १२२ ॥

सिंहस्थितगुरुविचारः—

सिंहे गुरौ गते कार्यो न विवाहः कदाचन ।
मेषस्थिते दिवानाथे सिंहेज्येऽपि शुभप्रदः ॥ १२३ ॥

यदि बृहस्पति सिंह राशि पर रहे तो विवाह दोषप्रद है, किन्तु सिंहस्थ बृहस्पति होते भी यदि सूर्य मेषराशि पर रहे तो कोई दोष नहीं, विवाह शुभकारक हो सकता है ॥ १२३ ॥

ग्रहाणां विश्वाबलम्—

रवौ सार्धत्रयो भागाः पञ्च चन्द्रे गुरौ त्रयः ।
द्वे शुक्रे द्वे तथा सौम्ये विश्वाभागाः प्रकीर्त्तिताः ॥१२४॥
प्रत्येकं सार्धभागाश्च मन्दमङ्गलराहुषु ।
ग्रहा बलयुता विश्वाः प्रयच्छन्ति न दुर्बलाः ॥ १२५ ॥

सूर्य के साढ़े तीन, चन्द्रमा के पांच, बृहस्पति के तीन, शुक्र के दो, बुध के दो, शनिश्चर–मङ्गल एवं राहु इनके डेढ़ भाग विश्वाबल कहा गया है । यदि उपरोक्त ग्रह पूर्ण बली हो तभी पूरा विश्वाबल ( पठित ) देते हैं, हीन बल होने से विश्वाबल भी उसी के अनुसार तारतम्य से लेना चाहिए ॥ १२४–१२५ ॥



Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi


स्पष्टार्थं चक्रम्—

| ग्रहाः | सू. | चं. | मं. | बु. | बृ. | शु. | श. | रा. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| विश्वा-वलम् | ३ १/२ | ५ | १ १/२ | २ | ३ | २ | १ १/२ | १ १/२ |

लग्नशुद्धिकथनम्—

केन्द्रे सप्तमहीने च द्वित्रिकोणे शुभाः शुभाः ।
धने शुभप्रदश्चन्द्रः पापाः षष्ठे च शोभनाः ॥ १२६ ॥
तृतीयैकादशे सर्वे सौम्याः पापाः शुभप्रदाः ।
ते सर्वे सप्तमस्थाने मृत्युदा वरकन्ययोः ॥ १२७ ॥

सप्तम को छोड़ कर केन्द्र ( १।४।१० ), दूसरा और त्रिकोण ( ९।५ ) इन स्थानों में शुभग्रह, दूसरे में चन्द्रमा, तथा छठे में पापग्रह शुभकारक होते हैं। तीसरे, ग्यारहवें में शुभग्रह या पापग्रह सब शुभप्रद होते हैं, ऐसे ही सातवें में शुभ या पाप सभी ग्रह वर-कन्या के लिए मृत्युकारक कहे गए हैं, अतः सप्तम स्थान सर्वथा ग्रहों से रिक्त होना चाहिए ॥ १२६-१२७ ॥

प्राणनाशकयोगः—

शनिः सूर्यश्च लग्नेऽस्ते चन्द्रो लग्नेऽष्टमे रिपौ ।
कुजो लग्नेऽष्टमे चास्ते शुक्रो द्यूनेऽष्टमे रिपौ ॥ १२८ ॥
गुरुर्मृत्यौ सैंहिकेयो लग्ने तुर्ये च सप्तमे ।
बुधोऽष्टमे च जामित्रे विवाहः प्राणनाशकः ॥ १२९ ॥
क्रूरयोरन्तरे लग्नं चन्द्रं च परिवर्जयेत् ।
वरं हन्ति ध्रुवं लग्नं शीतरश्मिश्च कन्यकाम् ॥ १३० ॥

विवाह-कालमें शनि और सूर्य लग्न में या सातवें में, चन्द्रमा १, ८, ६ ठे, स्थानों में; मंगल १, ७, ८ वें में, शुक्र ७, ८, ६ वें में; बृहस्पति ८ वें में राहु १, ४, ७ वें में और बुध ७, ८ वें में वर-

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi


कन्या के लिए प्राणनाशक होते हैं। एवं यदि चन्द्रमा या लग्न दो पापग्रहों के बीच में पड़े तो भी प्राणनाशक योग होता है, अर्थात् दो पापग्रहों के वीच में लग्न पड़े तो वर की मृत्यु हो, तथा चन्द्रमा पड़े तो कन्या की मृत्यु हो ( इन सबों का विचार अवश्य करे ) ॥ १२८–१३० ॥

विवाहे शुभलग्नानि—

तुला च मिथुनं कन्या पूर्वार्द्धं धनुषो वृषः।
शुभान्येतानि लग्नानि मध्यमान्यपराणि वै ॥ १३१ ॥

तुला, मिथुन, कन्या, धनु का पूर्वार्द्ध और वृष ये लग्न विवाह में शुभ होते हैं, इनके अतिरिक्त मध्यम ( वस्तुतः अधम ) कहे गए हैं ॥ १३१ ॥

देशभेदेन लत्तादिदोषपरिहारः—

लत्तां मालवके देशे पातं च कुरुजाङ्गले।
एकार्गलं च काश्मीरे वेधं सर्वत्र वर्जयेत् ॥ १३२ ॥

मालव देश में लत्ता, कुरु और जाङ्गल देश में पात, काश्मीर में एकार्गल दोष वर्जित है, परन्तु वेधदोष का सभी देशों में त्याग करना चाहिए ॥ १३२ ॥

नवांशविचारः—

मेषे नवांशा मेषाद्या वृषे च मकरादिकाः।
मिथुने च तुलाद्याः स्युः कर्कटे कर्कटादिकाः ॥ १३३ ॥
मेषाद्यो च धनुःसिंहौ मृगाद्यौ स्त्रीमृगौ तथा।
तुलाद्यौ तुलकुम्भौ च कर्काद्यौ मीनवृश्चिकौ ॥ १३४ ॥
गोतुलायुग्मकन्यानां नवांशाः शुभदाः स्मृताः।
धनुषश्चादिमो भागो विवाहेऽन्ये च मध्यमाः ॥ १३५ ॥

मेष में मेषादि का, वृष में मकरादि का, मिथुन में तुलादि का, कर्क में कर्कादि का, सिंह में मेषादि का, कन्या में मकरादि का,

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi



तुला में तुलादि का, वृश्चिक में कर्कादि का, धनु में मेषादि का, मकर में मकरादि का, कुंभ में तुलादि का एवं मीन में कर्कादि का नवांश होता है। विवाह में वृष, तुला, मिथुन, कन्या एवं धनु—पूर्वार्द्ध का नवांश शुभ होता है, और राशियों के नवांश मध्यम कहे गये हैं ॥ १३३–१३५ ॥

स्पष्टार्थं नवांशचक्रम्—

| मे. | वृ. | मि. | क. | सिं. | क. | तु. | वृ. | ध. | म. | कुं. | मी. | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मे. | म. | तु. | क. | मे. | म. | तु. | क. | मे. | म. | तु. | क. | १ |
| वृ. | कुं. | वृ. | सिं. | वृ. | कुं. | वृ. | सि. | वृ. | कुं. | वृ. | सिं. | २ |
| मि. | मी | ध. | क. | मि. | मी. | ध | क. | मि. | मी. | ध. | क. | ३ |
| क. | मे. | म. | तु. | क. | मे. | म. | तु. | क. | मे. | म. | तु. | ४ |
| सिं. | वृ. | कुं. | वृ. | सिं. | वृ. | कुं. | वृ. | सि. | वृ. | कुं. | वृ. | ५ |
| क. | मि. | मी | ध. | क | मि. | मी. | ध. | क. | मि. | मी. | ध. | ६ |
| तु. | क. | मे. | म. | तु. | क. | मे. | म. | तु. | क. | मे. | म. | ७ |
| वृ. | सिं. | वृ. | कु | वृ. | सिं. | वृ. | कुं. | वृ. | सिं. | वृ. | कु. | ८ |
| ध. | क. | मि. | मी. | ध. | क. | मि. | मी. | ध. | क. | मि. | मी. | ९ |

लग्ननवांशविचारः—

**अंशस्य पतिरंशे च तन्मित्रस्य शुभस्य वा।**
**दृष्टिस्तत्र शुभो ज्ञेयः सर्वे दोषाश्च निष्फलाः ॥ १३६ ॥**

नवांशेश यदि अपने नवांश में हो और नवांशेश के मित्र की या किसी शुभ ग्रह की दृष्टि नवांश पर पड़ती हो तो वह नवांश

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi



शुभ फल देने वाला होता है, और सब दोष नष्ट हो जाते हैं ॥१३६॥

होलाष्टकदोषः—

शुक्लाष्टमीं समारभ्य फाल्गुनस्य दिनाष्टकम् ।
पूर्णिमामवधिं कृत्वा त्याज्यं होलाष्टकं बुधैः ॥ १३७ ॥
शुतुद्र्यां च विपाशायामैरावत्यां त्रिपुष्करे ।
होलाष्टकं विवाहादौ त्याज्यमन्यत्र शोभनम् ॥ १३८ ॥

फाल्गुन-शुक्ल पक्ष की अष्टमी से पूर्णिमा तक ( आठ दिन ) होलाष्टक कहा गया है, जो शुभ कार्मों में ( विशेषतः विवाह में ) वर्जित है। वह होलाष्टक केवल शुतुद्री ( सतलज नदी के किनारे वाले देश ) में, विपाशा ( व्यास नदी के तटस्थ देश ) में, इरावती ( रावी नदी के तटस्थ देश ) में तथा त्रिपुष्कर देश में वर्जित है, अन्य देशों के लिए दोषावह नहीं है ॥ १३७-१३८ ॥

अन्धादिराशयः—

दिने सदाऽन्धा वृषमेषसिंहा
रात्रौ च कन्या मिथुनं कुलीरः ।
मृगस्तुलालिर्बधिरोऽपराह्णे
सन्ध्यासु कुब्जा घटधन्विमीनाः ॥ १३९ ॥

मेष, वृष और सिंह ये तीन राशियां दिन में; कन्या, मिथुन और कर्क ये तीन राशियां रात्रि में अन्धी कही गई हैं। तुला, वृश्चिक और मकर ये अपराह्ण काल में बधिर हैं तथा धनु, कुम्भ एवं मीन सन्ध्याकाल में कुब्ज ( कुबड़े ) होते हैं ॥ १३९ ॥

दिवान्धो वरहन्ता च रात्र्यन्धो धननाशकः ।
दुःखदो बधिरो राशिः कुब्जो वंशविनाशकः ॥ १४० ॥

दिवान्ध लग्न में विवाह होने से वर का मरण होता है, निशान्ध लग्न में धन का नाश, बधिर लग्न में वर-कन्या दोनों को दुःख तथा कुब्ज लग्न में वंश का विनाश होता है ॥ १४० ॥

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi



गोधूली-विचारः—

यत्र चैकादशश्चन्द्रो द्वितीयोऽथ तृतीयकः ।
गोधूलिकः स विज्ञेयः शेषा धूलिमुखाः स्मृताः ॥१४१॥

जहां चन्द्रमा ग्यारहवें, दूसरे या तीसरे स्थान में पड़े वह गोधूलि लग्न माना जाता है, शेष स्थानों में चन्द्रमा के रहने से धूलिमुख कहे गए हैं ॥ १४१ ॥

गोधूलिके विशेषः—

कुलिकः क्रान्तिसाम्यं चेल्लग्ने षष्ठाष्टमे शशी ।
तदा गोधूलिकस्त्याज्यः पञ्चदोषैश्च दूषितः ॥ १४२ ॥

यदि गोधूलि-लग्न के समय कुलिक योग पड़े, क्रान्तिसाम्य हो, चन्द्रमा लग्न में, या छठे में, या आठवें में पड़े तो इन पांच दोषों से दूषित गोधूलि लग्न का परित्याग कर देना चाहिए ॥१४२॥

गोधूलीसमयः—

यदा नास्तङ्गतो भानुर्गोधूल्या पूरितं नभः ।
सर्वमङ्गलकार्येषु गोधूलिश्च प्रशस्यते ॥ १४३ ॥

सूर्य अस्तप्राय हो, घर की तरफ आती हुई गौओं को पद-धूलियों से आकाश व्याप्त हो तो सब शुभ कामों को सफल बनाने वाला गोधूली समय कहा गया है ॥ १४३ ॥

अष्टमे जीवभौमौ च बुधो वा भार्गवोऽष्टमे ।
लग्ने षष्ठाष्टमे चन्द्रस्तदा गोधूलिनाशकः ॥ १४४ ॥

यदि अष्टम स्थान में बृहस्पति, मंगल, बुध अथवा शुक्र दिखाई दें और लग्न में, या छठे में, या आठवें में चन्द्रमा पड़े तो गोधूली लग्न का नाशकारक होता है, अतः ऐसे गोधूलि लग्न का त्याग कर देना चाहिए ॥ १४४ ॥

लग्नपुष्टिकरयोगः—

लग्नादेकादशे सर्वे लग्नपुष्टिकरा ग्रहाः ।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi


तृतीये चाष्टमे सूर्यः सूर्यपुत्रश्च शोभनः॥ १४५ ॥
चन्द्रो धने तृतीये च कुजः षष्ठे तृतीयके।
बुधेज्यौ नवषड्द्वित्रिचतुःपञ्चदशस्थितौ॥ १४६॥
शुक्रो द्वित्रिचतुःपञ्चधर्म्मकर्म्मतनुस्थितः।
राहुर्दशाष्टषट्पञ्चत्रिनवद्वादशे शुभः॥ १४७॥

लग्न से एकादश स्थान में रहने से सभी (शुभ और पाप) ग्रह लग्न-पुष्टिकारक होते हैं। सूर्य और शनिश्चर तीसरे, आठवें में रहने से; चन्द्रमा दूसरे, तीसरे में, मङ्गल तीसरे, छठे में; बुध और बृहस्पति दूसरे, तीसरे, चौथे, पाचवे, छठें, नौवे, तथा दशवें में; शुक्र पहले, दूसरे, तीसरे, चौथे, पांचवें, नौवें, एवं दशवें में, और राहु तीसरे, पांचवें, छठे, आठवें, नौवें, दशवें और वाहरवें में रहने से शुभ होते हैं॥ १४५-१४७॥

स्पष्टार्थं चक्रम्—

| ग्रहाः | शुभप्रदस्थानानि— |
|---|---|
| सू.श. | ३।८।११ |
| चं. | २।३।११ |
| बु.बृ. | २।३।४।५।६।९।१०।११ |
| शु. | १।२।३ ४।५।९।१०।११ |
| रा. | ३।५।६।८।९।१०।११।१२ |
| मं. | ३।६।११ |

दिवा इष्टकालज्ञानम्—

छायापादै रसोपेतैरेकविंशशतं भजेत्।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi


* लब्धा घट्यो गतैष्याः स्युः पूर्वापरदले क्रमात् ।१४८।

दिन में (दो पहर के पहले पश्चिम मुख और दो पहर के बाद पूर्व मुख होकर) अपनी छाया को पांव से नापने पर जितना हो उसमें ६ और जोड़ कर जो संख्या हो, उससे १२१ को भाग दे तब जो लब्धघटी आवे वह दो प्रहर के पहले गत (सूर्योदय से नापने के समय तक) समय होगा। और नापने का समय दो पहर के बाद हो तो ऐष्य (तबसे भावी सूर्यास्त तक) समय होगा (यह प्रकार स्थूल है) ॥ १४८ ॥

† नक्षत्रोदयकथनपूर्वकं रात्राविष्टकालज्ञानम्—

पूर्वाषाढानुराधा च ज्येष्ठाश्लेषा च रेवती ।
विशाखा च यदा मूर्ध्नि तदा स्यादष्टमोदयः ॥ १४९ ॥

---

* आदौ १२१ अत्र भक्ते लब्धिर्घट्यः, ततः शेषं षष्टिगुणितं तेनैव भक्तं लब्धं पलानि, तत्रापि शेषं चेत् अर्धाधिके रूपं ग्राह्यमर्धाल्पे त्याज्यमित्यनुसारं त्रिशतोऽल्पेऽन्तिमशेषे तत्त्यागः, किन्तु त्रिशतोऽधिके एकमधिकं पलस्थाने योज्यन्तदर्थमुदाहरणं यथा—

छाया = १०, रसोद्पेता। १० + ६ = १६ = हरः। अनेन १२१ अत्र भागार्थं न्यासः।

१६) १२१ (७ = घट्यः
११२
———
९ (शेषम्)
× ६०
———
१६) ५४० (३३ = पलानि
४८
———
६०
४८
———
१२ (शेषम्)

अत्रान्तिमशेषं १२ त्रिशतोऽल्पमतस्तत्त्यागादिष्टकालः ७।३३ ज्ञातः।

† यथा कथञ्चित्सूक्ष्मोऽयं प्रकार आकाशस्थनक्षत्राणां यथार्थपरिचयज्ञानवतैव साध्यः, सर्वसाधारणजनानां कृते नोपयुक्त इति।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi


सूर्यभान्मौलिभं गरायं सप्तहीनं च शेषकम् ।
द्विगुणं च द्विहीनं च गता रात्रिः स्फुटा भवेत् ॥ १५० ॥
मस्तके मृगशीर्षे च मूले च नवमोदयः ।
अन्यर्क्षे च यदा मूर्ध्नि तदा स्यादष्टमोदयः ॥ १५१ ॥

पूर्वाषाढ़, अनुराधा, ज्येष्ठा, आश्लेषा, रेवती एवं विशाखा इन नक्षत्रों में से कोई भी एक नक्षत्र जब रात्रि के समय मस्तक के ऊपर सामने ठीक उत्तर या दक्षिण आकाश में दिखाई दे ( दूरवीक्षणयन्त्र ( Telescope ) के द्वारा रात्रि में साफ दीख पड़ता है ) उस खमध्यस्थ नक्षत्र से आठवां का उदय होता है । अतः इष्टकाल जानने के लिए--सूर्य जिस नक्षत्र पर हो उससे खमध्यस्थ नक्षत्र तक गिनने से जो संख्या हो उसमें सात हीन करे, शेष को दूना करे फिर दो घटा दे तब जो बचे, वही रात्रिगत इष्टकाल होगा ( याने सूर्यास्त के बाद इष्टकाल तक उतनी रात्रि व्यतीत हुई है ) । खमध्य में मृगशिर या मूल के रहने से नौवां नक्षत्र का उदय होता है ( यदि यही स्थिति हो तो 'सूर्यभान्मौलिभं गण्यं' इसके अनुसार गणित करने के लिए सात की जगह आठ हीन करना चाहिए ) अन्य नक्षत्रों के रहने से अठवां ही का उदय होता है ॥

उदाहरण जैसे—सूर्य स्वाती पर हैं, और इष्टकाल में आकाशस्थ नक्षत्र रेवती दीख पड़ी है तब स्वाती से रेवती तक १३ हुआ, सात घटाने से ६ बचा, दूना किया १२ हुआ, इसमें से दो घटाया तब १० रहा, यही इष्ट घटी रात्रिगत हुई । इसमें दिनमान जोड़ने पर सूर्योदय से जन्म समय तक इष्टकाल होगा ॥१४९-१५१॥

केन्द्रिगुरोर्महत्त्वम्—

किं कुर्वन्ति ग्रहाः सर्वे यस्य केन्द्रे बृहस्पतिः ।
मत्तमातङ्गयूथानां शतं हन्तीव केसरी ॥ १५२ ॥

जिसके केन्द्र में बृहस्पति हो उसको और सभी ग्रह ( खराब

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi



होने पर भी ) क्या कर सकते हैं। जैसे अकेला सिंह मत्त हाथियों के सैकड़ों झुण्ड को पलभर में तितर-वितर कर देता है, वैसे बृहस्पति भी और ग्रहों के लिये है ॥ १५२ ॥

शुक्रो दश सहस्राणि बुधो दश शतानि च ।
लक्षमेकं तु दोषाणां गुरुर्लग्ने व्यपोहति ॥ १५३ ॥

यदि लग्न में शुक्र पड़े तो दस हजार दोषों का, बुध हो तो एक हजार दोषों का एवं बृहस्पति हो तो एक लाख दोषों का नाशक होता है ( इस में संख्या उपलक्षण है, सारांश यह कि यदि लग्न में इन तीनों में से एक भी पड़े तो अन्य दोषों का महत्त्व नहीं मानना चाहिए ) ॥ १५३ ॥

पुनः सर्पाकारत्रिनाडीचक्रम्—

सर्पाकारं लिखेच्चक्रं विवाहे च त्रिनाडिकम् ।
अश्विनीप्रमुखं भं च दत्त्वा साम्यं विचारयेत् ॥ १५४ ॥
एकनाडीस्थनक्षत्रे दम्पत्योर्मरणं ध्रुवम् ।
सेवायां च भवेद्धानिर्विवाहे त्वशुभं भवेत् ॥ १५५ ॥

सर्प के आकार में त्रिनाड़ी चक्र बनावें, उसमें अश्विनी आदिक सब नक्षत्रों का ( तीन पंक्ति में ) न्यास करे, तब देखे; वर-कन्या दोनों के जन्मनक्षत्र एक ही नाड़ी में पड़े तो दोनों का या वर का मरण हो। यदि सेव्य-सेवक का अवसर हो तो दोनों नक्षत्र की अवस्थिति होने से हानि होती है, सो जानना॥१५४-१५५॥

परिघादिदुष्टयोगेषु वर्ज्यघट्यः—

परिघार्द्धं व्यतीपातं वैधृतिं सकलं त्यजेत् ।
विष्कुम्भे घटिकाः पञ्च शूले सप्त प्रकीर्तिताः ॥ १५६ ॥
गण्डेऽतिगण्डे षड्घट्यो नव व्याघातवज्रयोः ।
वर्ज्या एते ध्रुवं योगा नवपाणिग्रहे बुधैः ॥ १५७ ॥

परिघ योग का आधा, व्यतीपात और वैधृति योग संपूर्ण,

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi


विष्कुम्भ में पांच घटी, शूल में सात घटी, गण्ड और अतिगण्ड में छः घटी, एवं व्याघात और वज्र योग में नौ घटी विवाह में (तथा सब शुभ कामों में भी) अवश्य वर्जित करे ॥ १५६–१५७ ॥

वर्ज्ययोगानां फलम्—

**व्यतीपाते च गण्डान्ते* वरस्य मरणं ध्रुवम्।**
**अग्निदाहो भवेद्वज्रे रोगश्चैवातिगण्डके ॥ १५८ ॥**
**वीर्यहानिश्च गण्डे च व्याघाते मृतवत्सका।**
**वैधव्यं वैधृतौ ज्ञेयं विष्कुम्भे कामचारिणी।**
**परिघे च भवेद्दासी मद्यमांसरता सदा ॥ १५९ ॥**

व्यतीपात योग में और गण्डान्त (शूल) में वर का मरण होता है, वज्र योग में अग्निदाह, अतिगण्ड में रोग, गण्ड में बलहानि ( धातुक्षीणता ) होती है, व्याघात योग में कन्या मृतवत्सा होती है (उसके बच्चे जन्म लेते ही मर जाते हैं) एवं परिघ योग में दासी तथा मदिरा–मांस को स्वीकार करने वाली होती है ॥ १५८–१५९ ॥

पट्टचक्रविचारः—

**पट्टाकारं लिखेच्चक्रमष्टकोणसमन्वितम्।**
**यस्मिन्नृक्षे भवेत्सूर्यस्तदाद्यं मध्यगं त्रयम् ॥ १६० ॥**
**त्रीणि त्रीणि च सर्वत्र भानि पूर्वादितो लिखेत्।**
**नक्षत्रत्रितये मध्ये पक्षद्वयविनाशनम् ॥ १६१ ॥**
**पूर्वभागे भवेल्लक्ष्मीर्धनधान्यसमागमः।**
**अग्निकोणे भवेन्मृत्युर्नारी कुलविनाशिनी ॥ १६२ ॥**

---

*अत्र तिथिनक्षत्रलग्नवशतो यत्त्रिविधं गण्डान्तमवबुध्यते तदर्थको नायं शब्दः, यतोऽव्यवहितपूर्वपद्योक्तपरिघादिनवदुष्टयोगानामेवोक्तघटिकास्त्याज्याः, अत्र तेषामेव फलनिदर्शनप्रसङ्गः। अतो गण्डोऽन्ते यस्येति बहुव्रीहिसमासतो गण्डान्तः शूलयोगबोधकः प्रतीयते। तथा स्वीकृतेऽर्थे सर्वयोगानामवस्थितिश्च सङ्गता भवति।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi


दक्षिणे दुर्भगा नारी दारिद्र्यं मृत्युमाप्नुयात् ।
नैर्ऋत्ये पुत्रलाभश्च सुखसौभाग्यमेव च ॥ १६३ ॥
पश्चिमे विधवा कन्या वायव्ये व्यभिचारिणी ।
उत्तरे धनधान्यानि ऐशान्यां सुखसम्पदः ॥ १६४ ॥
माङ्गल्यं सर्वकार्येषु सर्वसिद्धिप्रदायकम् ।
गर्गाचार्येण संप्रोक्तं पट्टचक्रं विचारयेत् ॥ १६५ ॥

सफलं पट्टचक्रम्—

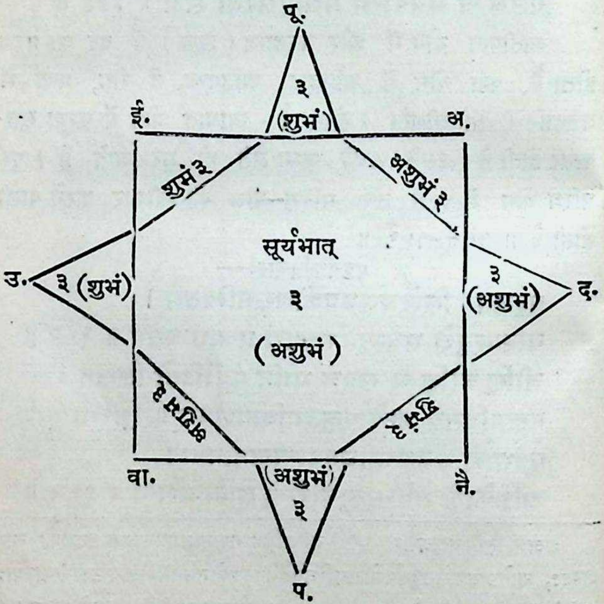


पट्ट के आकार का आठ कोण वाला चक्र (जैसा ऊपर है) लिखे, सूर्य जिस नक्षत्र पर हो उससे आरंभ कर पहले तीन नक्षत्र मध्य में

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi


रखे, बाद में पूर्व, अग्निकोण, दक्षिण इस तरह आठों जगह तीन २ नक्षत्रों की स्थापना करें। यदि विवाह-नक्षत्र मध्य भाग में पड़े तो वर-कन्या दोनों पक्ष का नाश हो। पूर्व भाग में पड़े तो लक्ष्मी की प्राप्ति हो, अग्निकोण में मृत्यु हो, दक्षिण में कन्या दुर्भगा हो, दारिद्र्य एवं मृत्यु जानो, नैर्ऋत्य में पड़े तो पुत्र-लाभ हो, पश्चिम में पड़े तो विधवा हो, वायव्य में पड़े तो व्यभिचारिणी हो, उत्तर में पड़े तो धन-धान्य मिले, ईशान में पड़े तो सुख-सम्पत्ति का लाभ हो। इस प्रकार गर्गाचार्य से कथित पट्टचक्र के विचार से सब कामों में मङ्गल होता है ॥ १६०-१६५ ॥

इति विवाहप्रकरणम्—

## अथ द्वितीयं प्रकरणम् ।

आदौ द्विरागममुहूर्त्तः—

धातृयुग्मं हयो मैत्रं श्रुतियुग्मं करत्रयम् ।
पुनर्वसुद्वयं पूषा मूलं चाप्युत्तरात्रयम् ॥ १ ॥
विषमे वत्सरे मासे मार्गवैशाखफाल्गुने ।
लग्ने कन्यातुलामीनधनुर्युग्ममृगे शुभः ॥ २ ॥
भौमार्किवर्जिता वारा गृह्यन्ते च द्विरागमे ।
षष्ठी रिक्ता द्वादशी च अमावास्या च वर्जिताः ॥ ३ ॥

पहले द्विरागम का मुहूर्त्त—रोहिणी, मृगशिरा, अश्विनी, अनुराधा, श्रवण, धनिष्ठा, हस्त, चित्रा, स्वाती, पुनर्वसु, पुष्य, रेवती, मूल, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ एवं उत्तरभाद्र ये १६ नक्षत्र; विवाह से विषम वर्ष; अगहन, वैशाख और फाल्गुन ये तीनों मास; कन्या, तुला, मीन, धनु, मिथुन एवं मकर ये लग्न; इनमें द्विरागम शुभ होता है। परन्तु मङ्गल, शनि ये दिन, षष्ठी, द्वादशी, अमावास्या, चतुर्थी, नवमी और चतुर्दशी ये तिथियां द्विरागमन में त्याज्य हैं ॥ १-३ ॥

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi


पुंसवन-सीमन्तमुहूर्तौ—

आर्द्रात्रयं भाद्रयुग्मं मृगः पूषा श्रुतिः करः।
मूलत्रयं कुजार्कज्या वारा रिक्तां विना तिथिः॥ ४॥
आद्यमासत्रयं गर्भाच्चरवर्जितलग्नकम्।
शुभं पुंसवने सर्वं सीमन्ते त्वष्टमो मतः॥ ५॥

आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, उत्तरभाद्र, पूर्वभाद्र, मृगशिर, रेवती, हस्त, श्रवण, मूल, पूर्वाषाढ, और उत्तराषाढ ये नक्षत्र; मङ्गल, रवि, बृहस्पति ये दिन, चतुर्थी, नवमी, चतुर्दशी से अतिरिक्त तिथियां, गर्भाधान से प्रथम, द्वितीय, तृतीय मास, चर लग्न ( मेष, कर्क, तुला ) के अतिरिक्त लग्न, पुंसवन एवं सीमन्त कर्म में शुभ हैं। सीमन्त कर्म के लिए महीना केवल अष्टम श्रेष्ठ है, और सब पुंसवनोक्त होना चाहिये॥ ४–५॥

गर्भाधानम्—

ब्रह्ममित्रवसुस्वातीमृगहस्तोत्तरात्रये।
सवारुणे सुतिथ्यादौ गर्भाधानं शुभं भवेत्॥ ६॥
शुभे त्रिकोणकेन्द्रस्थे पापे षष्ठत्रिलाभगे।
पुत्रकामः स्त्रियं गच्छेन्नरो युग्मासु रात्रिषु॥ ७॥

रोहिणी, अनुराधा, धनिष्ठा, स्वाती, मृगशिरा, हस्त, तीनों उत्तरा और शतभिषा इन नक्षत्रों तथा शुभतिथ्यादि में गर्भाधान शुभ होता है। शुभग्रह केन्द्र १, ४, ७, १० या त्रिकोण ९, ५ में हों, पापग्रह लग्नसे ३, ६, ११ इन स्थानों में पड़ें, रजोदर्शन के बाद चार रात्रि छोड़ कर सम याने ६, ८, १० इन रात्रियों में पुत्र की कामना से गर्भाधान करना श्रेष्ठ है॥ ६–७॥

नामकर्म—

पुनर्वसुद्वये हस्तत्रये मैत्रद्वये मृगे।
मूलोत्तराधनिष्ठासु द्वादशैकादशे दिने॥ ८॥

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi


अन्यत्रापि शुभे योगे वारे बुधशशाङ्कयोः।
भानोर्गुरोः स्थिरे लग्ने बालनाम कृतं शुभम् ॥ ९ ॥

पुनर्वसु से दो ( पुनर्वसु, पुष्य ), हस्त से तीन ( हस्त, चित्रा, स्वाती ), अनुराधा से दो ( अनुराधा, ज्येष्ठा ), मृगशिरा, मूल, उत्तरा तीनों एवं धनिष्ठा इन नक्षत्रों में, जन्म से ग्यारहवें या बारहवें दिन में, बुध, सोम, रवि एवं बृहस्पति इन दिनों में, स्थिर लग्न ( वृष, सिंह, वृश्चिक, कुम्भ ) में बालकों का नामकर्म श्रेष्ठ है ( यदि ११–१२ इन दिनों में नक्षत्रादि न मिले तो आगे भी पठित नक्षत्रादि के आने पर यह संस्कार शुभ कहा गया है ) ॥८–९॥

निष्कासनम्—

मैत्रत्रये हरिद्वन्द्वे विधिद्वन्द्वेऽदितिद्वये।
स्वातीहस्तोत्तराषाढापूषार्यमद्वयेषु च ॥ १० ॥
सिंहत्रये घटे लग्ने मासयोस्त्रिचतुर्थयोः।
यात्रातिथौ च निष्कास्यः शिशुर्नचार्किभौमयोः ॥११॥

अनुराधा से तीन ( अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल ), श्रवण से दो ( श्रवण, धनिष्ठा ), रोहिणी से दो ( रोहिणी, मृगशिर ), पुनर्वसु से दो ( पुनर्वसु, पुष्य ), स्वाती, हस्त, उत्तराषाढ़, रेवती, उत्तरफाल्गुनी एवं अश्विनी इन पन्द्रह नक्षत्रों में, सिंह से तीन ( सिंह, कन्या, तुला ), और कुम्भ इन लग्नों में, तीसरे या चौथे मास में, यात्रा की तिथियों ( ६, १२, ८, ३०, १५, ४, ९, १४ तथा शु. प. १ को छोड़ कर ) में, एवं शुभ दिनों में जातक का निष्कासन शुभ होता है। परन्तु उक्त नक्षत्रादि के रहने पर भी शनि-मङ्गल में कभी निष्कासनं नहीं करना चाहिए ॥ १०–११ ॥

सूतिस्नाने त्याज्यनक्षत्रादि—

पुनर्वसुद्वयं चित्रा विशाखा भरणीद्वयम्।
मूलमार्द्रा मघा हेयाः श्रवणो दशमस्तथा ॥ १२ ॥

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi



सोमशुक्रबुधा वाराः प्रसूतोस्नानकर्मणि ।
त्याज्या प्रतिपदा षष्ठी नवमी च तिथिक्षयः ॥ १३ ॥

पुनर्वसु से दो (पुनर्वसु, पुष्य), चित्रा, विशाखा, भरणी से दो (भरणी, कृत्तिका), मूल, आर्द्रा (ये ९) और दशवां श्रवण इतने नक्षत्र, सोम-शुक्र-बुध ये दिन, प्रतिपत्, षष्ठी, नवमी ये तिथियां एवं तिथिक्षय ये सब प्रसूति के स्नानमें त्याज्य हैं॥१२-१३॥

नववस्त्रधारणम्—

हस्तादिपञ्चके दस्रपौष्णवासवभेषु च ।
गुरौ शुक्रे बुधे वारे धार्यं स्त्रीभिर्नवाम्बरम् ॥ १४ ॥
लग्ने मीने च कन्यायां मिथुने च वृषे शुभे ।
पुंभिः पुनर्वसुद्वन्द्वे रोहिण्युत्तरभेषु च ॥ १५ ॥

हस्त से पांच (हस्त, चित्रा, स्वाती, विशाखा, अनुराधा), अश्विनी, रेवती, और धनिष्ठा इन नक्षत्रों में, बृहस्पति, शुक्र, बुध इन दिनों में, मीन-कन्या-मिथुन और वृष इन लग्नों में स्त्रियों के लिये नवीन वस्त्र का धारण शुभप्रद है। पुनर्वसु, पुष्य, रोहिणी, तीनों उत्तरा इन छः नक्षत्रों में (लग्नादि स्त्रीवस्त्रधारणोक्त) पुरुष नवीन वस्त्र धारण करे तो शुभ है॥ १४-१५ ॥

सूतीस्नानम्—

रोहिण्युत्तररेवत्यो मूलं स्वात्यनुराधभे ।
पूर्वात्रयं धनिष्ठा च ज्येष्ठामृगशिरस्तथा ॥ १६ ॥
शुभान्येतानि भानीह प्रसूतीस्नानकर्मणि ।
वारा भौमार्कजीवानां स्नानयोग्याः सदैव हि ॥ १७ ॥

रोहिणी, उत्तरफाल्गुनी, उत्तराषाढ, उत्तरभाद्र, रेवती, मूल, स्वाती, अनुराधा, धनिष्ठा, तीनों पूर्वा, ज्येष्ठा एवं मृगशिरा इतने नक्षत्र, मङ्गल, रवि एवं बृहस्पति ये दिन प्रसूतीस्नान में शस्त कहे गए हैं॥ १६-१७ ॥

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi


### जलपूजामुहूर्त्तः—

**मूलादितिद्वयं ग्राह्यं श्रवणश्च मृगः करः।**
**जलस्याभ्यर्चने हेयाः शुक्रमन्दार्कभूमिजाः॥ १८॥**

मूल, पुनर्वसु, पुष्य, श्रवण, मृगशिर और हस्त ये नक्षत्र शुक्र, शनिश्चर, रवि और मङ्गल इतने दिन छोड़कर शेष दिन जलपूजा के लिए विहित हैं॥ १८॥

### नवान्नभक्षणम्—

**नवान्नभोजने ग्राह्यं वस्त्रे प्रोक्तमशेषतः।**
**अधिकौ सूर्यसोमौ च नक्षत्रं श्रवणो मृगः॥ १६॥**

वस्त्रधारण में जो लग्न-नक्षत्र उक्त हैं उनमें रवि और सोमवार तथा श्रवण-मृगशिर नक्षत्र मिलाकर सभी नवान्नभक्षण में श्रेष्ठ हैं॥१९॥

### अन्नप्राशनमुहूर्तः—

**आद्यान्नप्राशने पूर्वाः सार्पार्द्रे वरुणो यमः।**
**नक्षत्राणि परित्यज्य वारौ भौमार्कनन्दनौ॥ २०॥**
**द्वादशीसप्तमीरिक्तापर्वनन्दास्तु वर्जिताः।**
**लग्नेषु च झषो ग्राह्यो वृषः कन्या च मन्मथः॥ २१॥**
**शुक्लपक्षः शुभो योगः सङ्ग्राह्यः शुभचन्द्रमाः।**
**मासौ षष्ठाष्टमौ पुंसां स्त्रीणां सप्तमपञ्चमौ॥ २२॥**

पूर्वफाल्गुनी, पूर्वाषाढ़, पूर्वभाद्र, आश्लेषा, आर्द्रा, शतभिषा और भरणी इन नक्षत्रों को, मङ्गल, रवि शनिश्चर इन दिनों को, तथा द्वादशी, सप्तमी, पर्व (१४, ८, ३०, १५, संक्रान्तितिथि) और रिक्ता इन तिथियों को छोड़ कर, मीन, वृष, कन्या एवं मिथुन इन लग्नों में, शुक्लपक्ष में, शुभ योग, शुभ चन्द्रमा के रहने पर, छठे आठवें महीना में बालकों का प्रथम अन्नप्राशन करना श्रेष्ठ है। कन्या के लिए महीना पांचवा या सातवां लेना चाहिए और सब बालान्नप्राशनोक्त ही है॥ २०-२२॥


Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi


चूडाकर्म—

पुनर्वसुद्वये ज्येष्ठामृगयोः श्रवणद्वये ।
हस्तत्रये च रेवत्यां शुक्लपक्षोत्तरायणे ॥ २३ ॥
लग्ने गोस्त्रीधनुःकुम्भमकरे मन्मथे तथा ।
सौम्यवारे शुभे योगे चूडाकर्म स्मृतं बुधैः ॥ २४ ॥

पुनर्वसु, पुष्य, ज्येष्ठा, मृगशिर, श्रवण, धनिष्ठा, हस्त, चित्रा एवं स्वाती इन नक्षत्रों में, शुक्लपक्ष में, उत्तरायण ( मकर की संक्रान्ति से मिथुन तक ) वृष, कन्या, धनु, कुम्भ, मकर और मिथुन इन लग्नों में एवं शुभ दिनों में, शुभ योगों में चूडाकर्म शुभ होता है ॥ २३-२४ ॥

विद्यारम्भमुहूर्तः—

हस्तत्रये हरिद्वन्द्वे पूर्वासु मृगपञ्चके ।
मूले पौष्णे च नक्षत्रे बुधेऽर्के गुरुशुक्रयोः ॥ २५ ॥
देवोत्थाने मीनचापलग्ने वर्षे च पञ्चमे ।
विद्यारम्भोऽत्र वर्ज्याश्च षष्ठ्यनध्यायरिक्तकाः ॥ २६ ॥
रिक्तामाप्रतिपत्तिथ्यो विद्यारम्भे विशेषतः ।
बुधेन्दुवासरौ हीनौ शनिभौमौ मृतिप्रदौ ॥ २७ ॥

हस्त से तीन ( हस्त, चित्रा, स्वाती ), श्रवण, धनिष्ठा, तीनों पूर्वा, मृगशिरा से पांच ( मृगशिरा, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा ), मूल और रेवती इन नक्षत्रों में, बुध, रवि, बृहस्पति एवं शुक्र इन दिनों में, देवोत्थान के बाद हरिशयन के भीतर ( का० शु० ११ से आषाढ़ शु० ११ तक ) मीन, धनु लग्नों में, बालक के जन्म से पांचवे वर्ष में विद्यारम्भ कराना शुभ होता है, परन्तु षष्ठी, अनध्याय और रिक्ता तिथि इनका त्याग अवश्य करें रिक्ता ( ४, ९, १४ ), अमावास्या और प्रतिपत्, ये तिथियां विशेषतः वर्जित

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi


हैं। इसमें बुध, सोमवार हीन हैं और शनि, मङ्गल मरण-कारक हैं, अतः इन सबों का त्याग करना चाहिए ॥ २५-२७ ॥

विद्यारम्भे विशेषः—

विद्यारम्भे गुरुः श्रेष्ठो मध्यमौ भृगुभास्करौ ।
बुधेन्दू चोपविद्यायां शनिभौमौ परित्यजेत् ॥ २८ ॥

विद्यारम्भ में बृहस्पतिवार सर्वोत्तम है, शुक्र और रवि मध्यम हैं। बुध और सोम उपविद्या के लिए विहित हैं (वेद-वेदाङ्ग के लिए अधम)। शनि मङ्गल हीन हैं अतः इन दोनों का परित्याग करना चाहिए ॥ २८ ॥

व्रतबन्धः—

पूर्वाषाढाश्विनीहस्तत्रये च श्रवणत्रये ।
ज्येष्ठाभगे मृगे पुष्ये रेवत्यामुत्तरात्रये ॥ २९ ॥
द्वितीयायां तृतीयायां पञ्चम्यां दशमीत्रये ।
शुक्रसौम्येन्दुगुर्वर्कवारे स्वच्छदले तथा ॥ ३० ॥
लग्ने वृषधनुःसिंहे कन्यामिथुनयोरपि ।
व्रतबन्धः शुभे योगे ब्रह्मक्षत्रविशां मतः ॥ ३१ ॥

पूर्वाषाढ़, अश्विनी, हस्त, चित्रा, स्वाती, श्रवणा, धनिष्ठा, शतभिषा, ज्येष्ठा, पूर्वफल्गुनी, मृगशिर, पुष्य, रेवती और तीनों उत्तरा इन १६ नक्षत्रों में; द्वितीया, तृतीया, पञ्चमी, दशमी, एकादशी, द्वादशी इन तिथियों में; शुक्र, बुध, गुरु, रवि इन दिनों में; शुक्ल पक्ष में, वृष, धनु, सिंह, कन्या एवं मिथुन इन लग्नों में; शुभ योग में ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य इन तीन वर्णों का व्रतबन्ध श्रेष्ठ होता है ॥ २९-३१ ॥

शुभाशुभग्रहाः—

पापो भौमः शनिः केतुः क्रूरो राहू रविस्तथा ।
शुभः सोमो बुधश्चैव गुरुः शुक्रस्तथैव च ॥ ३२ ॥

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi


मङ्गल, शनि, केतु, राहु, रवि, ये पाप ग्रह हैं, और चन्द्र, बुध, बृहस्पति एवं शुक्र ये शुभग्रह हैं (तदनुसार सोम, बुध, बृहस्पति, शुक्र ये शुभ दिन और शेष तीन पाप दिन हैं) ॥ ३२ ॥

कर्णवेधः—

श्रुतित्रयेऽदितिद्वन्द्वे मैत्रे हस्तत्रयोत्तरे।
भगे विधियुगे मूले पूषाश्वे सौम्यवासरे ॥ ३३ ॥
द्विस्वभावे घटे लग्ने कर्णवेधः प्रशस्यते।
चैत्रपौषौ हरिस्वापं युग्मवर्षं परित्यजेत् ॥ ३४ ॥

श्रवण से तीन (श्र० ध० श०), पुनर्वसु पुष्य, अनुराधा, हस्त, चित्रा, स्वाती, तीनों उत्तरा, पूर्वफल्गुनी, रोहिणी, मृगशिरा, मूल, रेवती तथा अश्विनी इन १८ नक्षत्रों में; शुभ दिनों में, द्विस्वभाव (मिथुन, कन्या, धनु, मीन) एवं कुंभ इन लग्नों में कर्णवेध शुभ होता है, परन्तु चैत्र, पौष, हरिशयन के चार महीने और बालकों का सम वर्ष (२, ४, ६, आदि) ये सब त्याज्य हैं ॥ ३३–३४ ॥

वास्तुकर्म—

पूर्वाषाढादितिद्वन्द्वं विधियुग्मं हरित्रयम्।
उत्तरा हस्ततस्त्रीणि भानि मूलं च रेवती ॥ ३५ ॥
मैत्राश्विन्यौ च लग्नेषु सिंहः कन्या घटो वृषः।
मिथुनं मकरो ग्राह्यो वास्तुकर्मणि कोविदैः ॥ ३६ ॥
श्रावणश्चाथ वैशाखः कार्तिकः फाल्गुनस्तथा।
मासेषु मार्गशीर्षोऽपि वास्तुकर्मणि शस्यते ॥ ३७ ॥
वज्रव्याघातशूलानि व्यतीपातश्च गण्डकः।
विष्कम्भः परिघो वर्ज्यो वारो भौमश्च भास्करः ॥ ३८

पूर्वाषाढ, पुनर्वसु, पुष्य, रोहिणी, मृगशिरा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वाती, मूल, रेवती, अनुराधा तथा अश्विनी इन नक्षत्रों में, सिंह, कन्या, कुंभ, वृष, मिथुन, मक

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi



इन लग्नों में, श्रावण, वैशाख, कार्तिक, फाल्गुन ( मतान्तर से अगहन भी ) इन महीनों में वास्तुकर्म ( गृहारम्भ ) श्रेष्ठ होता है। परन्तु वज्र, व्याघात, शूल, व्यतीपात, गण्ड, विष्कम्भ, एवं परिघ इन कुयोगों को तथा मंगल-रवि वारों को छोड़ कर अन्य योग एवं दिनों में गृहारंभ करना चाहिये ॥ ३५-३८ ॥

देवमूर्त्तिप्रतिष्ठा—

**आर्द्रा शतभिषाऽऽश्लेषा विशाखा भरणीद्वयम् ।**
**त्याज्या च द्वादशी रिक्ता षष्ठी चंद्रक्षयोऽष्टमी ॥ ३९ ॥**
**प्रतिपच्च तिथिर्वारौ त्याज्यौ शनिकुजौ तथा ।**
**देवमूर्त्तिः स्थापनीया स्थिराङ्गेऽयन उत्तरे ॥ ४० ॥**

आर्द्रा, शतभिषा, आश्लेषा, विशाखा, भरणी, कृत्तिका इन नक्षत्रों को, द्वादशी, रिक्ता ( ४, ९ १४, ), षष्ठी, अमावास्या अष्टमी, प्रतिपत् इन तिथियों को, तथा शनि मंगलवार को छोड़ कर शेष तिथि-नक्षत्रादिकों में, स्थिर लग्नों ( वृष, सिंह, वृश्चिक, कुम्भ ) में, एवं उत्तरायण ( मकरादि से छः महीने ) में देवमूर्त्ति की स्थापना शुभ होती है ॥ ३९-४० ॥

गृहप्रवेशः—

**विशाखा भरणी हेयाऽऽश्लेषाख्या च मृगस्तथा ।**
**अमावास्या च रिक्ता च वारौ भौमरवी तथा ॥ ४१ ॥**
**गृहप्रवेशो वैशाखे श्रावणे फाल्गुने तथा ।**
**आश्विने च स्थिरे लग्ने शुभे चन्द्रे सिते दले ॥ ४२ ॥**

भरणी, विशाखा, आश्लेषा और मृगशिर इन नक्षत्रों को और अमावास्या, चतुर्थी, नवमी, चतुर्दशी इन तिथियों को तथा मंगल रविवार को छोड़ कर अन्य तिथि-नक्षत्रादि में, वैशाख, श्रावण, फाल्गुन और आश्विन इन महीनों के शुक्लपक्ष में स्थिर ( वृष, सिंह, वृश्चिक, कुंभ ) लग्नों में गृहप्रवेश शुभ कहा गया है ॥ ४१-४२ ॥

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi



हलप्रवहणम्—

अनुराधाचतुष्के च मघादितियुगे करे।
स्वातिश्रुतिविधिद्वंद्वे रेवत्यामुत्तरात्रये ॥ ४३ ॥
गास्त्रीझषे हलं धार्यं हेयः सूर्यः शनिः कुजः।
षष्ठी रिक्ता द्वादशी च द्वितीयाद्वयपर्व * च ॥ ४४ ॥

अनुराधा से चार ( अ०, ज्ये०, मू०, पू० षा० ) मघा, पुनर्वसु, पुष्य, स्वाती, रोहिणी, मृगशिरा, रेवती तथा तीनों उत्तरा इन १४ नक्षत्रों में, वृष, कन्या, मीन इन लग्नों में, रवि, मंगल, शनि इनके अतिरिक्त दिनों में, षष्ठी, द्वादशी, रिक्ता, द्वितीया, तृतीया और पर्वतिथि इनके अतिरिक्त तिथियों में हलप्रवहण शुभ होता है ॥ ४३-४४ ॥

हलचक्रम्—

त्रयं त्रयं त्रयं पञ्च त्रयं पञ्च त्रयं द्वयम्।
सूर्यभाद्दिनभं यावद्धानिर्वृद्धिर्हले क्रमात् ॥ ४५ ॥

सूर्य जिस नक्षत्र में हो उससे इष्ट दिन के नक्षत्र तक की संख्या जिस कोष्टक में पड़े उसका शुभाशुभ फल अधोलिखित जाने। यथा—सूर्य-नक्षत्र से तीन ( १ ) प्रथम कोष्टक में रखे उसमें पड़े तो हानि, उसके बाद तीन द्वितीय ( २ ) में फल वृद्धि, फिर तीन ( ३ ) में फल हानि, फिर पांच ( ४ ) में फल वृद्धि, फिर तीन ( ५ ) में फल हानि, फिर पांच ( ६ ) में फल वृद्धि, फिर तीन ( ७ ) में फल हानि, फिर दो नक्षत्र ( ८ ) कोष्टक में फल हानि, इस प्रकार जाने ( इसमें अभिजित् की गणना नहीं है ) ॥ ४५ ॥

---

* चतुर्दश्यष्टमी चैव अमावास्या च पूर्णिमा।
पर्वाण्येतानि वेद्यानि रविसंक्रान्तिरेव च ॥

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi



हलचक्र--

| सूर्यभात | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| नक्षत्र | ३ | ३ | ३ | ५ | ३ | ५ | ३ | २ |
| (फल) | हानि | वृद्धि | हानि | वृद्धि | हानि | वृद्धि | हानि | वृद्धि |
| कोष्ठकसंख्या | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ |

यात्रामुहूर्त्तः—

**अनुराधात्रयं हस्तो मृगाश्वौ चादितिद्वयम् ।**
**यात्रायां रेवती शस्ता निन्द्यार्द्रा भरणीद्वयम् ॥ ४६ ॥**
**मघोत्तरा विशाखा च सार्पश्चान्ये च मध्यमाः ।**
**षष्ठी रिक्ता द्वादशी च पूर्णिमाऽमा च वर्जयेत् ॥ ४७ ॥**
**लग्नं कन्या मन्मथश्च मकरश्च तुलाधरः ।**
**यात्रा चंद्रबले कार्या शकुनं च विचारयेत् ॥ ४८ ॥**

अनुराधा से तीन ( अनु० ज्ये० मू० ), हस्त, मृगशिरा, अश्विनी, पुनर्वसु, पुष्य और रेवती ये ९ नक्षत्र और कन्या, मिथुन, मकर, तुल ये लग्न यात्रा के लिए प्रशस्त हैं। भरणी, कृत्तिका, आर्द्रा, मघा, तीनों उत्तरा, विशाखा; एवं आश्लेषा ये ९ नक्षत्र अधम हैं। इनके अतिरिक्त नक्षत्र मध्यम कहे गए हैं षष्ठी, नवमी, चतुर्थी, द्वादशी, चतुर्दशी, आमावास्या, पूर्णिमा इन तिथियों को छोड़ कर चन्द्र-बल तथा शुभ शकुन को देखकर यात्रा करनी चाहिए ॥ ४६–४८ ॥

दिक्–शूलकथनम्—

**शनौ चन्द्रे त्यजेत्पूर्वां दक्षिणां च दिशं गुरौ ।**

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi



**सूर्ये शुक्रे पश्चिमाशां बुधे भौमे तथोत्तराम् ॥ ४९ ॥**

शनि और सोम को पूर्व दिशा का, बृहस्पति को दक्षिण दिशा का, रवि और शुक्र को पश्चिम दिशा का, तथा बुध-मंगल को उत्तर दिशा का त्याग कर यात्रा का मुहूर्त्त देखना चाहिए। (इसको दिक्शूल कहते हैं, परन्तु जो दिन जिस दिशामें वर्जित है उसके विरुद्ध वाली दिशा में यात्रा करने से बहुत उत्तम होता है; जैसे शुक्र-रविवार को पूर्व, मंगल-बुध को दक्षिण, सोम-शनि को पश्चिम और गुरुवार को उत्तर। इसे दिग्बल कहते हैं) ॥ ४९ ॥

### सर्वदिग्गमनार्हनक्षत्राणि—

**सर्वदिग्गमने हस्तः पूषाश्वौ श्रवणो मृगः।**
**सर्वसिद्धिकरः पुष्यो विद्यायां च गुरुर्यथा ॥ ५० ॥**

हस्त, रेवती, अश्विनी, श्रवण, मृगशिरा और पुष्य ये नक्षत्र सर्वदिग्गमनार्ह हैं, इनमें किसी भी दिशा में यात्रा करने से वाम पृष्ठ चन्द्रमा का दोष नहीं लगता है ॥ ५० ॥

### योगिनीवासविचारः—

**प्रतिपत्सु नवम्यां च पूर्वस्यां दिशि योगिनी।**
**अग्निकोणे तृतीयायामेकादश्यां तु सा स्मृता ॥ ५१ ॥**
**त्रयोदश्यां च पञ्चम्यां दक्षिणस्यां शिवप्रिया।**
**द्वादश्यां च चतुर्थ्यां च नैर्ऋत्ये योगिनी मता ॥ ५२ ॥**
**चतुर्दश्यां च षष्ठ्यां च पश्चिमायां च योगिनी।**
**पूर्णिमायां च सप्तम्यां वायुकोणे तु पार्वती ॥ ५३ ॥**
**दशम्यां च द्वितीयायामुत्तरस्यां शिवा वसेत्।**
**दर्शाष्टम्योर्योगिनी सा, ऐशान्यां समुदाहृता ॥ ५४ ॥**

इसका अर्थ मूल ही से स्पष्ट है ॥ ५१–५४ ॥

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi



यथा योगिनीचक्र—

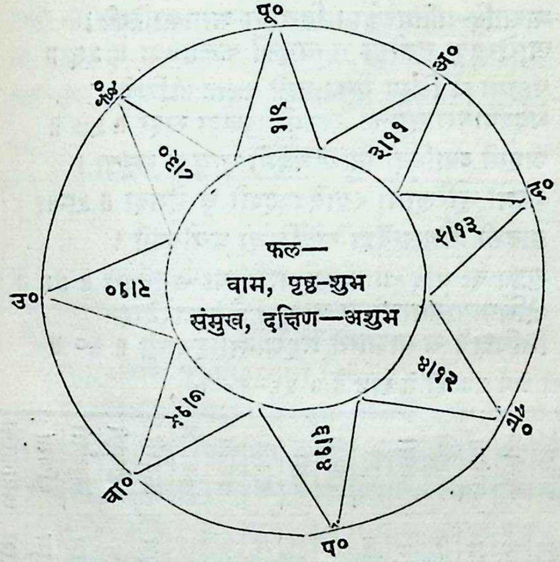


वामादियोगिनीफलम्—

**योगिनी सुखदा वामे पृष्ठे वांछितदायिनी ।**
**दक्षिणे धनहन्त्री च सम्मुखे मरणप्रदा ॥ ५५ ॥**

यदि यात्राकाल में योगिनी वाम पड़े यो सुख देने वाली, हो, पृष्ठ में पड़े तो मनोभिलषित कामों की सिद्धि हो । दक्षिण पड़े तो धन का नाश करे, एवं सम्मुख पड़े तो मरण हो । बालवबोधार्थ उदाहरण—प्रतिपत् और नवमी तिथि को पूर्वदिशामें योगिनी रहती है अतः पश्चिम दिशा जाने वाले को पृष्ठ, उत्तर जाने वाले

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi



को सम्मुख पड़ेगी, उसके अनुसार लिखित फल जाने ॥ ५५ ॥

यात्रातिथिवशेन फलानि—

मासादि-प्रतिपच्छ्रेष्ठा द्वितीया कामकारिणी।
आरोग्यदा तृतीया च चतुर्थी कलहप्रदा ॥ ५६ ॥
पञ्चमी च श्रिया युक्ता षष्ठी कलहकारिणी।
भक्ष्यपानसमायुक्ता सप्तमी सुखदा सदा ॥ ५७ ॥
अष्टमी व्याधिदा नित्यं नवमी मृत्युदा स्मृता।
दशमी भूरिलाभा स्यादेकादशी च हेमदा ॥ ५८ ॥
द्वादशी प्राणसन्देहा सर्वसिद्धा त्रयोदशी।
शुक्ला वा यदि वा कृष्णा वर्जनीया चतुर्दशी ॥ ५९ ॥
पौर्णिमायाममायां च प्रस्थानं नैव कारयेत्।
तिथिक्षये च मासान्ते ग्रहणान्ताद्दिनत्रये ॥ ६० ॥

इसका अर्थ चक्र ही से स्पष्ट है ॥ ५६-६० ॥

| तिथि— | फल— |
|---|---|
| प्रतिपत् | शुभ |
| द्वितीया | शुभ |
| तृतीया | शुभ |
| चतुर्थी | अशुभ |
| पञ्चमी | शुभ |
| षष्ठी | अशुभ |
| सप्तमी | शुभ |
| अष्टमी | अशुभ |
| नवमी | अशुभ |
| दशमी | शुभ |
| एकादशी | शुभ |
| द्वादशी | अशुभ |
| त्रयोदशी | शुभ |
| चतुर्दशी | अशुभ |
| पूर्णिमा | अशुभ |
| अमावास्या | अशुभ |

वामराहुविचारः—

अष्टसु प्रहरार्द्धेषु प्रथमाद्येष्वहर्निशम्।
पूर्वतो वामतो राहुस्तुर्यान्तुर्यदिशि व्रजेत् ॥ ६१ ॥
आदौ प्राच्यां ततो वायुर्दक्षिणेशानपश्चिमे।
आग्नेयोत्तरनैर्ऋत्ये प्रहरार्द्धं च तिष्ठति ॥ ६२ ॥
जयश्च दक्षिणे राहौ योगिनी वामतः शुभा।
पृष्ठतश्च शशी नित्यं दक्षिणे संमुखे शुभः ॥ ६३ ॥

दिन एवं रात्रिके आठों अर्द्ध प्रहर में राहु का अवस्थान—

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi



प्रथम अर्द्ध प्रहर में पहले पूर्वदिशा, दूसरे में पूर्व से चौथा (वामावर्त्त) वायुकोण में, तीसरे में वायु से चतुर्थ दक्षिण में (इसी प्रकार आगे भी) राहु रहा करता है। यात्रा के समय राहु दक्षिण पड़े तो शुभ है। योगिनी वाम पृष्ठ पड़े तो शुभ है। एवं चन्द्रमा वाम-पृष्ठ अशुभ और संमुख-दक्षिण शुभ कहा जाता है॥६१-६३॥

स्पष्टार्थ चक्र—

| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | अर्द्धप्रहर |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पूर्व | वायु | दक्षिण | ईशान | पश्चिम | अग्नि | उत्तर | नैर्ऋत्य | दिशा |

चन्द्रवासज्ञानम्—

चन्द्रश्चरति पूर्वादिक्रमतो दिक्चतुष्टयम् ।
मेषादिभेषु यात्रायां संमुखे दक्षिणे शुभः ॥ ६४ ॥
मेषे च सिंहे धनुषीन्द्रभागे वृषे च कन्यामकरे च याम्ये ।
युग्मे प्रतीच्यां तुलकुम्भयोश्च कर्कालिमीने दिशि चोत्तरायाम् ॥

चन्द्रमा मेष, वृष आदि १२ राशियों में पूर्व-दक्षिण आदि दिशाओं में क्रम से रहते हैं। जैसे—मेषमें पूर्व, वृष में दक्षिण, मिथुन में पश्चिम, कर्क में उत्तर, पुनः सिंह में पूर्व, इस तरह भ्रमण करते हैं। यह चन्द्रमा यात्रा में सम्मुख दक्षिण पड़ने से शुभप्रद होता है। तदनुसार मेष, सिंह, धनु में पूर्व दिशा; वृष, कन्या, मकर में दक्षिण; मिथुन, तुल, कुम्भ में पश्चिम और कर्क, वृश्चिक, मीन में उत्तर चन्द्रमा का अवस्थान रहता है ॥ ६४—६५ ॥

संमुखादिचन्द्रफलम्—

सम्मुखे त्वर्थलाभाय पृष्ठे चन्द्रे धनक्षयः ।
दक्षिणे सुखसम्पत्तिर्वामे तु मरणं भवेत् ॥ ६६ ॥

चन्द्रमा यात्रा के समय सम्मुख पड़े तो धन का लाभ हो,

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi



पृष्ठ पड़े तो धन की क्षति हो, दक्षिण पड़े तो सुख-सम्पत्ति मिले एवं वाम पड़ने से मरण होता है ॥ ६६ ॥

यामवशेन रविवासः—

**यामद्वये च रात्र्यन्तयामात् पूर्वादिगो रविः ।**
**शुभो गमे दक्षवामे प्रवेशे पृष्ठसम्मुखे ॥ ६७ ॥**

प्रहर के अनुसार सूर्य का अवस्थान—गत रात्रि के अन्तिम प्रहर और वर्त्तमान दिन का प्रथम प्रहर इन दोनों में सूर्य पूर्व दिशा में, दिन के दूसरें और तीसरे प्रहर में दक्षिण दिशामें, दिन के चौथे प्रहर और अग्रिम रात्रि के प्रथम प्रहर में पश्चिम दिशा में एवं रात्रि के दूसरे और तीसरे प्रहर में उत्तर दिशा में माने जाते हैं । यह सूर्य यात्रा-काल में दक्षिण और वाम शुभ होता है, परन्तु प्रवेश के समय पृष्ठ और सम्मुख शुभ कहा गया है ॥ ६७ ॥

कुलिकः—

**मनुभानुदिशासर्परसवेदाश्विनः क्रमात् ।**
**रविवारान्मुहूर्तोऽयं कुलिको निन्दितः शुभे ॥ ६८ ॥**

सूर्यादि दिनों में क्रमसे १४।१२।१०।८।६।४।२ ये मुहूर्त्त कुलिक संज्ञक होते हैं जो कि शुभ कामों में निन्दित हैं : ( मुहूर्त्त दो घटी की संज्ञा है इस लिए रविवार को १४ वां मुहूर्त्त का अर्थ सूर्योदय से २६ दण्ड के बाद २८ दण्ड तक है इसी प्रकार और दिनों का भी जानें ) ॥ ६८ ॥

कुलिकचक्र—

| दिन | रवि | चन्द्र | कुज | बुध | गुरु | शुक्र | शनि |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मुहूर्त | १४ | १२ | १० | ८ | ६ | ४ | २ |
| घटी | २७-२८ | २३-२४ | १९-२० | १५-१६ | ११-१२ | ७-८ | ३-४ |

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi



कालहोरा—

गता नाड्यो द्विगुणिताः पञ्चभिश्च विभाजिताः।
शेषं शोध्यं युतश्चैकं सप्तभक्तावशेषिता ॥ ६९ ॥
कालहोरेति विख्याता वारेशादथ तत्फलम्।
अशुभा पापखेटानां शुभानां शुभदा मता ॥ ७० ॥

सूर्योदय से जितनी इष्ट घटी हो उसको दूना कर ५ से भाग देकर शेष उसी में हीन करे एक और मिलावे फिर सात से भाग देने पर जो शेष बचे वह वारेश से गिन कर कालहोरा जाने। इस प्रकार से शुभ ग्रहों की कालहोरा शुभ और पाप ग्रहों की अशुभ कही जाती है ॥ ६९-७० ॥

सर्वाङ्कविचारः—

तिथिर्वारश्च नक्षत्रं नामाक्षरसमन्वितम्।
द्वित्रिचतुर्भिर्गुणितं रसससाष्टभाजितम् ॥ ७१ ॥
आदिशून्ये भवेद्धानिर्मध्यशून्ये रिपोर्भयम्।
अन्त्यशून्ये भवेन्मृत्युः सर्वाङ्के विजयी भवेत् ॥ ७२ ॥

प्रश्नकालिक तिथि, दिन एवं नक्षत्र की संख्याओं को एकत्र मिलाकर उसमें प्रश्नकर्त्ता की नामाक्षर-संख्या जोड़ दे, तब जो संख्या हो उसे तीन जगह रखे, पहली जगह दो से गुण कर छः से भाग दे, दूसरी जगह तीन से गुण कर सात से भाग दे, तीसरी जगह चार से गुण कर आठ से भाग दे। यदि प्रथम स्थान में शून्य बचे तो हानि, दूसरे स्थान में शून्य बचे तो शत्रु से भय एवं तीसरे स्थान में शून्य बचे तो मृत्यु जाने। परन्तु तीनों जगह कोई अंक शेष बचे तो विजय होगा यह जानना चाहिए ॥७१-७२॥

रविचन्द्रस्वरफलम्—

*शशिप्रवाहे गमनादि शस्तं सूर्यप्रवाहे रतिमज्जनादि।

---

* स्वरशास्त्रेऽपि—

चन्द्रे वहे नृपविलोकनगेहवेशपट्टाभिषेकसुखकर्म भवेच्छुभं यत्।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi


प्रष्टुर्जयः स्याद्बहुमानभागे*रिक्ते च भागे विफलं समस्तम् ७३

प्रकृति के नियमानुसार जीवमात्र को दोनों नासिका से अनिश्चित रूप में कम अधिक श्वास वायु सदैव चलती रहती है, जब वाम छिद्र के द्वारा अधिक वायु का संचार हो तो चन्द्रस्वर और दक्षिण छिद्र से अधिक चले तो सूर्यस्वर कहा जाता है। चन्द्रस्वर के संचार में यात्रा, विवाह, राज्याभिषेक आदि काम सिद्ध होते हैं। सूर्यस्वर ( दक्षिण स्वर ) में मैथुन, स्नान, भोजन, युद्ध, जूआ खेलना आदि कर्म शुभ होते हैं। इसी प्रकार शुभाशुभ बताने वाले गणक का वामस्वर चलते समय यदि कोई वाम भाग में खड़ा होकर युद्धसम्बन्धी प्रश्न करे तो उसको अनायास ही जय प्राप्त होगा, या जब दक्षिण स्वर चलता रहे तब यदि दक्षिण भाग में खड़ा होकर प्रश्न करे तो भी जय कहना, परन्तु कठिनता के साथ। एवं चन्द्रस्वर में दक्षिण भाग से, सूर्यस्वर में वाम भाग से प्रश्न करे तो जानना कि सब प्रयास विफल होगा। याने युद्ध में हार जायगा ॥ ७३ ॥

---

सौरे तु मज्जनवधूरतिभुक्तियुद्धमुख्यं भवेदशुभकर्मफलाय सत्यम् ॥ १ ॥

अन्यच्च—यात्राकाले विवाहे च वस्त्रालंकारभूषणे।
शुभकर्मणि सन्धौ च प्रवेशे च शशी शुभः ॥ १ ॥
विग्रहे द्यूतयुद्धेषु स्नानभोजनमैथुने।
व्यवहारे भये भंगे भानुनाडी प्रशस्यते ॥ २ ॥
होमश्च शान्तिकं चैव दिव्यौषधिरसायनम्।
विद्यारम्भः स्थिरं कार्यं कर्त्तव्यं च निशाकरे ॥ ३ ॥
मारणं मोहनं स्तम्भं विद्वेषोच्चाटनं वशम्।
प्रेरणाकर्षणं क्षोभं भानुनाड्युदये कुरु ॥ ४ ॥

* बहु (अधिकं) मानं (श्वासवायुवहनपरिमाणं) यस्मिन्, स चासौ भागश्चेति विग्रहगृहीतः पाठो युक्त एव।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi


गमे दक्षिणादिशुक्रफलम्—

दक्षिणे दुःखदः शुक्रः सम्मुखे हन्ति लोचनम्।
वामे पृष्ठे शुभो नित्यं रोधयेच्चास्तगः शुभम्॥ ७४॥

यात्रा के समय में शुक्र दक्षिण भाग में पड़े तो दुःख देने वाला हो, सम्मुख पड़े तो आंख को विगाड़ दे, परन्तु वाम-पृष्ठ पड़ने से शुभ होता है। और शुक्रास्त में सब शुभ काम वन्द रहा करता है॥ ७४॥

क्रयविक्रयमुहूर्तः—

पूर्वभाद्रपदा पुष्यो मैत्राश्विश्रवणास्तथा।
हस्तोत्तरमृगाः स्वाती तथाऽश्लेषा च रेवती॥ ७५॥
ग्राह्याणि भानि चैतानि क्रयविक्रयणे बुधैः।
चन्द्रभार्गवजीवाख्य वाराः शकुनमुत्तमम्॥ ७६॥

पूर्वभाद्र, पुष्य, अनुराधा, अश्विनी, श्रवणा, हस्त, तीनों उत्तरा, मृगशिरा, स्वाती, आश्लेषा और रेवती इतने नक्षत्र, सोम, शुक्र, वृहस्पति ये दिन और शुभ शकुन ये सब वस्तुओं को खरीद-विक्री में शुभ कहे गए हैं (रामाचार्य के मत से जिस नक्षत्रादि में खरीद करे उसमें वेचना निषेध है*)॥ ७५-७६॥

धनिष्ठादौ त्याज्यकर्माणि—

धनिष्ठापञ्चकं त्याज्यं तृणकाष्ठादिसङ्ग्रहे।
याम्यदिग्गमने गेहगोपनाच्छादनादिके॥ ७७॥

जलाने के लिये लकड़ी वगैरह का संग्रह करना, दक्षिण दिशा में यात्रा करना, घर का छवाना एवं मट्टी पोतना इत्यादि कामों में धनिष्ठा, शतभिषा, पूर्वभाद्र, उत्तरभाद्र, रेवती इन नक्षत्रों का त्याग करना चाहिए॥ ७७॥

---

* यथा—"क्रयर्क्षे विक्रयो नेष्टो विक्रयर्क्षे क्रयोऽपि न।"

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi


दिनवशेन तैलाभ्यङ्गफलम्—

तैलाभ्यङ्गे रवौ तापः सोमे शोभा कुजे मृतिः ।
बुधे धनं गुरौ हानिः शुक्रे दुःखं शनौ सुखम् ॥ ७८ ॥

रविदिन में तेल लगाने से शरीर में ताप होता है, ऐसेही सोम में शोभा, मङ्गल में मृत्यु, बुध में धन, बृहस्पति में दुःख एवं शनि में सुख जाने ( अर्थतः केवल सोम, बुध शुक्र और शनि इन्हीं चार दिनों में तेल लगाना चाहिए ) ॥ ७८ ॥

तत्र परिहारः—

रवौ पुष्पं गुरौ दूर्वां भौमवारे च मृत्तिकाम् ।
गोमयं शुक्रवारे च क्षिप्त्वा तैलं न दोषकृत् ॥ ७९ ॥

यदि रविदिन पुष्प, बृहस्पति दिन दूर्वा, मङ्गल दिन मिट्टी, और शुक्र दिन गोवर, तेल में मिलाकर लगावे तो वर्ज्य दिनों में भी तेल दोषकारक नहीं होता है ॥ ७९ ॥

वधूप्रवेशः—

हस्तत्रये ब्रह्मयुगे मघायां पुष्ये धनिष्ठाश्रवणोत्तरेषु ।
मूलानुराधाह्वयरेवतीषु स्थिरेषु लग्नेषु वधूप्रवेशः ॥८०॥

हस्त से तीन ( हस्त, चित्रा, स्वाती ), रोहिणी, मृगशिर, मघा, पुष्य, धनिष्ठा, श्रवणा, उत्तरा ( तीनों ), मूल, अनुराधा, अश्विनी और रेवती ये नक्षत्र, तथा स्थिर लग्न वधप्रवेश के लिए प्रशस्त हैं ॥ ८० ॥

रोगिस्नानम्—

आश्लेषाद्वितयं स्वाती रोहिणी च पुनर्वसुः ।
रोगिस्नाने रेवती च वर्जितश्चोत्तरात्रयम् ॥ ८१ ॥
रिक्तातिथौ चरे लग्ने वारे च रविभौमयोः ।
स्नानं च रोगिणां प्रोक्तं द्विजभोजनपूर्वकम् ॥ ८२ ॥

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi


आश्लेषा, मघा, स्वाती, रोहिणी, पुनर्वसु, रेवती एवं उत्तरा (तीनों) इन ९ नक्षत्रों को छोड़ कर शेष १८ नक्षत्रों में, रिक्ता (चतुर्थी, नवमी, चतुर्दशी) तिथियों में, चर लग्न में, रवि और मङ्गल दिन में पहले ब्राह्मणभोजन कराकर रोगी का (रोगमुक्त होने पर पहली वार) स्नान शस्त कहा गया है ॥ ८१–८२ ॥

आनन्दादियोगाः—

आनन्दः कालदण्डश्च धूम्राक्षश्च प्रजापतिः।
सौम्यो ध्वांक्षो ध्वजश्चापि श्रीवत्सोव ऽप्रमुद्गरो ॥ ८३ ॥
छत्रं मित्रं मानसाख्यं पद्माख्यं लुम्बकस्तथा।
उत्पातमृत्युकाणाश्च सिद्धिश्चाथ शुभोऽमृतः ॥ ८४ ॥
मुसलं गदमातङ्गराक्षसाश्च चरः स्थिरः।
वर्धमानश्चेति योगा अष्टाविंशतिसंख्यकाः ॥ ८५ ॥
नामानुसारिफलदा ज्ञेया दैवज्ञभाषिताः।
अश्विनी रविवारे च योगो ह्यानन्दसंज्ञकः ॥ ८६ ॥
मृगशीर्षं शीतरश्मावाश्लेषा क्षितिनन्दने।
बुधे हस्तोऽनुराधा च देवराजपुरोहिते ॥ ८७ ॥
विश्वेदेवा भृगोर्वारे शनौ वारुणसंज्ञकः।
एवमन्येऽपि योगाः स्युः कालदण्डादयः क्रमात् ॥ ८८ ॥

अपने २ नाम के अनुसार फल देने वाले मूलोक्त आनन्दादि २८ योग माने गए हैं। गणना के लिये–रवि में अश्विनी से आनन्दादि योग होते हैं, यथा—रवि में अश्विनी आनन्द, भरणी कालदण्ड, कृत्तिका धूम्र इत्यादि। ऐसे ही सोमदिन मृगशिर से, मङ्गल दिन आश्लेषा से, बुध में हस्त से, बृहस्पति में अनुराधा से, शुक्रवार को उत्तराषाढ़ से और शनिवार को शतभिषा से गिनकर आनन्दादियोग जानना ॥ ८३–८८ ॥


Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi


आनन्दादियोगचक्र—

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | आनन्द | ८ | श्रीवत्स | १५ | लुम्ब | २२ | मुसल |
| २ | कालदण्ड | ९ | वज्र | १६ | उत्पात | २३ | गद |
| ३ | धूम्राक्ष | १० | मुद्गर | १७ | मृत्यु | २४ | मातंग |
| ४ | प्रजापति | ११ | छत्र | १८ | काण | २५ | राक्षस |
| ५ | सम्य | १२ | मित्र | १९ | सिद्धि | २६ | चर |
| ६ | ध्वांक्ष | १३ | मानस | २० | शुभ | २७ | स्थिर |
| ७ | ध्वज | १४ | पद्म | २१ | अमृत | २८ | वर्धमान |

अमृतसिद्धिः—

**हस्तः सूर्ये मृगः सोमे वारे भौमे तथाऽश्विनी ।**
**बुधे मैत्रं गुरौ पुष्यं रेवती भृगुनन्दने ॥ ८९ ॥**
**रोहिणी रविपुत्रे च सर्वसिद्धिप्रदायिनी ।**
**अयं चामृतसिद्ध्याख्यो योगः प्रोक्तः पुरातनैः ॥९०॥**

रवि में हस्त, सोम में मृगशिर, मंगल में अश्विनी, बुध में अनुराधा, बृहस्पति में पुष्य, शुक्र में रेवती एवं शनिमें रोहिणी ये नक्षत्र पड़े तो सब कामों में सिद्धि देने वाला अमृतसिद्धि नाम का योग होता है ॥ ८९-९० ॥

चक्र—

| दिन | रवि | सोम | भौम | बुध | गुरु | शुक्र | शनि |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| नक्षत्र | हस्त | मृग | अश्वि॰ | अनु॰ | पुष्य | रेवती | रोहि॰ |

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi


यमघण्टः—

**मघादित्ये विशाखेन्दो भौमे चार्द्राऽऽस्त्रपो बुधे।**
**गुरौ वह्निर्विधिः शुक्रे यमघण्टः शनौ करः ॥ ९१ ॥**

रविवार में मघा, सोम में विशाखा, मङ्गल दिन आर्द्रा, बुध में मूल, बृहस्पति में कृत्तिका, शुक्र में रोहिणी और शनि दिन हस्त यमघण्ट योग कहा गया है। ( यह शुभ कामों में, विशेष कर यात्रा में त्याज्य है ) ॥ ९१ ॥

मृत्युयोगः—

**नन्दा सूर्ये च भौमे च भद्रा भार्गवचन्द्रयोः।**
**बुधे जया गुरौ रिक्ता शनौ पूर्णा च मृत्युदा ॥ ९२ ॥**

रवि-मंगल दिन में नन्दा ( १, ६, ११ ), सोम-शुक्र में भद्रा ( २, ७, १२ ), बुध में जया ( ३, ८, १३ ), बृहस्पति में रिक्ता ( ४, ९, १४ ) एवं शनि में पूर्णा ( ५, १०, १५ ) तिथि मृत्यु-योग होता है ॥ ९२ ॥

मृत्युयोगचक्र—

| र. | चं. | मं. | बु. | बृ. | शु. | श. | दिन |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| नन्दा | भद्रा | नन्दा | जया | रिक्ता | भद्रा | पूर्णा | योग |
| १ | २ | १ | ३ | ४ | २ | ५ | तिथि |
| ६ | ७ | ६ | ८ | ९ | ७ | १० | |
| ११ | १२ | ११ | १३ | १४ | १२ | २०,१५ | |

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi


(१) क्रकचयोगः—

तिथ्यङ्केन समायुक्तो वाराङ्को यदि जायते।
त्रयोदशांकः क्रकचो योगः प्रोक्तः पुरातनैः ॥ ९३ ॥

तिथि और दिन की संख्या का योग जहां १३ हो वह क्रकच योग कहा जाता है, जैसे—रविवार को द्वादशी, सोमवार को एकादशी, मंगल को दशमी, बुध को नवमी, गुरुवार को अष्टमी, शुक्र को सप्तमी एवं शनि को षष्ठी पड़े तो इस स्थिति में दोनों का योग १३ होने के कारण क्रकच योग हो जाता है ॥ ९३ ॥

भानामन्धादिसंज्ञाः, फलं च—

अन्धाक्षश्चिपिटाक्षश्च काणाक्षो दिव्यलोचनः।
गणयेद्रोहिणीपूर्वं सप्तवारमनुक्रमात् ॥ ९४ ॥
अन्धे च लभते शीघ्रं चिपिटे च दिनत्रयम्।
काणाक्षे मासमेकं तु सुनेत्रे नैव लभ्यते ॥ ९५ ॥

रोहिणी से आरम्भ कर चार २ नक्षत्र सात आवृत्ति गिनने से अन्धाक्ष, चिपिटाक्ष, काणाक्ष एवं सुलोचन संज्ञक होते हैं, जैसे प्रथम आवृत्ति में रोहिणी = अन्ध, मृगशिरा = चिपिटाक्ष, आर्द्रा = काणाक्ष, पुनर्वसु = सुलोचन, फिर पुष्य = अन्ध इत्यादि क्रमसे गिन कर सात २ नक्षत्रों की संज्ञा अन्धादि जाने। यदि अन्ध संज्ञक नक्षत्र में कोई चीज गुप्त हो जाय तो जल्दी मिले, चिपिट में जाय तो तीन दिन में मिले, काण में एक महीना पर मिले, परन्तु सुलोचन में जाने से कभी नहीं मिले ॥ ९४–९५ ॥

---

(१) अस्यापि योगस्य द्वादशीपर्यन्तमेव सम्भवः।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi



स्पष्टार्थं सफलचक्रम्—

| संज्ञा | अन्धाक्षः | चिपिटाक्षः | काणाक्षः | सुलोचनः |
|---|---|---|---|---|
| नक्षत्राणि | रो. | मृ. | आर्द्रा | पुन. |
| | पु. | आ. | म. | पू. फ. |
| | उ. फ. | ह. | चि. | स्वा. |
| | वि. | अनु. | ज्ये. | मू. |
| | पू. षा. | उ. षा. | अभि. | श्र. |
| | ध. | श. | पू. भा. | उ. भा. |
| | रे. | अ. | भ. | कृ. |
| फलम् | शीघ्रं लाभः | दिनत्रये लाभः | एकमासे लाभः | न लाभः |

नक्षत्रचारदिग्विचारः—

(१)पुनर्वसुर्मृगश्चार्द्रा ज्येष्ठा मैत्रं करस्तथा ।
पूर्वाषाढोत्तराषाढे मूलं दक्षिणचारिणः ॥ ६६ ॥
कृत्तिका रोहिणी पुष्यश्चित्राऽऽश्लेषा च रेवती ।
शतं धनिष्ठा श्रवणो नव मध्यमचारिणः ॥ ६७ ॥
अश्विनी भरणी स्वाती विशाखा फाल्गुनीद्वयम् ।
मघा भाद्रपदायुग्मं नव चोत्तरचारिणः ॥ ६८ ॥

अब नक्षत्रों की संचारदिशा कहते हैं—पुनर्वसु १, मृगशिर २, आर्द्रा ३, ज्येष्ठा ४, अनुराधा ५, हस्त ६, पूर्वाषाढ ७, उत्तराषाढ़ ८ और मूल ९ इतने नक्षत्र सूर्यमार्ग से दक्षिण तरफ

(१) भानां शरदिग्विचारतो नैषा स्थितिरविकलं घटते ।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi



रहते हैं। कृत्तिका १, रोहिणी २ पुष्य ३, चित्रा ४, आश्लेषा ५, रेवती ६, शतभिषा ७, धनिष्ठा ८ एवं श्रवण ९ ये मध्यचारी हैं तथा शेष ९ नक्षत्र उत्तर-तरफ रहने वाले कहे गए हैं ॥९६-९८॥

चक्रम्—

| चार-दिशा | नक्षत्राणि | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दक्षिणा | पु. | मृ. | आ. | ज्ये. | अनु. | ह. | पू. षा. | उ. षा. | मू. |
| उत्तरा | अ. | भ. | स्वा. | वि. | पू. फ | उ. फ. | म. | पू. भा. | उ. भा. |
| मध्या | कृ. | रो. | पुष्य | चि. | आ. | रे. | श. | ध. | श्र. |

वत्सगतिविचारः—

भ्रमतीन्द्रदिशो वत्सो मासानां च त्रिकं त्रिकम्।
आद्रौ भाद्रपदं कृत्वा सव्यतो दिक्चतुष्टयम् ॥ ९९ ॥
यात्राविवादसम्बन्धे द्वारे च गृहहर्म्ययोः।
भूपतेर्मिलने युद्धे वत्ससम्मुखगं त्यजेत् ॥ १०० ॥

भाद्र से आरंभ कर तीन २ महीनों में वत्स का वास पूर्वादि दिशाओं में रहता है। जैसे—भाद्र, आश्विन, कार्त्तिक में पूर्वदिशा, अगहन, पूस, माघ में दक्षिण, फाल्गुन, चैत्र, वैशाख में पश्चिम और ज्येष्ठ, आषाढ़, श्रावण में उत्तर दिशा में वत्स रहता है। यात्रा के समय दक्षिण, सम्मुख पड़ने से अनिष्ट होता है, अतः वाम-पृष्ठ देख कर यात्रा करना शुभ है। इसका विचार विवाद (मुकद्दमेबाजी), राजदर्शन, गृह-प्रासाद के द्वार, लड़ाई इन कामों में भी करना चाहिए ॥ ९९-१०० ॥

अश्विन्यादिनक्षत्राणां तारासंख्याः—

त्रयमश्वे यमेऽग्नौ षड् विधौ पञ्च मृगे त्रयम्।
नक्षत्रमेकमार्द्रायां चत्वारि च पुनर्वसौ ॥ १०१ ॥

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi



पुष्ये त्रयं पञ्च सार्पे मघायां चैव पञ्चकम् ।
द्वयं द्वयं च फाल्गुन्योर्ज्ञेयं हस्ते तु पञ्चकम् ॥ १०२ ॥
चित्रास्वात्योरेकमेकं चतुष्कं च द्विदैवते ।
त्रयं स्यादनुराधायां ज्येष्ठायां च त्रयं स्मृतम् ॥ १०३ ॥
मूले रुद्राश्चतुष्कं च पूर्वाषाढे तथोत्तरे ।
प्रोक्तं त्रयं चाभिजिति श्रवणे च त्रयं तथा ॥ १०४ ॥
धनिष्ठायां च चत्वारि शतं शतभिषासु च ।
द्वयं द्वयं भाद्रयोश्च द्वात्रिंशदपि चान्त्यके ॥ १०५ ॥

रात्रि के समय दूरवीक्षण यन्त्र के द्वारा देखने से आकाश में अश्विन्यादि नक्षत्रों की तारासंख्या लिखित के अनुसार साफ़ दीख पड़ती है । अर्थ चक्र ही से स्पष्ट है ॥ १०१-१०५ ॥

चक्र—

| नक्षत्र | ता. सं. | नक्षत्र | ता. सं. | नक्षत्र | ता. सं. | नक्षत्र | ता. सं. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अश्विनी | ३ | पुष्य | ३ | स्वाती | १ | अभिजित् | ३ |
| भरणी | ३ | आश्लेषा | ५ | विशाखा | ४ | श्रवण | ३ |
| कृत्तिका | ६ | मघा | ५ | अनुराधा | ३ | धनिष्ठा | ४ |
| रोहिणी | ५ | पू० फ० | २ | ज्येष्ठा | ३ | शतभिषा | १०० |
| मृगशिरा | ३ | उ० फ० | २ | मूल | ११ | पू. भा. | २ |
| आर्द्रा | १ | हस्त | ५ | पू. षा. | ४ | उ. भा. | २ |
| पुनर्वसु | ४ | चित्रा | १ | उ. षा. | ४ | रेवती | ३२ |

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi



रोगोत्पत्तौ दोषज्ञानम्—

लग्नेऽष्टमे व्यये सूर्ये क्षेत्रपालस्य दूषणम् ।
आकाशदेव्याश्चन्द्रे तु लग्ने षष्ठेऽष्टमे व्यये ॥ १०६ ॥
द्वादशे दशमे भौमे डाकिनीदूषणं स्मृतम् ।
वनदेव्युद्भवो दोषः सप्तमे द्वादशे बुधे ॥ १०७ ॥
जामित्रे द्वादशे जीवे दैवदोषो निगद्यते ।
अस्ते व्यये दैत्यपूज्ये जलदेव्याश्च दूषणम् ॥ १०८ ॥
शनैश्चरे व्यये चास्ते दोषः स्यादामवातजः ।
जामित्रे द्वादशे राहुः कुमतिज्ञातिदूषणम् ॥ १०९ ॥

रोगी की कुण्डली में यदि सूर्य १।८।१२ इन स्थानों में रहे तो क्षेत्रपाल का दोष समझना याने क्षेत्रपाल ही के प्रकोप से रोग का प्रादुर्भाव हुआ है। ऐसे ही चन्द्रमा को १।६।८।१२ वें रहने से आकाशदेवी का, मङ्गल को १०।१२ वें रहने से डाकिनी का, बुध को ७।१२ वें रहने से वनदेवी का, बृहस्पति को ७.१२ वें रहने से अपने पूर्व कर्म ( दैव ) का, शुक्र को ७।१२ वें रहने से जलदेवी का, शनैश्चर को ७।१२ वें रहने से आमवात से, राहु को उन्हीं स्थानों में रहने से दुर्मति और जातिवर्गकृत दोष होता है ॥१०६-१०९॥

लग्नवशतो रोगदोषनिर्णयः—

पितृदोषो भवेन्मेषे क्षुधाहानिर्विवर्णता ।
वृषे गगनदेव्यास्तु ज्वरो दुःस्वप्नमक्षिरुक् ॥ ११० ॥
मिथुने च महामायादोषो वेलाज्वरोऽनिलः ।
कर्के च शाकिनीदोषो हास्यरोदनमौनतः ॥ १११ ॥
सिंहे चले प्रेतदोषो दिवा शीतज्वरोऽरुचिः ।
गृहदोषश्च कन्यायां क्रोधालस्ये तथारुचिः ॥ ११२ ॥
क्षेत्रपालभवो दोषस्तुले सन्तानपीडनम् ।
वृश्चिके नागदोषश्च ज्वाला देहे कुबुद्धिता ॥ ११३ ॥

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi



चापे देहे भवेद्दोषो ज्वरः शोकोदरव्यथा ।
मकरे चण्डिकादोषो देहभङ्गो ज्वरानिलः ॥ ११४ ॥
मलिनः प्रेतदोषश्च कुम्भे देहस्य पीडनम् ।
मीने च पिङ्गलादोषो ज्वरो जन्दालदर्शनम् ॥ ११५ ॥

मेष लग्न में पितृपरम्परागत दोष, क्षुधा की हानि एवं कुरूपता होती है। वृष लग्न में आकाश देवी के दोष से ज्वर, रात्रि में खराब स्वप्न और आंख में रोग होता है। मिथुन लग्न में महामाया के दोष से सामयिक ( ऋतुसम्बन्धी ) ज्वर एवं वातविकार से कष्ट होता है। कर्क लग्न में शाकिनी के दोष से पागलपन होता है जिसमें अनवसर हँसना, रोना, मूक होना इत्यादि स्वाभाविक हैं। सिंह लग्न में प्रेत का दोष, दिन में शीतज्वर एवं भोजन में अरुचि होती है। कन्या लग्न में अपने घर का दोष, अधिक क्रोध एवं आलस्य तथा अन्न में अरुचि होती है। तुल में क्षेत्रपालसम्बन्धी दोष और सन्तानों को पीड़ा होती है। वृश्चिक में नागदोष ( सर्पसम्बन्धी ), देह में सदैव ज्वाला सी उठती रहती है और बुद्धि खराब हो जाती है। धनु में शारीरिक दोष, ज्वर, शोक एवं पेट की व्यथा से पीडा होती है। मकर में चण्डिका ( भवानी ) जन्य दोष, शरीर की खिन्नता, ज्वर एवं वायुविकार होता है। कुम्भ में प्रेतसम्बन्धी दोष, शरीर मलिन तथा सदैव पीड़ित रहता है। इसी तरह मीन में पिङ्गला-सम्बन्धी दोष, ज्वर तथा एकान्त या स्वप्न में भयानक जीवों का दर्शन होता है ॥११०-११५॥

पापग्रहस्थानफलम्—

व्यये धर्मे तृतीये च षष्ठे पापग्रहो यदा ।
हतो गराज्जलाच्छस्त्रात्तस्य दोषः कुलोद्भवः ॥ ११६ ॥

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi



यदि १२।९ ३।६ इन स्थानों में पापग्रह हों तो विषपान से, जल में डूब जाने से, या संग्राम में शस्त्र के द्वारा उसकी मृत्यु हो जाती है और कुलपरम्परा का दोष कहा जाता है ॥ ११६ ॥

**शनौ जले कुजे शस्त्रात् स्थिते सूर्ये स्वबंधुजः ।**
**राहौ विक्रमतो नेष्टः शान्तिर्देवद्विजार्चनात् ॥ ११७ ॥**
**स्वक्षेत्रे गोत्रदोषश्च परक्षेत्रे परोद्भवः ।**
**शत्रुक्षेत्रे शत्रुदोषो मित्रे स्वजनसंभवः ॥ ११८ ॥**

यथा—शनि उन स्थानों ( ३।६।९।१२ ) में स्थित रहें तो जल में मृत्यु पावे, मङ्गल पड़े तो शस्त्र ( तलवार आदि ) से, सूर्य पड़े तो अपने पराक्रम के दुरुपयोग से मृत्यु जाने, परन्तु देवता ब्राह्मणों की पूजा से शान्ति हो। यदि वही ग्रह अपनी राशि में दिखाई दे तो अपने कुल का दोष, परराशि में रहे तो पर-सम्बन्धी दोष कहना चाहिए ॥ ११७-११८ ॥

( अथ दिननक्षत्रतिथिवशेन शुभाशुभयोगाः )

तत्रादौ रविवारे शुभयोगः—

**आदित्ये चाश्विनीहस्तमूलं पुष्योत्तरात्रयम् ।**
**सिद्धियोगो धनिष्ठा च तिथिरप्यष्टमी तथा ॥ ११९ ॥**

अश्विनी, हस्त, मूल, पुष्य, तीनों उत्तरा, धनिष्टा ये नक्षत्र और अष्टमी तिथि और रवि दिन पड़े तो सिद्धियोग जाने, उसमें सब काम सिद्ध होते हैं ॥ ११९ ॥

अशुभयोगः—

**सूर्ये विशाखा भरणी ज्येष्ठा मैत्रं मघा तथा ।**
**चतुर्दशी द्वादशी च विरुद्धा सप्तमी तिथिः ॥ १२० ॥**

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi



विशाखा, भरणी, ज्येष्ठा, अनुराधा, मघा ये नक्षत्र और सप्तमी, द्वादशी तथा चतुर्दशी ये तिथियां यदि रवि दिन पड़ें तो अशुभ योग होता है। इस योग में शुभकाम करने से अनिष्ट होता है ॥ १२० ॥

चन्द्रे शुभयोगः—

सोमे पुष्योऽनुराधा च श्रवणो रोहिणी मृगः।
नवमी दशमी चापि सिद्धियोगाः प्रकीर्त्तिताः ॥१२१॥

सोम दिन पुष्य, अनुराधा, श्रवण, रोहिणी, मृगशिरा इतने नक्षत्र एवं नवमी, दशमी तिथि सिद्धियोग होता है ॥ १२१ ॥

अशुभयोगः—

चन्द्रे चित्रा विशाखा च तथाऽषाढाद्वयं बुधैः।
एकादशी तथा षष्ठी वर्जनीया त्रयोदशी ॥ १२२ ॥

चित्रा, विशाखा, पूर्वाषाढ़, उत्तराषाढ़ ये चार नक्षत्र और षष्ठी, एकादशी, एवं त्रयोदशी तिथि सोम दिन में अशुभ योग कहा जाता है ॥ १२२ ॥

भौमे शुभयोगः—

भौमे मूलाश्विनी सार्पो मृगश्चोत्तरभाद्रपात्।
सिद्धाष्टमी तृतीया च सप्तमी च त्रयोदशी ॥ १२३ ॥

मूल, अश्विनी, आश्लेषा, मृगशिर, उत्तरभाद्र ये पाँचों नक्षत्र तथा तृतीया, सप्तमी, अष्टमी त्रयोदशी ये चार तिथि मङ्गलवार को सिद्धियोग है ॥ १२३ ॥

अशुभयोगः—

निन्द्या शतभिषार्द्रा च धनिष्ठा पूर्वभाद्रपात्।
मघा चोत्तरषाढा च द्वितीया दशमी कुजे ॥ १२४ ॥

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi



मङ्गल दिन शतभिषा, आर्द्रा, धनिष्ठा, पूर्वभाद्र, मघा, उत्तराषाढ़ ये छः नक्षत्र और द्वितीया, दशमी तिथि अशुभ योग होता है ॥ १२४ ॥

बुधे शुभयोगः—

बुधेऽनुराधा पुष्यश्च कृत्तिका रोहिणी मृगः ।
द्वादशी सिद्धियोगश्च द्वितीया सप्तमी तिथिः ॥१२५॥

बुधवार को अनुराधा, पुष्य, कृत्तिका, रोहिणी, मृगशिर नक्षत्र और द्वितीया, सप्तमी, द्वादशी तिथि शुभ योग होता है ॥१२५॥

अशुभयोगः—

बुधे मूलं धनिष्ठा च रेवती चाश्विनी मृगः ।
तृतीया नवमी चापि वर्ज्जिता प्रतिपत्तिथिः ॥ १२६ ॥

मूल, धनिष्ठा, रेवती, अश्विनी एवं मृगशिर ये नक्षत्र और प्रतिपत्, तृतीया, नवमी, तिथि बुधवार में निन्द्य योग कहा जाता है ॥ १२६ ॥

गुरुवारे शुभयोगः—

पञ्चमी दशमी जीवे पौर्णमासी विशेषतः ।
पौष्णाश्विन्यनुराधा च सिद्धः पुष्यः पुनर्वसुः ॥ १२७ ॥

बृहस्पति दिनमें पञ्चमी, दशमी, पूर्णिमा तिथि एवं रेवती, अश्विनी, अनुराधा, पुनर्वसु, पुष्य नक्षत्र सिद्धियोग होता है ॥१२७॥

अशुभयोगः—

जीवे शतभिषार्द्रा च कृत्तिकोत्तरफल्गुनी ।
विधिर्मृगोऽष्टमी षष्ठी चतुर्थी च विवर्जिता ॥ १२८ ॥

यदि बृहस्पति दिन शतभिषा, आर्द्रा, कृत्तिका, उत्तरफाल्गुनी, रोहिणी, मृगशिर ये नक्षत्र और चतुर्थी, षष्ठी, एवं अष्टमी तिथि

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi


पड़े तो अशुभ योग जाने ॥ १२८ ॥

शुक्रवारे शुभयोगः—

शुक्रे चित्रार्यमा पुषा श्रवणश्च पुनर्वसुः।
सिद्धा चैकादशी षष्ठी प्रतिपच्च त्रयोदशी ॥ १२६ ॥

चित्रा, उत्तरफल्गुनी, रैवती, श्रवण, पुनर्वसु नक्षत्र और प्रतिपत्, षष्ठी, एकादशी, त्रयोदशी तिथि शुक्र दिन पड़े तो सिद्धि योग होता है ॥ १२९ ॥

अशुभयोगः—

भार्गवे रोहिणी पुष्यो ज्येष्ठाऽऽश्लेषा मघा तथा।
द्वितीया सप्तमी चापि वर्ज्जनीया सदा बुधैः ॥ १३० ॥

रोहिणी, पुष्य, ज्येष्ठा, आश्लेषा, मघा नक्षत्र एवं द्वितीया, सप्तमी तिथि शुक्र दिन हो तो निन्द्य योग होता है ॥ १३० ॥

शनौ शुभयोगः—

शनौ च रोहिणी स्वाती श्रवणः पूर्वफल्गुनी।
मघा च नवमी सिद्धा चतुर्थी च त्रयोदशी ॥ १३१ ॥

यदि शनि दिन में रोहिणी, स्वाती, श्रवण, पूर्वफल्गुनी एवं मघा ये नक्षत्र और चतुर्थी, नवमी, त्रयोदशी तिथि रहे तो शुभ-योग जानना चाहिए ॥ १३१ ॥

अशुभयोगः—

शनौ हस्तोत्तराषाढे चित्रा चोत्तरफाल्गुनी।
रेवती च सदा वर्ज्या तिथिः षष्ठी च सप्तमी ॥ १३२ ॥

हस्त, उत्तराषाढ़, चित्रा, उत्तरफल्गुनी, रेवती इतने नक्षत्र और षष्ठी, सप्तमी तिथि शनिवार को अशुभ योग होता है ॥ १३२ ॥

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi



शुभीता के लिये सब दिनों का एक साथ शुभाशुभ योग चक्र—

| दिन | रवि | | सोम | | मंगल | | बुध | | बृहस्पति | | शुक्र | | शनि | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| योग | शुभ | अशुभ | शुभ | अशुभ | शुभ | अशुभ | शुभ | अशुभ | शुभ | अशुभ | शुभ | अशुभ | शुभ | अशुभ |
| | अ. | वि. | पुष्य | चि. | मू. | श. | अनु. | मू. | रे. | श. | चि. | रो. | रो. | ह. |
| | ह. | भ. | अनु. | वि. | अ. | आ. | पुष्य | ध. | अ. | आ. | उ. फ. | पुष्य | स्वा. | उ. षा. |
| नक्षत्र | मू. | ज्ये. | श्र. | पू. षा. | आ. | ध. | कृ. | रे. | अनु. | कृ. | रे. | ज्ये. | श्र. | चि. |
| | पुष्य | अनु. | रो. | उ. षा. | मृ. | पू. भा. | रो. | अ. | पुष्य | उ. फ. | श्र. | आश्ले | फ. | उ. फ. |
| | उ. ३ | म. | मृ. | ० | उ. भा. | म. | मृ. | मृ. | पुन. | रो. | पुन. | म. | म. | रे. |
| | ध. | ० | ० | ० | ० | उ. षा. | ० | ० | ० | मृ. | ० | ० | ० | ० |
| तिथि | ८ | ७ | ९ | ६ | ३ | २ | २ | १ | २ | ४ | १ | २ | ९ | ६ |
| | ० | १२ | १० | ११ | ७ | १० | ७ | ३ | १० | ६ | ६ | ७ | १३ | ७ |
| | ० | १४ | ० | १३ | ८ | ० | १२ | ९ | १५ | ८ | ११ | ० | १४ | ० |
| | ० | ० | ० | ० | १३ | ० | ० | ० | ० | ० | १३ | ० | ० | ० |

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi


चरादिसंज्ञकनक्षत्राणि—

चरं चलं स्मृतं स्वाती-पुनर्वसु-श्रुतित्रयम् ।
क्रूरमुग्रं मघा पूर्वात्रितयं भरणी तथा ॥ १३३ ॥
ध्रुवं स्थिरं विनिर्दिष्टं रोहिणी चोत्तरात्रयम् ।
तीक्ष्णदारुणमाश्लेषा ज्येष्ठाद्रा मूलमेव च ॥ १३४ ॥
लघु क्षिप्रं स्मृतं पुष्यो हस्ताश्विन्यभिजिद्बुधैः ।
मृदु मैत्रं स्मृतं चित्राऽनुराधा रेवती मृगः ॥ १३५ ॥
मिश्रं साधारणं प्रोक्तं विशाखा कृत्तिका तथा ।
नक्षत्रेष्वेषु कर्माणि नामतुल्यानि कारयेत् ॥ १३६ ॥

स्वाती, पुनर्वसु , श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा इन पांच नक्षत्रों की संज्ञा चर या चल है । मघा, पूर्वफल्गुनी, पूर्वाषाढ़, पूर्वभाद्र, भरणी ये नक्षत्र क्रूर या उग्र कहे जाते हैं । रोहिणी, तीनों उत्तरा, ये ध्रुव या स्थिर नाम के हैं । आश्लेषा, आर्द्रा, मूल ये नक्षत्र तीक्ष्ण एवं दारुण कहे जाते हैं । पुष्य, हस्त, अश्विनी, अभिजित् ये नक्षत्र लघु और क्षिप्रसंज्ञक हैं । चित्रा, अनुराधा, रेवती, मृगशिर, ये मृदु एवं मैत्र-संज्ञक कहे जाते हैं । विशाखा, कृत्तिका, ये दो नक्षत्र मिश्र एवं साधारण-संज्ञक हैं । ये नक्षत्र अपनी २ संज्ञा के अनुसार कामों की सिद्धि कराते हैं । जैसे स्थिर काम करना हो तो स्थिर संज्ञक नक्षत्र में करना चाहिए ॥१३३-१३६॥

शनिचक्रविचारः—

शनिचक्रं नराकारं लिखेद्यत्र शनिर्भवेत् ।
तन्नक्षत्रं मुखे दत्वा यावन्नाम नरस्य च ॥ १३७ ॥
तावद्विचारयेत्तत्र ज्ञेयं तस्य शुभाशुभम् ।
एकं मुखे च नक्षत्रं करे चत्वारि दक्षिणे ॥ १३८ ॥
त्रयं त्रयं पादयोश्च वामहस्ते चतुष्टयम् ।
ललाटे द्वे त्रयं नेत्रे हृदि पञ्च गुदे द्वयम् ॥ १३९ ॥

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi



एकं च दक्षिणे कुक्षौ नक्षत्राणि न्यसेत् फलम्।
हानिर्मुखे दक्षहस्ते लाभो वामे च रोगिता ॥ १४० ॥
हृदि श्रीर्मस्तके राज्यं पादे पर्य्यटनं फलम्।
नेत्रे सुखं गुदे मृत्युः कुक्षौ शोकं विचिन्तयेत् ॥१४१॥
जपहोमादिपूजाभिः कल्याणं जायते सदा।
अन्यान्यपि विचार्याणि वाहनादिवहूनि च ॥ १४२ ॥

मनुष्य की आकृति का शनिचक्र बनाकर वर्त्तमानकालिक शनि जिस नक्षत्र पर हो उस नक्षत्र को नराकार के मुख में, उसके बाद चार नक्षत्र दक्षिण हाथ में, दोनों पद में तीन तीन नक्षत्र, वाम हाथ में चार नक्षत्र, ललाट में दो नक्षत्र, नेत्र में तीन हृदय में पांच, गुदा में दो एवं दक्षिण कुक्षि में एक नक्षत्र इस प्रकार सभी नक्षत्रों का न्यास कर देखे कि इष्ट नक्षत्र ( जिसके लिए विचार किया जाय उसका नाम-नक्षत्र ) लिखित नराकार के किस अंग में पड़ा है, तदनुसार फल जाने। यथा—मुख में पड़े तो हानि हो, दक्षिण हाथ में पड़े तो लाभ हो, वाम हाथ में पड़े तो रोग हो, हृदय में पड़े तो लक्ष्मी की प्राप्ति हो, शिर पर पड़े तो राज्य मिले, पांव पर पड़े तो जहां-तहां भ्रमण करना पड़े, नेत्र में पड़े तो सुख मिले, गुदा में पड़े तो मृत्यु हो एवं कुक्षि में पड़े तो शोक का अवसर प्राप्त हो। अनिष्टनिवारण के लिए जप, होम, पूजा आदि करावे तो कल्याण हो ॥ १३७-१४२ ॥

देशवशेन शनिराशिफलम्—

मेषे शनौ गुर्जरेषु प्रभासे चार्बुदे वृषे।
मिथुने जायते पीडा स्थले मूलस्थलीषु च ॥ १४३ ॥
कर्के काश्मीरके बाधा शक्रप्रस्थे मृगाधिपे।
शनैश्चरे च कन्यायां मालवाख्ये च सङ्क्षयम् ॥ १४४ ॥
तुलावृश्चिकचापेषु यदि याति शनैश्चरः।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi



**न वर्षन्ति तदा मेघाः पृथ्वी दुर्भिक्षपीडिता ॥ १४५ ॥**
**सुभिक्षं मकरे कुम्भे जायते बहुधा शनौ ।**
**मीने च सर्वलोकानां दुर्भिक्षाच्च क्षयो भवेत् ॥ १४६ ॥**

यदि शनि मेष राशि पर आवे तो गुर्जर (गुजरात) प्रान्त में, प्रभासतीर्थ (विरावल, सोमनाथ मन्दिर के पास) में जनता को पीड़ा हो। वृष में आने से अर्बुद (अरेविया) देश में, मिथुन राशि में आने से मरुस्थल में पीड़ा होती है। इसी तरह कर्क में रहने से काश्मीर में बाधा हो, सिंह पर रहे तो शक्रप्रस्थ (देहली प्रान्त) में अनिष्ट होता है। यदि कन्या राशि पर शनैश्चर जाय तो मालवा में जनक्षति हो। यदि तुला, वृश्चिक, धनु राशि पर शनि आवे तो वर्षा न हो और दुर्भिक्ष के कारण सारी पृथ्वी पीड़ित हो जाती है। परन्तु यदि शनैश्चर मकर, कुम्भ में रहे तो सुभिक्ष हो। तथा मीन में रहने से दुर्भिक्ष एवं अधिक जनक्षय होता है ॥ १४३–१४६ ॥

मासवशेन पञ्चावृत्तिवारफलम्—

**यत्र मासे रवेर्वारा जायन्ते पञ्च सन्ततम् ।**
**दुर्भिक्षं छत्रभङ्गश्च तदास्ते च महद्भयम् ॥ १४७ ॥**

जिस मास में रविवार पांच वार पड़े उसमें दुर्भिक्ष, छत्रभंग एवं प्रजाओं में महाभयकारक अवसर उपस्थित हो (इन योगों का फल उस महीने के आगे–पीछे भी होता है) ॥ १४७ ॥

**सोमस्य पञ्च वाराश्च यत्र मासे भवन्ति हि ।**
**धनधान्यसमृद्धिश्च सुखी भवति मेदिनी ॥ १४८ ॥**

यदि किसी महीने में सोमवार पांच वार पड़े तो प्रजा धन-धान्य से परिपूरित रहे और समस्त पृथ्वी सुखित रहती है ॥ १४८ ॥

**यत्र मासे महीसूनोर्जायन्ते पञ्च वासराः ।**
**रक्तेन पूरिता पृथ्वी छत्रभङ्गस्तदा भवेत् ॥ १४९ ॥**



Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi



यदि एक महीने के भीतर पांच वार मंगल दिन आवे तो सारी पृथ्वी पर लड़ाई छिड़े, अधिक हत्यायें हों, और छत्रभङ्ग भी हो जाय ॥ १४९ ॥

बुधस्य पञ्च वाराश्च जायन्ते च निरन्तरम् ।
प्रजाश्च सुखसम्पन्नाः सुभिक्षश्च प्रजायते ॥ १५० ॥

एक महीने में बुधवार की पांच आवृत्ति आने से सारी प्रजा सुखित रहे एवं सुभिक्ष हो ॥ १५० ॥

यत्र मासे पञ्च वारा जायन्ते च बृहस्पतेः ।
विग्रहः पश्चिमे देशे पीडायुद्धं च जायते ॥ १५१ ॥

जिस महीने में बृहस्पति दिन पांच वार आवे उसमें पश्चिमीय देशों ( भारत से पश्चिम ) में झगड़ा–लड़ाई हो, जिस से प्रजा में पीड़ा हो ॥ १५१ ॥

मासे यस्मिन् शुक्रवाराः पञ्चसंख्या भवन्ति हि ।
प्रजावृद्धिः सुभिक्षं च सुखं तत्र प्रवर्त्तते ॥ १५२ ॥

जिस महीने में पांच वार शुक्र दिन आवे उसमें प्रजा की वृद्धि, सुभिक्ष एवं सब सुखी रहते हैं ॥ १५२ ॥

शनिवारा यदा पञ्च पाताले कम्पते फणी ।
ईशानदेशभङ्गश्च वह्निदाहो महर्घता ॥ १५३ ॥

यदि शनिवार एक मास में पांच वार आवे तो जानना कि शेष नाग के कम्पन से भूकम्प हो, ईशान कोण के देशों ( चीन, मङ्गोलिया, भूटान आदि ) में उपद्रव हो, अग्नि के प्रकोप से क्षति हो और सभी चीजों की महंगी हो ॥ १५३ ॥

अभिजिन्मुहूर्त्तकथनम्—

शङ्कुर्विंशाङ्गुलः सूर्ये सोमे च षोडशाङ्गुलः ।
कुजे तिथ्यङ्गुलः प्रोक्तो बुधे चेन्द्राङ्गुलस्तथा ॥ १५४ ॥
त्रयोदशाङ्गुलो जीवेऽर्काङ्गुलः शनिशुक्रयोः ।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi



शङ्कुमूले यदा छाया मध्याह्ने च प्रजायते ॥ १५५ ॥
तदा चाभिजिदाख्याता घटिकैका सदा बुधैः।
अत्र कार्याणि सर्वाणि सिद्धिं यांति कृतानि च ॥१५६॥
जातोऽभिजिति राजा स्याद् व्यापारे सिद्धिरुत्तमा।
महाक्रूरवियोगेन सर्वमङ्गलदायिनी ॥ १५७ ॥

अन्य शुभ योगों के अभाव में सर्वसिद्धिदायक मुहूर्त्त ( अभिजित् ) का निरूपण करते हैं। रविदिन २० अङ्गुल का, सोमदिन १६ अङ्गुल का, मङ्गल को १५ अङ्गुल का, बुध को १४ अङ्गुल का, गुरुवार में १३ अङ्गुल का, एवं शुक्र—शनि को १२ अङ्गुल का शंकु लेकर मध्याह्न काल में समतल भूमि पर ठीक लम्बरूप खड़ा करे ताकि उसके छायाग्र सर्वथा शंकुमूल ही में पड़े, उसी समय की एक घटी ( ३० पल आगे, ३० पल पहिले ) का नाम अभिजित् मुहूर्त्त है उसमें किये हुये सब काम सिद्ध होते हैं, उसमें का उत्पन्न जातक राजा होता है। व्यापार में पूरा लाभ होता है। इस मुहूर्त्त में कोई काम आरम्भ किया जाय तो अन्य दुर्योगों का प्रभाव नहीं रहता है ॥ १५४–१५७ ॥

मासवशेन शुक्रोदयफलम्—

अर्थवृद्धिः फाल्गुने स्याच्चैत्रे च धनसम्पदः।
वैशाखे विग्रहो राज्ञां ज्येष्ठे वृष्टिश्च भूयसी ॥ १५८ ॥
आषाढे चोदिते शुक्रे फलं भवति दुर्लभम्।
श्रावणे तु पशोः पीडा भाद्रे धान्यसमृद्धयः ॥ १५९ ॥
आश्विने सर्वसम्पत्तिः शुभं कार्त्तिकमार्गयोः।
पौषे माघे छत्रभंगो यद्युदेति भृगोः सुतः ॥ १६० ॥

यदि फाल्गुन में शुक्रोदय हो तो अर्थ की वृद्धि हो, चैत्र में उदय हो तो धनसम्पत्ति मिले, वैशाख में शुक्रोदय होने से राजाओं में युद्ध छिड़े, ज्येष्ठ में उदय हो तो बहुत वृष्टि हो। इसी

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi



तरह आषाढ़ में शुक्र के उदित होने पर आम, अमरूद, सन्तरा आदि फलों का नाश हो जाय, श्रावण में पशुओं को पीड़ा हो एवं भाद्र में शुक्रोदय होने से धनधान्य पूरा हो, आश्विन में सर्व सम्पत्ति मिले, कार्त्तिक-अगहन में उदय होने से शुभ हो। परन्तु यदि पौष-माघ में शुक्र का उदय हो तो छत्रभङ्ग जाने ॥१५८-६०॥

होलिकाधूमदिक्फलम्—

**पूर्वे वायौ होलिकायाः प्रजाभूपालयोः सुखम् ।**
**पलायनं च दुर्भिक्षं दक्षिणे जायते ध्रुवम् ॥ १६१ ॥**
**पश्चिमे तृणसंपत्तिरुत्तरे धान्यसम्भवः ।**
**यदि खे च शिखावृद्धी राजदुर्गस्य संक्षयः ॥ १६२ ॥**

होलिकादाह के समय वायु की परीक्षा-यदि होलिका के पूर्व वायु बहे तो राजा-प्रजा दोनों को सुख प्राप्त हो, दक्षिण तरफ वायु चलने से बड़ा दुर्भिक्ष पड़े जिसमें जनता देशान्तर चली जाय, पश्चिम में चले तो फसल कम हो किन्तु उसमें तृण वगैरह अधिक हो जाय। उत्तर तरफ चले तो धान्यकी उत्पत्ति काफी हो। परन्तु यदि अग्निशिखा चारों दिशा छोड़ कर ऊपर सीधे आकाश में जाती हुई मालुम पड़े तो जानना कि इस वर्ष राजा—परिवर्त्तन होगा, या राजकिला नष्ट होगा ॥ १६१ १६२ ॥

वृष्टिलक्षणकथनम्—

**एकादश्यां कार्तिकस्य यदि मेघः समीदयते ।**
**आषाढे च तथा वृष्टिर्जायते नात्र संशयः ॥ १६३ ॥**

यदि कार्त्तिक मास की एकादशी तिथि में मेघ दिखाई दे तो समझना कि आगामी आषाढ़ महीने में अवश्य काफी वृष्टि होगी, इसमें संशय नहीं है ॥ १६३ ॥

**मार्गशीर्षस्य चाष्टम्यां दृश्यन्ते विद्युतो यदा ।**
**तदा वृष्टिः श्रावणे च मासि सञ्जायते ध्रुवम् ॥१६४॥**

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi



अगहन महीना की अष्टमी तिथि में यदि बिजली की चमक हो तो जानना कि श्रावण महीने में पर्याप्त वृष्टि होगी ॥ १६४ ॥

**कृष्णपक्षदशम्यां च वृष्टिः पौषे च जायते ।**
**तदा भाद्रपदे मासे वृष्टिर्भवति भूयसी ॥ १६५ ॥**

यदि पौष महीने के कृष्णपक्ष की दशमी में थोड़ी भी वृष्टि हो तो अग्रिम भाद्र महीने में अवश्य अधिक वृष्टि होगी यह जाने ॥१६५॥

**वृष्टिश्चेन्माघसप्तम्यां ज्येष्ठे मूलं च वर्षति ।**
**नक्षत्रे वारिवाहश्च तदान्नैः पूर्यते मही ॥ १६६ ॥**

माघ महीने की सप्तमी तिथि में एवं ज्येष्ठ महीना के मूल नक्षत्र ( दैनिक ) में यदि थोड़ी भी वर्षा हो तो जानना कि सालभर अवसर पर पानी गिरेगा और फलतः सारी पृथ्वी अन्न-जल से परिपूरित होगी ॥ १६६ ॥

**पञ्चम्यां प्रथमे पक्षे श्रावणे च प्रवर्षति ।**
**पयोवाहस्तदा धान्यैर्धरा व्याप्ता जलैरपि ॥ १६७ ॥**

यदि श्रावण मास के कृष्णपक्ष की पञ्चमी तिथि में वृष्टि हो तो उस साल पर्याप्त वृष्टि होने का योग जाने और समस्त पृथ्वी पर उपज हो, लोक सुखी रहे ॥ १६७ ॥

आषाढ्यां नक्षत्रवशेन फलम्—

**आषाढे पूर्णिमायां यन्नक्षत्रं तद्विचारतः ।**
**पूर्वाषाढे सुभिक्षं च मूले दुर्भिक्षमुच्यते ॥**
**उत्तराषाढकेऽश्वानां पीडा कटकसंगतिम् ॥ १६८ ॥**

आषाढ़ी पूर्णिमा के दैनिक नक्षत्र का विचार—यदि पूर्वाषाढ़ नक्षत्र पूर्णिमा में पड़े तो सुभिक्ष हो याने उपज काफी हो और प्रजा सुखी रहे। मूल में हो तो दुर्भिक्ष याने उपज न हो, इसी तरह उत्तराषाढ़ नक्षत्र में पूर्णिमा होने से घोड़ों को अधिक बिमारी से तकलीफ हो ॥ १६८ ॥

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi



दिनवशेन ज्येष्ठकृष्णप्रतिपत्फलम्—

ज्येष्ठस्य प्रथमे पक्षे प्रतिपच्च यदा भवेत् ।
रवेर्वारे तदा वायुर्वाति वृक्षान्तकारकः ॥ १६९ ॥
अत्यन्तविग्रहो भौमे बुधे दुर्भिक्षमुच्यते ।
अनावृष्टिः शनेर्वारे जलं क्वापि न लभ्यते ॥ १७० ॥
सोमशुक्रसुरेज्यानां यदि वारः प्रजायते ।
धनधान्यसुतोत्पत्तिर्गेहे गेहे महोत्सवः ॥ १७१ ॥

ज्येष्ठ महीने के कृष्ण पक्ष की प्रतिपत् तिथि यदि रवि दिन में पड़े तो जानना कि वायु बहुत जोरों के साथ चले, कतिपय वृक्ष वायुवेग से गिर जायं । मंगल में पड़े तो राजाओं में झगड़ा—लड़ाई हो, बुध में पड़े तो दुर्भिक्ष हो, शनि में पड़े तो वृष्टि सर्वथा बन्द हो जाय, कहीं पर जल न दिखाई दे । यदि सोम, शुक्र, बृहस्पति दिन प्रतिपत् पड़े तो धनधान्य एवं पुत्रों की उत्पत्ति से लोक सन्तुष्ट हों और घर २ उत्सव मनाया जाय ॥ १६९—७१ ॥

वारवशेन पौषसंक्रान्तिफलम्—

पौषमासस्य संक्रान्तौ रविवारो यदा भवेत् ॥ १७२ ॥
धान्यानां त्रिगुणं मूल्यं भौमवारे चतुर्गुणम् ।
त्रिगुणं शनिवारे च बुधे शुक्रे समं भवेत् ॥ १७३ ॥
सुराचार्ये च सोमे च मौल्यमर्धं सुनिश्चितम् ।
क्रूरो हि लाभकृद्धान्ये सौम्यो हानिप्रदो भवेत् ॥१७४॥

यदि रवि दिन पौष महीने की सूर्यसंक्रान्ति हो तो धान्य का मूल्य त्रिगुणित समझे अर्थात् उपज की कमी के कारण सब पूरा महंगा हो जाय, यदि वही संक्रान्ति मंगल दिन पड़े तो चतुर्गुणित याने और मंहगा समझे, शनि वार में भी त्रिगुणित समझना चाहिए । परन्तु बुध—शुक्र दिन संक्रान्ति होने से धान का भाव सम एवं बृहस्पति—सोम दिन होने से अन्न सस्ता होता है । साधारणतः

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi



शुभ दिन में संक्रान्ति होने से शुभ और पाप दिन में अशुभ जानना चाहिए ॥ १७२-७४ ॥

वारवशेन मीनसंक्रान्तिफलम्—

मीनसंक्रमणे सूर्यं वारे वाति समीरणः ।
भौमे पीडा पशूनां च दुर्भिक्षं च शनैश्चरे ॥ १७५ ॥
वृक्षपातः प्रजापीडा मिथ्या सञ्चरते मही ।
हिंसाकामातुरा लोका यदि वृष्टिश्च तद्दिने ॥ १७६ ॥
संक्रान्तौ यदि मीनस्य बुधवारः प्रजायते ।
छत्रभंगो महामारी रोदनं भयचिन्तया ॥ १७७ ॥
संक्रान्तौ सोमवारश्चेत्प्रजानां परमं सुखम् ।
भानुभौमार्किवारेषु पापयुद्धं महर्घता ॥ १७८ ॥

यदि मीन की संक्रान्ति रविदिन हो जाय तो वायु अधिक चले, मंगलदिन हो तो चौपायों को पीड़ा हो, शनिदिन पड़े तो दुर्भिक्ष हो। यदि उस दिन वृष्टि भी हो जाय तो निश्चयेन वृक्षों का गिरना, प्रजाओं में पीड़ा, पृथ्वी भर मिथ्या—प्रचार, एवं प्रजा हिंसात्मक तथा कामात्मक व्यवहारों में आतुर हो। इसी तरह मीन संक्रान्ति को बुध दिन होने से छत्रभंग, महामारी (कॉलरा), एवं भय की चिन्ता से हाहाकार हो जाय, यदि वही संक्रान्ति सोम दिन पड़े तो प्रजाओं को परम सुख मिले। किन्तु रवि-मंगल-शनि दिन संक्रान्ति हो तो अन्यायपूर्ण लड़ाई (राजाओं में), तथा अन्नों की महंगी हो ॥ १७५-७८ ॥

संक्रान्तिवशेन जन्मनक्षत्रफलम्—

संक्रान्त्यधरनक्षत्रादात्मभावधि गण्यते ।
त्रिकं षट्कं त्रिकं षट्कं त्रिकं षट्कं पुनःपुनः ॥ १७९ ॥
पन्था भोगो व्यथा वस्त्रं हानिश्च विपुलं धनम् ।
षट्के भागे फलं श्रेष्ठं त्रिकेऽनिष्टं सुधीर्वदेत् ॥ १८० ॥

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi



प्रति संक्रान्ति के अनुसार जन्मनक्षत्र का फल कहते हैं—सूर्य की संक्रान्ति जिस नक्षत्र ( दैनिक ) में हो उसके पूर्वनक्षत्र से आरंभ कर अपने जन्मनक्षत्र तक गिनने से जो संख्या आवे वह यदि त्रिक भाग में पड़े तो अनिष्ट और षट्क भागमें पड़े तो शुभ जाने। जैसे कि—पहले तीन नक्षत्र के भीतर में पड़े तो मार्ग चलना पड़े, उसके वाद ६ नक्षत्र में पड़ने से भोग हो, उसके वाद ३ नक्षत्र में व्यथा हो, उसके वाद के ६ नक्षत्र में वस्त्र का लाभ हो, फिर उसके वाद के ३ नक्षत्र में हानि हो उसके वाद के ६ नक्षत्र में पर्याप्त धन मिले ( इसमें अभिजित् की गणना नहीं है ) ॥ १७९–८० ॥

वृष्टिज्ञानाय रोहिणीचक्रम्—

राशिचक्रं लिखित्वादौ मेषसंक्रान्तिभादिकम् ।
अष्टाविंशतिकं तत्र लिखेन्नक्षत्रमण्डलम् ॥ १८१ ॥
सिन्धौ द्वयं द्वयं दद्यादन्यत्रैकैकमेव च ।
चत्वारः सागरास्तत्र सन्धयश्चाष्टसंमिताः ॥ १८२ ॥
शृङ्गाणि तत्र चत्वारि तटान्यष्टौ स्मृतानि च ।
रोहिणी पतिता यत्र ज्ञेयं तस्य शुभाशुभम् ॥ १८३ ॥
समुद्रे तु महावृष्टिस्तटे वृष्टिश्च शोभना ।
पर्वते बिन्दुमात्रा च खण्डवृष्टिश्च सन्धिषु ॥ १८४ ॥

पहले राशिचक्र का न्यास कर उसके चारों तरफ सिन्धु, चारों कोण में पर्वत और पर्वत-समुद्रके बीच में सन्धि एवं तट इस प्रकार अङ्कित करने पर चार समुद्र, आठ सन्धि, एवं आठ तट हो जायंगे, इसीको रोहिणीचक्र कहते हैं। इसमें नक्षत्रों का न्यास मेष संक्रान्ति के दिन जो नक्षत्र रहे उससे आरम्भ कर, दो २ नक्षत्र समुद्र में रखें और सन्धि, तट, पर्वत इन में केवल एक २ नक्षत्र रखे, तव देखे कि रोहिणी नक्षत्र कहां पड़ा है, यदि समुद्र

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi



में पड़े तो अति वृष्टि जाने, तट में पड़े तो भी अच्छी वृष्टि हो, यदि पर्वत में पड़े तो विन्दुमात्र याने बहुत थोड़ी वृष्टि हो, परन्तु सन्धि में पड़ने से खण्ड वृष्टि जाने ॥ १८१-८४ ॥

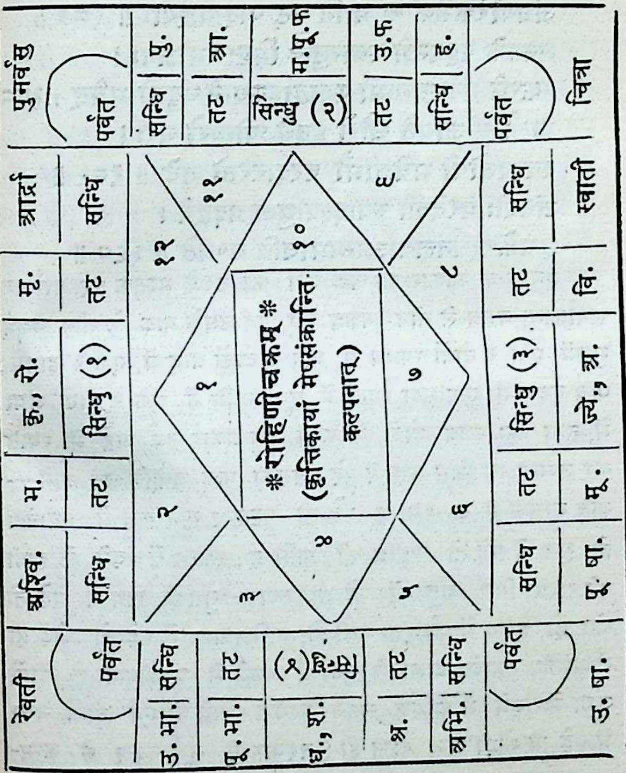


नरचक्रम्—

**नराकारं लिखेच्चक्रं सूर्यो यत्र व्यवस्थितः।**
**तन्नक्षत्रादिकं कृत्वा त्रयं दद्याच्च मस्तके ॥ १८५ ॥**

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi



मुखे त्रयं स्कन्धयोश्च दद्यादेकैकमेव च ।
बाहुद्वये तथैकैकं पाण्योरेकैकमेव च ॥ १८६ ॥
हृदि पञ्च गुदे चैकं नाभौ चैकं प्रदापयेत् ।
जंघयोरेकमेकं च भानि षट् पादयोर्द्वयोः ॥ १८७ ॥
मस्तके पट्टबन्धी स्यान्मुखे मिष्टान्नभोजनः ।
स्कन्धे गजेन्द्रगामी स्याद्बाहुस्थाने च्युतो भवेत् ॥१८८॥
पाणौ च जायते चौरो हृदयेऽपीश्वरो नरः ।
स्वल्पतोषी भवेन्नाभौ परदाररतो गुदे ॥ १८९ ॥
जंघयोः परदेशी स्यादल्पायुश्च पदद्वये ।
नृचक्रे सूर्यनक्षत्राज्जन्मभावधि गण्यते ॥ १९० ॥

मनुष्य के आकार का चक्र बना कर उसके मस्तक पर वर्त्तमान सूर्याक्रान्त नक्षत्र से तीन नक्षत्र रखे, एव उसके बाद के तीन नक्षत्र मुखमें, एक २ दोनों स्कन्ध में, एक २ दोनों बांह में, एक २ हाथमें, पांच हृदय में, एक गुदा स्थान में, एक नाभि में, एक २ दोनों जंघा में, तथा छः नक्षत्र दोनों चरण में, इस प्रकार सव अङ्गों में न्यास कर जन्मनक्षत्र जिस अङ्ग में पड़े उसका फल अधोलिखित जाने—यदि मस्तक में जन्म नक्षत्र पड़े तो पट्टबन्ध याने कुल में प्रधानता हो, मुख में पड़े तो मिष्टान्न की प्राप्ति हो, स्कन्ध में पड़ने से हाथी की सवारी मिले, वाहु में पड़े तो स्थान–च्युत हो, हाथ में पड़े तो चोर हो, हृदय में पड़े तो धनी हो, नाभिस्थान में पड़े तो थोड़े ही में सन्तोष करने वाला हो, गुदा में पड़ने से परस्त्रीगामी हो, दोनों जंघा में पड़ने से अधिक समय परदेश–वासी हो एवं दोनों चरण में पड़े तो थोड़ी आयु वाला हो ( नरचक्र में सूर्य नक्षत्र से जन्म-नक्षत्र तक गणना कर यह फल जाने ) ॥ १८५–९० ॥

प्रामप्रवासविचारः—

ग्रामर्क्षान्नामनक्षत्रं विगणय्य निवेशयेत् ।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi



शीर्षे हृदि तथा पृष्ठे पादे च सप्त तारकाः ॥ १६१ ॥
फलं शीर्षे धनं मानः पृष्ठे हानिश्च निर्धनः।
हृदये सुखसम्पत्तिः पादे पर्यटनं स्मृतम् ॥ १६२ ॥

ग्रामनक्षत्र से नाम-नक्षत्र तक गणना कर मनुष्य के आकार के अङ्गों में न्यास करे, अर्थात् ग्रामनक्षत्र से सात नक्षत्र नराकार के मस्तक पर, सात नक्षत्र पृष्ठ पर, सात नक्षत्र हृदय पर, तथा सात नक्षत्र दोनों चरण पर रख कर अधोलिखित फल जाने— यदि जन्मनक्षत्र मस्तक पर पड़े तो उस गांव में वसने से धनी एवं मान्य हों, पृष्ट में पड़े तो हानि और दारिद्रय हो, हृदय में पड़े तो सुख-सम्पत्ति मिले, इसी तरह यदि चरण में पड़े तो अधिक समय नौकरो या वेकारी से वाहर भ्रमण करना पड़े सो जानना चाहिए ॥ १६१-६२ ॥

मूलवृक्षविचारः—

मूलेऽष्टौ मूलवृक्षस्य घटिकाः परिकीर्तिताः।
स्तम्भेषु षट् च घटिकास्त्वचि चैकादश स्मृताः॥१६३॥
शाखायां च नव प्रोक्ताः पत्रे प्रोक्ताश्चतुर्दश।
पुष्पे पञ्च फले वेदाः शिखायां च त्रयं स्मृतम् ॥१६४॥
मूले नाशो हि मूलस्य स्तम्भे हानिर्धनक्षयः।
त्वचि भ्रातुर्विनाशश्च शाखायां मातृपीडनम् ॥ १६५ ॥
परिवारक्षयं पत्रे पुष्पे मन्त्री च भूपतेः।
फले राज्यं शिखायां चेदल्पजीवी च बालकः ॥१६६॥

वृक्ष के आकार में मूल नक्षत्र का रूप लिख कर उसके मूल (जड़) में ८ घटी, स्तम्भ में ६ घटी, त्वचा में ११ घटी, शाखा में ९ घटी, पत्र में १४ घटी, पुष्प में ५ घटी, फल में ४ घटी, एवं शिखा (अग्र) में तीन घटी का विन्यास कर मूल नक्षत्र की जिस घटी पर जन्म हुआ हो वह इस वृक्षके जिस अवयव में पड़े उसका

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi



फल अधोलिखित जाने–जन्मकालिक मूलनक्षत्र की घटी यदि जड़ में पड़े तो मूल का नाश हो, स्तम्भ में पडे तो हानि और धन का क्षय हो, इसी तरह त्वचा में भाई का नाश, शाखा में माता को पीड़ा, पत्र में परिवार का क्षय, पुष्प में राजमन्त्री, फलमें राज्य लाभ, तथा शिखा में पड़ने से अल्पायु हो। ( यह विभाग मूल नक्षत्र का भोग ६० घटी मानकर किया है, कम ज्यादः होनेपर अनुपात से ठीक २ अङ्गविभाग करना चाहिए ॥ १९३–९६ ॥

मूलवृक्ष—

| फलम् | घट्यः | अवयवः |
|---|---|---|
| अल्पायुः | ३ | शिखा |
| राज्यम् | ४ | फलम् |
| राजमन्त्रित्वम् | ५ | पुष्पम् |
| परिवारनाशः | १४ | पत्रम् |
| मातृपीडा | ९ | शाखा |
| भ्रातृनाशः | ११ | त्वक् |
| धनक्षयः | ६ | स्तम्भः |
| मूलनाशः | ८ | मूलम् |

शुक्रान्धकालः—

रेवत्यादिमृगान्ते च यावत्तिष्ठति चन्द्रमाः।
तावच्छुक्रो भवेदन्धः सम्मुखे दक्षिणे शुभः ॥ १९७ ॥

रेवती के आरम्भ से मृगशिरा के अन्ततक चन्द्रमा के रहने

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi



से शुक्र अन्धे रहते हैं, इस अवस्था में सम्मुख-दक्षिण शुक्र रहने पर भी यात्रा आदि करना शुभ होता है (बहुधा यह विचार आवश्यक के लिए है) ॥ १९७ ॥

गुरुशुक्रयोर्बाल्यं वार्द्धक्यञ्च—

**प्राक्पश्चादुदितः शुक्रः पञ्चसप्तदिनं शिशुः ।**
**विपरीतं तु वृद्धत्वे तद्वदेव गुरोरपि ॥ १९८ ॥**

शुक्र और बृहस्पति पूर्वोदित होने से पांच दिनतक, पश्चिमोदित होने से सात दिन तक बाल रहते हैं, और पूर्वास्त होने के पहले सात दिन, और पश्चिमास्त होने के पूर्व पांच दिन वृद्ध रहते हैं ॥ १९८ ॥

चन्द्रशुद्धिः—

**तृतीयो दशमः षष्ठः प्रथमः सप्तमः शशी ।**
**एकादशो द्वितीयस्तु पञ्चमो नवमः शुभः ॥ १९९ ॥**

यात्रा आदि के लिए अपनी जन्मराशि से तीसरे, दशवे, छठे, पहले, सातवें, दूसरे, पांचवे, नौवें, एवं ग्यारहवें चन्द्रमा शुभ होते हैं (शुक्ल पक्ष में विशेषकर चन्द्रमा शुभप्रद माना गया है) ॥ १९९ ॥

ताराशुद्धिः—

**ताराः शुभप्रदाः सर्वाः पञ्चसप्तत्रिवर्जिताः ।**
**शुक्ले चेत् सबलश्चन्द्रस्तारा नेष्टापि शोभना ॥२००॥**

तीसरी, पांचवी, सातवी को छोड़कर शेष छः तारायें शुभ होती हैं । यदि शुक्ल पक्ष हो और चन्द्रमा सबल हो तो अनिष्ट भी तारा शुभ मानी जाती है (परन्तु कृष्णपक्ष की ३, ५, ७, तारायें महा अनिष्ट कारिणी होती हैं यह अर्थतः सिद्ध है) ॥२००॥

**शुक्लपक्षे बली चन्द्रः कृष्णे तारा प्रकीर्त्तिता ।**
**अतः कृष्णेऽनिष्टतारा वर्जनीया प्रयत्नतः ॥२०१॥**

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi



शुक्लपक्ष में चन्द्रमा और कृष्णपक्ष में तारा प्रवल होती है, अतः कृष्णपक्ष की अनिष्ट तारा का परित्याग अवश्य करना चाहिए ॥ २०१ ॥

तारविचारः—

जन्मभाद् गणयेद्धीमान् क्रमाच्च दिनभावधि ।
नवभिस्तु हरेद्भागं शेषं तारा विनिर्दिशेत् ॥ २०२ ॥
जन्म सम्पद्विपत् क्षेमं प्रत्यरिः साधको वधः ।
मैत्रातिमैत्रे ताराः स्युस्त्रिरावृत्त्या नवैव हि ॥ २०३ ॥

जन्म-नक्षत्र से इष्टदिन के नक्षत्र तक गिनने से जो संख्या हो उसमें ९ से भाग देने पर जो शेष रहे उसके अनुसार जन्म १, सम्पत् २, विपत् ३, क्षेम ४, प्रत्यरि ५, साधक ६, वध ७, मैत्र ८, और अतिमैत्र ९, तारायें जानें ( कुल २७ नक्षत्र हैं, अतः तीन आवृत्ति में ९ तारायें होंगी ) उदाहरण यथा—यात्रा-दिन का नक्षत्र पुष्य है और जन्मनक्षत्र कृत्तिका है, अतः कृत्तिका से इष्ट नक्षत्र तक ६ हुवा, ( इसमें ९ से भाग देने पर भी वही शेष रहेगा ) अतः साधक नामकी तारा शुभ है ) ॥ २०२-२०३ ॥

गोचरवशेन ग्रहाणां शुभाशुभनिर्णयः—

त्रिषष्ठे दशमे भौमो राहुः केतुः शनिः शुभः ।
षष्ठेऽष्टमे द्वितीये वा चतुर्थे दशमे बुधः ॥ २०४ ॥
द्वितीये पञ्चमे जीवः सप्तमे नवमे शुभः ।
विहाय शुक्रो दशमं षष्ठं च सप्तमं शुभः ॥ २०५ ॥
एकादशे ग्रहाः सर्वे सर्वकार्येषु शोभनाः ।
ग्रहगोचरजं ज्ञेयं फलं विज्ञैः शुभाशुभम् ॥ २०६ ॥

मङ्गल, राहु, केतु और शनि तीसरे, छठे, आठवें, दूसरे या चौथे रहे तो शुभ होते हैं । शुक्र ६, ७, १० को छोड़कर शेष-स्थानों ( १, २, ३, ४, ५, ८, ६, ११, १२ ) में रहे तो शुभ

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi



कहा जाता है । ग्यारहवें में रहनेसे सभी ग्रह सब कामों के लिए शुभ माने जाते हैं ॥ २०४-६ ॥

दशम्यवधि कृष्णे तु पक्षे पूर्णो हि चन्द्रमाः ।
ततः परं क्षीणचन्द्रः शुभकार्ये विवर्जितः ॥ २०७ ॥

कृष्णपक्ष की दशमी तिथि तक चन्द्रमा पूर्णबली रहते हैं, उसके बाद क्षीणबल कहे जाते हैं जोकि शुभ कामों के लिए त्याज्य हैं ॥ २०७ ॥

क्षौरमुहूर्त्तः—

पुनर्वसुद्वयं क्षौरे श्रुतियुग्मं करत्रयम् ।
रेवतीद्वितयं ज्येष्ठा मृगशीर्षं च गृह्यते ॥ २०८ ॥
क्षौरे प्राणहरास्त्याज्या मघा मैत्रं च रोहिणी ।
उत्तरा कृत्तिका वारा भानुभौमशनैश्चराः ॥ २०९ ॥
रिक्ता षष्ठ्यष्टमी ज्ञेया क्षौरे चन्द्रक्षया निशा ।
सन्ध्या विष्टिश्च गण्डान्तं भोजनान्तं च गोगृहम् ॥२१०॥

पुनर्वसु से दो ( पुनर्वसु, पुष्य ), श्रवण से तीन ( श्र० ध० श० ), हस्त से तीन ( ह० चि० स्वा० ), रेवती, अश्विनी, ज्येष्ठा, मृगशिर ये नक्षत्र क्षौरकर्म में श्रेष्ठ हैं । मघा, अनुराधा, रोहिणी, तीनों उत्तरा और कृत्तिका ये नक्षत्र, रवि, मङ्गल, शनि ये दिन, रिक्ता ( ४, ९, १४ ), षष्ठी और अष्टमी अमावास्या ये तिथियां, एवं रात्रि या सन्ध्या समय, भद्रा, गण्डान्त, भोजन के बाद और गोशाला ये सब बाल बनाने में निश्चयेन त्याज्य हैं ॥ २०८-१० ॥

राजाभिषेकः—

रेवतीयुगले पुष्ये रोहिण्यां मृगमैत्रयोः ।
श्रवणोत्तरसक्रेषु राज्ञां स्यादभिषेचनम् ॥ २११ ॥

रेवती से दो ( रे० अ० ), पुष्य, रोहिणी, मृगशिर, अनुराधा, श्रवण, उत्तरफल्गुनी, उत्तराषाढ़, उत्तरभाद्र और ज्येष्ठा

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi



इन नक्षत्रों में राजाभिषेक ( राजगद्दी ) शुभ होता है ॥ २११ ॥

तिर्यङ्मुखनक्षत्राणि, तत्कृत्यं च—

**रेवतीयुगलं ज्येष्ठा मैत्रं हस्तत्रयं मृगः ।**
**पुनर्वसुश्च विज्ञेयो गणस्तिर्य्यङ्मुखो बुधैः ॥ २१२ ॥**
**वृक्षारोपणवाणिज्ये वाहनं यन्त्रनिर्मितिः ।**
**राजमार्गादिनिर्माणं गमनं च शुभं भवेत् ॥ २१३ ॥**

रेवती, अश्विनी, ज्येष्ठा, अनुराधा, हस्त से तीन ( ह० चि० स्वा० ) और पुनर्वसु इतने नक्षत्र तिर्यङ्मुख कहे गए हैं, इन में वृक्ष लगाना, सवारी करना, यन्त्रों की रचना करना, राजमार्ग ( सड़क ) वनाना एवं यात्रा करना ये काम सब सिद्ध होते हैं ॥ २१२–२१३ ॥

अधोमुखनक्षत्राणि, तत्कृत्यं च—

**पूर्वात्रयं मघाश्लेषा विशाखा कृत्तिका यमः ।**
**मूलं चाधोमुखो ज्ञेयो नवकोऽयं गणो बुधैः ॥ २१४ ॥**
**भूकार्यमुग्रकार्यं च खननं विवरस्य च ।**
**युद्धं चाधोमुखं यच्च तत्कार्यं कारयेद् बुधः ॥ २१५ ॥**

तीनों पूर्वा, मघा, आश्लेषा, विशाखा, कृत्तिका और मूल ये नक्षत्र अधोमुख कहे जाते हैं, इन में जमीन का जोतना, खोदना ( कूआ, तालाव आदि वनाना ), उग्रकार्य, सुरंग वनाना, युद्ध करना इत्यादि काम जो किया जाय सब सिद्ध होते हैं ॥२१४–१५॥

ऊर्ध्वमुखनक्षत्राणि, तत्कृत्यं च—

**उत्तरात्रितयं पुष्यो रोहिण्यार्द्रा श्रुतित्रयम् ।**
**ऊर्ध्ववक्त्रो गणो ज्ञेयो नक्षत्राणां मनीषिभिः ॥ २१६ ॥**
**प्रासादच्छत्रगेहानि प्राकारध्वजतोरणम् ।**
**राजाभिषेकमश्वं च कुर्यादूर्ध्वमुखे गणे ॥ २१७ ॥**

तीनों उत्तरा, पुष्य, रोहिणी, आर्द्रा, श्रवण से तीन ( श्र०

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi



ध० श० ) ये नौ नक्षत्र ऊर्ध्वमुख कहे जाते हैं, इनमें मकान, मन्दिर, छत, स्तम्भारोपण, ध्वज, राजाभिषेक, अश्व या हाथी की सवारी करना आदि सब काम शुभ होते हैं ॥ २१६–२१७ ॥

भैषज्यसेवनमुहूर्तः—

पुनर्वसुद्वयं पौष्णं मृगाश्वौ च करत्रयम् ।
मूलं श्रुतित्रयं मैत्रं भिषक्कर्मणि गृह्यते ॥ २१८ ॥
सोमशुक्रसुरेज्यानां वाराः शकुनमुत्तमम् ।
लग्नेषु चापं मीनोऽथ वृषो ग्राह्यस्तुलाधरः ॥ २१९ ॥

पुनर्वसु से दो (पुन० पुष्य), रेवती, मृगशिर, अश्विनी, हस्त से तीन ( ह० चि० स्वा० ), मूल, श्रवण से तीन ( श्र० ध० श० ) और अनुराधा ये १२ नक्षत्र सोम, शुक्र, बृहस्पति दिन, शुभ शकुन और धनु, मीन, वृष एवं तुल ये लग्न भैषज्य ( औषधि )-सेवन में प्रशस्त हैं ॥ २१८–२१९ ॥

पशुनिर्गमनमुहूर्तः—

आमावास्याष्टमी त्याज्या पूर्णिमा च चतुर्दशी ।
रविवारो वर्ज़नीयो गोपशूनां च निर्गमे ॥ २२० ॥
चित्रोत्तरा रोहिणी च श्रवणोऽपि विवर्जितः ।
एतेषु पशुजातीनामशुभो निर्गमो भवेत् ॥ २२१ ॥

अमावास्या, अष्टमी, पूर्णिमा, चतुर्दशी ये तिथियां और रविवार तथा चित्रा, तीनों उत्तरा, रोहिणी और श्रवण ये नक्षत्र पशुओं के निर्गम ( एक गांव से दूसरे गांव ले जाने ) में अनिष्ट हैं, अतः इन सबों का परित्याग अवश्य करना चाहिए ॥२२०–२२१॥

उत्तरासु विशाखायां रोहिण्यां च पुनर्वसौ ।
नवम्यां च चतुर्दश्यामष्टम्यां नानयेत्पशून् ॥ २२२ ॥

तीनों उत्तरा, विशाखा, रोहिणी एवं पुनर्वसु इन ६ नक्षत्रों में,



Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi



अष्टमी, चतुर्दशी और नवमी इन तिथियों में पशुग्रहण ( खरीद कर, या दान के रूप में अपने यहां लाना ) नहीं करना चाहिए ॥२२२॥

पशुक्रयविक्रयमुहूर्त्तः—

पूर्वा मैत्रद्वयं मूलं वासवं रेवती करः ।
पुनर्वसुद्वयं ग्राह्यं पशूनां क्रयविक्रये ॥ २२३ ॥

तीनों पूर्वा, अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल, धनिष्ठा, रेवती, हस्त, पुनर्वसु और पुष्य ये १४ नक्षत्र पशुओं की खरीद-विक्री में श्रेष्ठ हैं ॥ २२३ ॥

अन्यवस्तुक्रयविक्रयमुहूर्त्तः—

पुष्यो भाद्रपदायुग्मं स्वाती श्रुतिरथाश्विनी ।
हस्तोत्तरा मृगो मैत्रं तथाऽऽश्लेषा च रेवती ॥ २२४ ॥
ग्राह्याणि भानि चैतानि क्रयविक्रयणे बुधैः ।
चन्द्रभार्गवजीवानां वाराः शकुनमुत्तमम् ॥ २२५ ॥

पुष्य, दोनों भाद्रपदा, स्वाती, श्रवण, अश्विनी, हस्त, तीनों उत्तरा, मृगशिर, अनुराधा, आश्लेषा एवं रेवती ये १४ नक्षत्र सोम, शुक्र, बृहस्पति ये तीन दिन और शुभ शकुन ये वस्तुओं की खरिद-विक्री के लिए प्रशस्त हैं ॥ २२४-२२५ ॥

तिथिगण्डान्तः—

नन्दातिथीनामादौ हि पूर्णायाश्च तथान्तके ।
घटिकैका शुभे त्याज्या तिथिगण्डं घटीद्वयम् ॥ २२६ ॥

नन्दा ( १ । ६ । ११ ) तिथियों के आदि में एक घटी, तथा पूर्णा ( १५।५।१० ) तिथियों के अन्त में एक घटी ( मिला कर दो घटी ) तिथिगण्डान्त ( तिथिसन्धि ) कहा जाता है यह शुभ कार्य में त्याज्य है ॥ २२६ ॥

नक्षत्रगण्डान्तः—

ज्येष्ठाऽऽश्लेषारेवतीनामन्तिमं घटिकाद्वयम् ।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi



आद्यं मूलमघाश्वानां भगण्डं वेदनाडिकम् ॥ २२७ ॥

ज्येष्ठा, आश्लेषा, रेवती इन नक्षत्रों के अन्त में दो दो घटी, और मूल, मघा, अश्विनी इन नक्षत्रों के आदि में दो दो घटी (मिला कर चार घटी) नक्षत्र-गण्डान्त (नक्षत्रसन्धि) कहा जाता है ॥ २२७ ॥

लग्नगण्डान्तः—

मीनवृश्चिककर्कान्ते घटिकार्द्धं च संत्यजेत् ।
मेषचापमृगास्यादौ लग्नगण्डं घटीमितम् ॥२२८ ॥

मीन, वृश्चिक, कर्क इन लग्नों के अन्त में आधी २ घटी तथा मेष, धनु, सिंह इन लग्नों के आदि में आधी २ घटी (मिला कर एक घटी) लग्नगण्डान्त (लग्नसन्धि) माना गया है जो कि शुभ कामों के लिए त्याज्य है (इन्हीं को मूर भी कहते हैं)॥ २२८ ॥

गण्डान्तजननफलम्—

तिथिगण्डे भगण्डेऽथ लग्नगण्डे च जातकः ।
न जीवति ध्रुवं जातो जीवितश्चेद्धनी भवेत् ॥ २२९ ॥

उपरोक्त तिथि-नक्षत्र-लग्नगण्डान्त में यदि किसी का जन्म हो तो शीघ्र मर जाय, कदाचित् शान्ति, पूजा या और उपायों के द्वारा मृत्यु से बच जाय तो अपने समय में वह अवश्य धनी हो॥२२९॥

संवर्तयोगः—

सप्तम्यां च रवेर्वारो बुधो वा प्रतिपत्तिथौ ।
संवर्त्ताख्यो हि योगोऽयं वर्जनीयः सदा बुधैः ॥२३०॥

रवि दिन सप्तमी तिथि और बुध दिन प्रतिपत् तिथि संवर्त्त नाम का योग होता है, जिसमें कोई भी शुभ काम नहीं करना चाहिए ॥ २३० ॥

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi



सिद्धियोगः—

शुक्रे नन्दा बुधे भद्रा शनौ रिक्ता कुजे जया ।
गुरौ पूर्णा तिथिर्ज्ञेया सिद्धियोगाभिधा बुधैः ॥ २३१ ॥

शुक्र दिन नन्दा ( १, ६, ११, ) तिथि, बुध दिन भद्रा ( २, ७, १२ ) तिथि, शनि दिन रिक्ता ( ४, ९, १४ ) तिथि, मंगल दिन जया ( ३, ८, १३ ) तिथि एवं बृहस्पति दिन पूर्णा ( ५, १०, १५ ) तिथि सिद्धियोग होता है, इस योग में यात्रा आदि शुभ काम श्रेष्ठ हैं ॥ २३१ ॥

| नन्दा | भद्रा | रिक्ता | जया | पूर्णा | ति. सं. |
|---|---|---|---|---|---|
| शु. | बु. | श. | मं. | गु. | दिन |
| १ | २ | ४ | ३ | ५ | |
| ६ | ७ | ९ | ८ | १० | तिथि |
| ११ | १२ | १४ | १३ | १५ | |

विष्कुम्भादियोगाः—

विष्कुम्भः प्रीतिरायुष्मान् सौभाग्यः शोभनस्तथा ।
अतिगण्डः सुकर्मा च धृतिः शूलं तथैव च ॥ २३२ ॥
गण्डो वृद्धिर्ध्रुवश्चैव व्याघातो हर्षणस्तथा ।
वज्रः सिद्धिर्व्यतीपातो वरीयान् परिघः शिवः ॥ २३३ ॥
सिद्धिः साध्यः शुभः शुक्लो ब्रह्म ऐन्द्रोऽथ वैधृतिः ।
सप्तविंशतियोगाः स्युर्नामतुल्यफलप्रदाः ॥ २३४ ॥
अर्थ मूल ही से स्पष्ट है ॥ २३२-२३४ ॥

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi



चरकरणनिरूपणम्—

तिथिं तु द्विगुणीकृत्य हीनमेकेन कारयेत् ।
सप्तभिस्तु हरेद्भागं शेषं करणमुच्यते ॥ २३५ ॥
ववश्च बालवश्चैव कौलवस्तैतिलस्तथा ।
गरश्च वणिजं विष्टिः सप्तैतानि चराण्यथ ॥ २३६ ॥

इष्ट तिथिसंख्या को द्विगुणित कर एक हीन करे, सात से भाग देने पर ( लब्धि से कोई काम नहीं ) जो शेष रहे, उसी संख्या के अनुसार वव, वालव आदि करण वर्त्तमान कालिक होता है । वव १, वालव २, कौलव ३, तैतिल ४, गर ५, वणिज ६, और विष्टि ७ ( इसी को भद्रा कहते हैं ) ये सात चल करण हैं, जो कि प्रतिमास शुक्लपक्ष की प्रतिपदा के उत्तरार्ध से शुरु होकर चतुर्थी के उत्तरार्ध तक बीतते हैं, फिर द्वितीयावृत्ति में पञ्चमी के पूर्वार्ध से वैसे ही प्रवृत्त होते हैं, इस प्रकार कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी के पूर्वार्ध तक इन्हीं का अवस्थान रहता है ॥ २३५–२३६ ॥

स्थिरकरणानि—

अन्त्ये कृष्णचतुर्दश्याः शकुनिर्दर्शभागयोः ।
चतुःपान्नाग आद्ये तु किंस्तुघ्नं प्रतिपद्दले ॥ २३७ ॥
शुक्लप्रतिपदन्त्याच्च ववादिकरणस्थितिः ।
एवमेकादश प्रोक्तान्यस्थिरस्थिरभेदतः ॥ २३८ ॥

प्रतिमास कृष्णपक्ष की चतुर्दशी के उत्तरार्ध में शकुनी १, अमावास्या के पूर्वार्ध में चतुःपद २, उत्तरार्ध में नाग ३, और शुक्लपक्ष की प्रतिपदा के पूर्वार्ध में किंस्तुघ्न ४, ये चारों ( शकुन्यादि ) करण स्थायी रूप में सदैव रहा करते हैं, इसी से इनको स्थिर करण कहते हैं । इस प्रकार ७ चल और ४ स्थिर ( मिला कर ११ ) करण माने गए हैं ॥ २३७–२३८ ॥

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi


करणचक्र—

| शुक्लपक्ष | | | कृष्णपक्ष | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तिथि | पूर्वार्ध- | उत्तरार्ध- | तिथि- | पूर्वार्ध- | उत्तरार्ध- |
| १ | किंस्तुघ्न | बव | १ | बालव | कौलव |
| २ | बालव | कौलव | २ | तैतिल | गर |
| ३ | तैतिल | गर | ३ | वणिज | भद्रा |
| ४ | वणिज | भद्रा | ४ | बव | बालव |
| ५ | बव | बालव | ५ | कौलव | तैतिल |
| ६ | कौलव | तैतिल | ६ | गर | वणिज |
| ७ | गर | वणिज | ७ | भद्रा | बव |
| ८ | भद्रा | बव | ८ | बालव | कौलव |
| ९ | बालव | कौलव | ९ | तैतिल | गर |
| १० | तैतिल | गर | १० | वणिज | भद्रा |
| ११ | वणिज | भद्रा | ११ | बव | बालव |
| १२ | बव | बालव | १२ | कौलव | तैतिल |
| १३ | कौलव | तैतिल | १३ | गर | वणिज |
| १४ | गर | वणिज | १४ | भद्रा | शकुनि |
| १५ | भद्रा | बव | ३० | चतुःपद | नाग |

नक्षत्रस्वामिनः—

दस्रो यमोऽनलो धाता चन्द्रो रुद्रोऽदितिर्गुरुः ।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi



भुजङ्गमश्च पितरो भगोऽर्यमदिवाकरौ ॥ २३६ ॥
त्वष्टा वायुः शक्रवह्नी मित्रः शक्रश्च निर्ऋतिः ।
जलं विश्वे विधिर्विष्णुर्वासवो वरुणस्तथा ॥ २४० ॥
अजैकपादहिर्बुध्न्यः पूषेति कथिता बुधैः ।
अष्टाविंशतिसंख्यानां नक्षत्राणामधीश्वराः ॥ २४१ ॥

इति काशीनाथदैवज्ञसंगृहीते शीघ्रबोधे द्वितीयं नक्षत्रप्रकरणम् ।

अर्थ मूल एवं चक्र से स्पष्ट है ॥ २३९-२४१ ॥

पण्डित-श्रीअनूपमिश्र-कृतायां सरलाटीकायां नक्षत्रप्रकरणं समाप्तम् ।

नक्षत्रस्वामिचक्र—

| सं० | नक्षत्र | स्वामी | सं० | नक्षत्र | स्वामी |
|---|---|---|---|---|---|
| १ | अ. | दस्र | १५ | स्वा. | वायु |
| २ | भ. | यम | १६ | वि. | इन्द्र, (१) अग्नि (२) |
| ३ | कृ. | अग्नि | १७ | अनु० | मित्र |
| ४ | रो. | ब्रह्मा | १८ | ज्ये. | इन्द्र |
| ५ | मृ. | चन्द्रमा | १९ | मू. | रक्ष |
| ६ | आ. | शिव | २० | पू. षा. | जल |
| ७ | पु. | अदिति | २१ | उ. षा. | विश्वेदेव |
| ८ | पुष्य | गुरु | २२ | अभि. | विधि |
| ९ | आ. | सर्प | २३ | श्र. | विष्णु |
| १० | म. | पितृ | २४ | ध. | वसु |
| ११ | पू. फ. | भग | २५ | श. | वरुण |
| १२ | उ. फ. | अर्यमा | २६ | पू. भा. | अजैक. |
| १३ | हस्त | सूर्य | २७ | उ. भा | अहिर्बुध्न्य |
| १४ | चित्रा | त्वष्टा | २८ | रे. | पूषा |

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

# तृतीयं प्रकरणम् ।

## अङ्गस्पर्शवशेन प्रश्नविचारः—

**शिरो मुखं कर्णनेत्रे स्पृष्ट्वा पृच्छति यो नरः ।**
**सुवर्णधनधान्यानां लाभस्तत्र न संशयः ॥ १ ॥**

अब प्रश्न-सम्बन्ध में कहते हैं—यदि कोई व्यक्ति अपना शिर, मुंह, कान एवं आंख इन में किसी अङ्ग का स्पर्श करता हुआ प्रश्न करे तो उसे सोना, धन, धान्य का लाभ होगा यह कहना चाहिए, इसमें संशय नहीं ॥ १ ॥

**स्कन्धग्रीवाकण्ठहस्तस्पर्शे लाभो हि दुःखितः ।**
**कुक्षिनाभिसभालम्भे भक्ष्यपानादि सिद्ध्यति ॥ २ ॥**

यदि कन्धा, ग्रीवा, कण्ठ, हाथ इन अंगों का स्पर्श करता हुआ पूछे तो दुःख के साथ लाभ होगा यह जाने । कोंख, नाभि इन दोनों अङ्ग का स्पर्श करने से खाने पीने का सामान मिले ॥ २ ॥

**जङ्घालिङ्गकटिस्पर्शे कन्यालाभः सुतोद्भवः ।**
**जानुगुल्फपदस्पर्शे महाक्लेशः प्रजायते ॥ ३ ॥**

प्रश्नकाल में जंघा, लिङ्ग ( पुरुष चिह्न ), कटिप्रदेश इन अङ्गों का स्पर्श करने का फल कन्या का लाभ एवं पुत्र का जन्म जानना चाहिए, परन्तु जानु ( जङ्घा के नीचे ), गुल्फ एवं पांव के स्पर्श से भारी क्लेश होता है ॥ ३ ॥

**केशस्पर्शे भवेन्मृत्युः फलस्पर्शे शुभं भवेत् ।**
**तृणाङ्गारकसंस्पर्शे ग्रहपीडा भयं भवेत् ॥ ४ ॥**

एवं केश के स्पर्श करने से मृत्यु हो, यदि किसी फल का स्पर्श करता हुआ प्रश्न करे तो शुभ हो, परन्तु प्रज्वलित तृणादि के स्पर्श से ग्रह सम्बन्धी पीड़ा का भय हो ॥ ४ ॥

**सुगन्धमद्यभाण्डादिस्पर्शे सिद्धिः प्रजायते ।**
**शून्यालये श्मशाने च शुष्ककाष्ठे क्षते तरौ ॥ ५ ॥**

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi



**तुषभस्माधमस्थाने प्रश्ने क्लेशः प्रजायते ॥ ६ ॥**

सुगन्धित पदार्थ या मदिरापात्र आदि का स्पर्श करे तो अभिलषित कार्य की सिद्धि हो । यदि निर्जन घर में, श्मशान में, सूखे काष्ठ पर, कटे पेड़ पर या ऐसी जगह पर ( जहां कि केश, भस्म आदि फेंका गया हो ) स्थित होकर पूछे तो कुछ क्लेश हो ॥५–६॥

**देवागारे नदीतीरे दिव्यस्थाने शुभं भवेत् ।**
**शुभदिग्वीरिता सिद्धिर्विदिक्षु च न जायते ॥ ७ ॥**

किसी देवालय में, नदी के किनारे या किसी भी पवित्र स्थान में पूछा जाय तो शुभ कहे । ऐसे ही चारों दिशा के अभिमुख में शुभ और चारों कोण में अशुभ जाने ॥ ७ ॥

घट्यादि–लग्नमानम्—

**तिस्रो मीनेऽथ मेषे च घट्यः पञ्चमुखाः पलाः ।**
**चतस्रश्च वृषे कुम्भे पलाः प्रोक्तास्तु षोडश ॥ ८ ॥**
**मिथुने मकरे पञ्च घटिकाः पलपञ्चकम् ।**
**कर्के चापे पञ्चघट्यः शशिवेदाः पलाः स्मृताः ॥ ९ ॥**
**घटिकाः पञ्च सिंहेऽलौ द्विवेदाश्च पलाः स्मृताः ।**
**कन्यायां च तुले पञ्च पलाश्चैकाग्नयस्तथा ।**
**लग्नप्रमाणं घट्यादि कथितं पूर्वसूरिभिः ॥ १० ॥**

अर्थ मूल एवं चक्र से स्पष्ट है ॥ ८–१० ॥

लग्नमानचक्र—

| लग्न | | मेष | वृष | मिथुन | कर्क | सिंह | कन्या |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मान | घटी | ३ | ४ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| | पल | ४५ | १६ | ५ | ४१ | ४२ | ३१ |
| लग्न | | मीन | कुम्भ | मकर | धनु | वृश्चिक | तुला |

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi



अरिष्टनाशाय ग्रहाणां-मुख्यदानवस्तूनि—

सूर्ये धेनुश्च ताम्रं च गोधूमं रक्तचन्दनम्।
चन्द्रे शङ्खश्चन्दनं च वस्त्रं चासिततण्डुलाः ॥ ११ ॥
कुजे वृषः प्रदातव्यो रक्तवस्त्रं गुडोदनम्।
बुधे कर्पूरमुद्गाश्च हरिद्रा च हरिन्मणिः ॥ १२ ॥
पीतवस्त्रद्वयं जीवे हरिद्रा चणकानि च।
अश्वः शुक्रे सितो देयः शुक्लधान्यानि यानि च ॥ १३ ॥
शनौ तैलं तिला देयाः कृष्णगोदानमुत्तमम्।
राहौ तु महिषाछागौ माषाश्च तिलसर्षपाः ॥ १४ ॥
अजमेषौ च दातव्यौ केतौ चान्यच्च मिश्रितम्।
स्वर्णगोदानपूजाभिः सर्वेषां शान्तिरुत्तमा ॥ १५ ॥

अर्थ मूल एवं चक्र से स्पष्ट है ॥ ११–१५ ॥

चक्र—

| ग्रह | दानवस्तु | | | |
|---|---|---|---|---|
| सूर्य | धेनु | ताम्र | रक्तचन्दन | × |
| चन्द्र | शङ्ख | चन्दन | वस्त्र | काला चावल |
| मङ्गल | वृष• | लाल वस्त्र | खीर(गुड़वाला) | × |
| बुध | कर्पूर | मूंग | हल्दी | हरित मणि |
| गुरु | २ पीतवस्त्र | हल्दी | चना | × |
| शुक्र | सफेद घोड़ा | सफेद धान्य | × | × |
| शनि | तैल | तिल | काली गौ | × |
| राहु | महिषी | छाग | उर्द, तिल | सरसों |
| केतु | छाग | मेढ़ा | मिश्रित अन्न | × |

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi



गुरुचारवशेन सुभिक्षादिविचारः—

मेषे गुरौ सुभिक्षं च सुवृष्टिश्च सुखी नरः ।
वृषे गुरौ स्वल्पवृष्टिः प्रजापीडा च विग्रहः ॥ १६ ॥
अनावृष्टिः प्रजानाथवैरं च मिथुने गुरौ ।
कर्के गुरौ महावृष्टिर्देशभङ्गो महर्घता ॥ १७ ॥
सिंहे गुरौ सुभिक्षं च सुवृष्टिश्च प्रजासुखम् ।
कन्यागुरौ रोगपीडा सुभिक्षं सस्यसम्भवः ॥ १८ ॥
तुले गुरौ सस्यनाशो बहुक्षीरं प्रजायते ।
अलौ जीवे च दुर्भिक्षं राजचौरोरगाद् भयम् ॥ १९ ॥
चापे गुरौ शुभं वृष्टिः शुभा सस्यमहर्घता ।
दुर्भिक्षं मकरे जीवे राजयुद्धं पशुक्षयः ॥ २० ॥
कुम्भे गुरौ च दुर्भिक्षं धातुमूलमहर्घता ।
दुर्भिक्षं दक्षिणे देशे झषे जीवे न चान्यतः ॥ २१ ॥

मेष राशि पर बृहस्पति रहे तो देश भर में सुभिक्ष हो, पर्याप्त वृष्टि हो और लोग खूब सुखी रहे। वृष राशि पर रहे तो वृष्टि कम हो, प्रजाओं में पीड़ा हो और लड़ाई हो। मिथुन राशि पर रहे तो वृष्टि न हो और राजाओं में युद्ध छिड़े। इसी तरह कर्क राशि पर बृहस्पति के आने से वृष्टि की अधिकता के कारण देश के कई हिस्से नष्ट हो जायं और समस्त संसार में महंगी फैले। सिंह में रहने से सुभिक्ष हो, वृष्टि भी अच्छी हो एवं प्रजा सुखी रहे। कन्या राशि में रहने से रोग, पीड़ा बढ़े, परन्तु अन्न की उपज से सुभिक्ष हो। इसी तरह तुल में धान का नाश, दुग्ध की वृद्धि होती है, वृश्चिकमें गुरु के रहने से दुर्भिक्ष हो, राजा चोर एवं सर्प से भय हो। धनु में शुभ हो, अच्छी वर्षा हो, तो भी धान्य की महँगी रहे। मकर में रहे तो दुर्भिक्ष, राजाओं में युद्ध, पशुओं का

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi


नाश हो। कुम्भ में रहने से दुर्भिक्ष हो, धातु और मूल पदार्थों की महँगी हो। परन्तु मीन के वृहस्पति में केवल दक्षिण देशों में महर्घता होती है, अन्यत्र नहीं ॥ १६-२१ ॥

संक्रान्तिवशेन वृष्टिफलम्—

**मार्गकार्तिकसंक्रान्तौ वृष्टिर्वर्षति मध्यमा।**
**पौषे माघे नृणां सौख्यं सस्यपूर्णा वसुन्धरा॥ २२॥**
**चैत्रफाल्गुनवैशाखज्येष्ठानां संक्रमे घनः।**
**यदि वर्षति सर्वत्र सुभिक्षं च प्रजासुखम्॥ २३॥**
**आषाढे संक्रमे वृष्टौ व्याधिश्च श्रावणे सुखम्।**
**भाद्रे च बहवो रोगाः सुखं सर्वत्र चाश्विने।**
**अन्येषामपि संक्रान्तौ वृष्टौ ज्ञेयं शुभाशुभम्॥ २४॥**

कातिक—अगहन महीने की संक्रान्ति के दिन यदि वृष्टि हो तो जानना कि साल भर हर अवसर पर मध्यम वृष्टि होती रहेगी। पौष-माघ के संक्रान्ति दिन वृष्टि होने से उस वर्ष पूर्ण वृष्टि होने के कारण लोग सुखी रहेंगे और पृथ्वी धनधान्य से परिपूरित रहेगी। आषाढ़ की संक्रान्ति में वृष्टि होने से व्याधि फैले, श्रावण में सुख हो, भाद्र में अनेक प्रकार के रोग हों एवं आश्विन की संक्रान्ति में वृष्टि हो तो सर्वत्र सुख मिले, इस प्रकार हर संक्रान्ति के दिन की वृष्टि से शुभाशुभ फल जाने ॥ २२-२४ ॥

शुक्लपञ्चमीवायुचारफलम्—

**चैत्रस्य शुक्लपञ्चम्यां पूर्वे वायौ घनागमः।**
**भाद्रे गुणत्रयं मौल्यं रसानां जायते तदा॥ २५॥**
**ज्येष्ठस्य शुक्लपञ्चम्यां वृष्टिः पश्चिममारुतः।**
**तदा चतुर्गुणं मौल्यं धान्यानां कार्तिके भवेत्॥ २६॥**
**श्रावणे शुक्लपञ्चम्यां वृष्टिर्वातो दिनद्वयम्।**
**दक्षिणे पश्चिमे ज्ञेयं दुर्भिक्षं धान्यसंक्षयः॥ २७॥**

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi



चित्रास्वातीविशाखासु श्रावणे चैव वर्षति ।
सर्वरत्नं परित्यज्य कर्तव्यश्चान्नसंग्रहः ॥ २८ ॥

चैत्र शुक्लपक्ष की पंचमी तिथि में पूर्व वायु चले तो धन का आगम हो, भाद्र महीने में रसात्मक पदार्थ ( सरसों, गन्ना, घी आदि ) का मूल्य त्रिगुणित हो जाय याने अधिक महँगा हो। ज्येष्ठ शुक्ल पञ्चमी में यदि वृष्टि हो और पश्चिम तरफ से वायु चले तो कार्त्तिक महीने में धान बहुत तेज हो एवं यदि श्रावण मास के शुक्लपक्ष की पञ्चमी तिथि में वृष्टि हो और दो दिन तक हवा चले तो दक्षिण-पश्चिम देशों में बड़ा दुर्भिक्ष पड़े, उपज बिलकुल न हो। यदि चित्रा, स्वाती और विशाखा इन नक्षत्रों में वृष्टि हो तो उस वर्ष में सभी फसल नष्ट हो जाती है, फलतः अन्न निहायत तेज हो जाते हैं, अतः उस समय सब काम को छोड़ कर केवल अन्न ही का संग्रह करना चाहिए ॥ २५-२८ ॥

आषाढे पूर्णिमायां चेदनिलो वाति नैर्ऋते ।
अनावृष्टिर्धान्यनाशो जलं कूपे न दृश्यते ॥ २९ ॥
आषाढपूर्णिमायान्तु वायव्ये यदि मारुतः ।
धर्मसिद्धिस्तदा लोके धनं धान्यं गृहे गृहे ॥ ३० ॥
आषाढस्य पूर्णिमायामैशान्यां वाति मारुतः ।
सुखिनो हि तदा लोका गीतवाद्यपरायणाः ॥ ३१ ॥
वह्निकोणे वह्निभीतिः पश्चिमे च जलाद्भयम् ।
अन्यत्र यदि वायुः स्यात्सुभिक्षं जायते तदा ॥ ३२ ॥

यदि आषाढ़ी पूर्णिमा में नैर्ऋत्य ( दक्षिण-पश्चिम ) कोण की हवा चले तो उस वर्ष वृष्टि न हो यहां तक कि कूआँ भी सूख जाय, धान्य का नाश हो जाय। ऐसे ही वायु कोण ( उत्तर-पश्चिम ) से वायु के चलने से लोगों की प्रवृत्ति धर्म-मार्ग में होती है और घर घर धन-धान्य से परिपूर्ण रहता है। यदि उसी

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi



पूर्णिमा में ईशान कोण से हवा चले तो जानना कि लोग पूर्ण सुखी रहेंगे और घर घर मङ्गल कार्मों के अवसर पाकर गीतवाद्य का अनुभव करेंगे। यदि अग्निकोण ( पूर्व-दक्षिण की ) वायु चले तो गांव गांव में अग्निभय हो, पश्चिम वायु चले तो जल से भय उपस्थित हो। परन्तु इनके अतिरिक्त दिशा ( उत्तर, पूर्व, दक्षिण ) से वायु चले तो सुभिक्ष जानना चाहिए ॥ २९-३२ ॥

मासस्य पूर्णिमायां तु भूमिकम्पो यदा भवेत् ।
उल्कातारावज्रपाता ग्रसितौ शशिसूर्यकौ ॥ ३३ ॥
धूम्रकेतुः शक्रचापं ग्रहणं बहुधा तथा ।
तदापि सर्ववस्तूनां जायते च महर्घता ॥ ३४ ॥

किसी भी महीने की पूर्णिमा में यदि भूडोल हो, उल्का गिरे, तारा गिरे, वज्रपात हो, चन्द्रग्रहण हो ( या उसी महीने की अमा-वास्या में सूर्य्य ग्रहण हुआ हो ), धूमकेतु नाम की तारा का उदय हो या आकाश में इन्द्रचाप ( वृत्तखण्डाकार ) दिखाई दे, या करीब करीब में ग्रहण हो तो जानना कि सभी चीजों की महँगी होगी ॥ ३३-३४ ॥

आषाढशुक्लपञ्चम्यां द्वितीयायां च वर्षति ।
यदि मेघस्तदा वृष्टिः श्रावणे जायते ध्रुवम् ॥ ३५ ॥
तृतीयायां पूर्ववायुः पूर्वे याति च वारिदः ।
यदि व्योम्नस्तदा भाद्रे वर्षते विपुलं जलम् ॥ ३६ ॥
चतुर्थ्यां दक्षिणे वायुर्मेघः पूर्वो च गच्छति ।
आश्विने च तदा मासे वृष्टिर्भवति निश्चितम् ॥ ३७ ॥

यदि आषाढ़ शुक्ल पञ्चमी एवं द्वितीया तिथि में थोड़ी भी वृष्टि हो तो जानना कि श्रावण महीने में अवश्यमेव अधिक वर्षा होगी। यदि पूर्व दिशा की वायु तृतीया में बहे और बादल पूर्व ही की ओर जाते दिखाई दे तो भाद्र में पर्याप्त वृष्टि का योग मानना।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi



यदि चतुर्थी तिथि को दक्षिण वायु चले, बादल पूर्व दिशा में जाय तब जानना कि आश्विन में अतिवृष्टि होगी ॥ ३५-३७ ॥

पञ्चम्यामुत्तरो वायुर्दृश्यते च यदा बुधे।
तदा च कार्त्तिके मासे वृष्टिर्भवति भूयसी ॥ ३८ ॥
चतुष्टये च दिवसे यदा वर्षति वारिदः।
अतिवृष्ट्या च दुर्भिक्षं जायते नात्र संशयः ॥ ३९ ॥
दिनद्वयं यदा वाता वान्ति दक्षिणपश्चिमे।
तदा नश्यन्ति धान्यानि दुर्भिक्षं च प्रजायते ॥ ४० ॥
तृतीयायां च पञ्चम्यां वायुः पूर्वोत्तरं यदि।
तदा धान्यानि जायंते सर्वं कृतयुगोपमम् ॥ ४१ ॥

यदि पञ्चमी तिथि, बुधवार को उत्तर तरफ का वायु चले तब कार्त्तिक में पूर्ण वृष्टि का लक्षण समझना। यदि उपरोक्त तिथियों से आरंभ कर अविच्छिन्न चार दिन तक वृष्टि होती रहे तो जानना कि उस साल अत्यधिक वृष्टि ही के कारण सब फसल नष्ट होकर दुर्भिक्ष हो जाय इसमें संशय नहीं है। यदि दो दिन तक वृष्टि होती रहे और दक्षिण पश्चिम की हवा चले तो सभी धान्य नष्ट हो जांय, फलतः पूरा दुर्भिक्ष पड़े। इसी तरह यदि तृतीया-पञ्चमी तिथि को पूर्व-उत्तर तरफ की वायु चले तो धान्य काफी हो और सारी बातें सत्ययुग की भांति हो जायं ॥ ३८-४१ ॥

दशतारककथनम्—

पौषे मूलाद्भरण्यन्तं चन्द्रचारेण गर्भति।
आर्द्रादितो विशाखान्तं सूर्यचारेण वर्षति ॥ ४२ ॥

पौष महीने में मूल से भरणी (चांद्र) नक्षत्र तक दश-तारक कहा जाता है इन में बादल या वृष्टि के होने पर आर्द्रा से विशाखा (सूर्य संबन्धी) तक वृष्टि होने का योग अच्छा होता है अर्थात् यदि मूल नक्षत्र में बादल या वृष्टि हो तो जानना कि आगे आर्द्रा

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi



के सूर्य में १३–१४ रोज पानी अवश्य होगा, ऐसे ही पूर्वाषाढ़ में होने से पुनर्वसु के सूर्य में, उत्तराषाढ़ में होने से पुष्य के सूर्य में (इसी तरह आगे भी) वृष्टि का लक्षण होता है। (प्रायः ज्यौतिषी लोग पौष के इसी दशतारक का लक्षण नोट करके ही आगे वृष्टि का योग बतलाते हैं जो कि बहुधा सत्य ही प्रमाणित होता आरहा है) ४२

यदि तिष्ठति भौमस्य क्षेत्रे कोऽपि ग्रहस्तदा।
षण्मासं तुषधान्यानां जायते च महर्घता ॥ ४३ ॥

यदि मंगल की राशि (मेष, वृश्चिक) पर कोई ग्रह आजाय तो भूसा वाले धान्य की महंगी ६ महीने तक बनी रहे ॥ ४३ ॥

शुक्रक्षेत्रे कुजे मासद्वयं नूनं महर्घता।
चन्द्रे च दिननाथे च सर्वरोगविनाशनम् ॥ ४४ ॥

यदि शुक्र राशि (वृष, तुला) पर मंगल आवें तो दो महीने तक अवश्यमेव महंगी हो एवं चन्द्रमा, सूर्य के रहने से सब रोग हट जांय और जनता सुखी रहे ॥ ४४ ॥

शनौ राहौ सर्वधान्यं समर्घं राजविग्रहः।
बुधक्षेत्रे रवौ चन्द्रे विरोधः सर्वभूभुजाम् ॥ ४५ ॥
उत्पत्तिस्तु सुधान्यानां पंचमासान् प्रजायते।
सुभिक्षं तु महावृष्टिः पशूनां तृणसंकुलम् ॥ ४६ ॥

यदि शुक्र के घर पर शनि और राहु आवे तो सभी धान्य सम भाव पर रहें परन्तु राजाओं में युद्ध छिड़े। ऐसे ही बुध के गृह (कन्या, मिथुन) में सूर्य–चन्द्रमा के रहने से सब राजाओं में परस्पर विरोध उपस्थित हो और पांच महीने तक धान्य की उत्पत्ति हो, सुभिक्ष हो, पर्य्याप्त वृष्टि हो एवं पशुओं के लिए भी तृण काफी उपजे ॥ ४५–४६ ॥

ग्रहस्थितिफलम्—

शुक्रक्षेत्रे बुधश्चन्द्रश्चन्द्रक्षेत्रे भृगोः सुतः।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi



पाखण्डिनां भवेद्वृद्धिर्धान्यानां च महर्घता ॥ ४७ ॥

यदि शुक्र की राशि ( वृष, तुला ) पर बुध हो और चन्द्रमा की राशि ( कर्क ) पर शुक्र हो तो पाखण्डियों की वृद्धि एवं धान्य की महँगी होती है ॥ ४७ ॥

बुधक्षेत्रे शनौ चन्द्रे सर्वधान्यमहर्घता ।
शुक्रक्षेत्रे गुरौ भौमे कार्पासादिमहर्घता ॥ ४८ ॥
भौमक्षेत्रे शनी राहुस्ताम्रादीनां महर्घता ।
शनिक्षेत्रे शनी राहुः सुभिक्षं चन्द्रभास्करे ॥ ४९ ॥
पशुनाशो धान्यवृद्धिर्गुडादीनां महर्घता ।
गुरुक्षेत्रे शनौ राहौ स्वल्पवृष्टिस्तृणक्षयः ॥ ५० ॥
भौमे राज्ञां विरोधः स्याद् बुधे वृष्टिश्च भूयसी ।
तृणवृद्धिः पशूनां च सौख्यं धान्यसमुद्भवः ॥ ५१ ॥
भौमक्षेत्रे यदा सन्ति राहुभौमार्कभार्गवाः ।
षण्मासं गुडकार्पासघृतक्षीरमहर्घता ॥ ५२ ॥
मन्दक्षेत्रे यदा सन्ति मन्दराहुबुधास्तदा ।
चतुष्पदानां नाशश्च द्विपदानां च जायते ॥ ५३ ॥

यदि बुध की राशि पर शनि चन्द्र हों तो सब धान्यों की महर्घता होती है। शुक्र की राशि पर वृहस्पति और मंगल पड़े तो कपास वगैरह की महंगी जाने। इसी तरह मंगल के घर में शनि, राहु के पड़ने से तांवा आदि धातुओं की महंगी होती है, परन्तु यदि शनिराशि ( म० कु० ) पर शनि, राहु हों तो सुभिक्ष होता है। चन्द्रमा, सूर्य के रहने से पशुओं का नाश, धान्य की वृद्धि एवं गुड़ चीनी आदि पदार्थों की महंगी होती है। वृहस्पति की राशि ( ध० मी० ) पर शनि, राहु के रहने से थोड़ी वृष्टि और तृण ( घास ) का नाश हो जाता है। एवं मंगल हो तो राजाओं में विरोध, बुध हो तो अतिवृष्टि, तृण की वृद्धि, पशुओं को सुख,

Jayatu Samskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi



और धान्यों की उपज अच्छी होती है । यदि मंगल के घर में राहु, मंगल, सूर्य, शुक्र हों तो छः महीने तक गुड़, कपास, घी, दूध आदि को महर्घता होती है । यदि शनि के घर में शनि, राहु, बुध पड़ें तो चौपायों, आदमियों एवं पक्षियों का नाश होता है ४८-५३

भौमक्षेत्रे यदा सन्ति शुक्रमन्दनिशाकराः ।
तदा मुक्तापशूनां च शंखस्य च महर्घता ॥ ५४ ॥

यदि मंगल की राशि पर शुक्र, शनि, चन्द्रमा आवें तो मोती, पशु और शंख की महंगी हो ॥ ५४ ॥

भौमक्षेत्रे भार्गवश्चेद्धान्यानां च महर्घता ।
शनिक्षेत्रे रवौ चन्द्रे वस्त्राणां च महर्घता ॥ ५५ ॥

यदि शुक्र मंगल के घर में पड़े तो धान्यों की, और शनिक्षेत्र में रवि, चन्द्रमा के रहने से वस्त्रों की महंगी होती है ॥ ५५ ॥

शुक्रक्षेत्रे गुरौ भौमे प्रजापीडा प्रजायते ।
ग्रहराशिसमायोगे फलमेतत्प्रकीर्तितम् ॥ ५६ ॥

शुक्र की राशि पर बृहस्पति, मंगल आवें तो प्रजाओं को पीड़ा होती है । इस प्रकार ग्रहों की अवस्थिति से यह फल कहा गया है ।

चन्द्रोदये कुजक्षेत्रे तुषधान्यस्य वृद्धये ।
चन्द्रोदये भृगुक्षेत्रे स्वल्पवृद्धिः क्रयाणके ॥ ५७ ॥
प्रजापीडा बुधक्षेत्रे सोमशुक्रोदये भवेत् ।
रविक्षेत्रे तुलावृद्धिः शनिसोमभृगूदये ॥ ५८ ॥
चन्द्रक्षेत्रे शुक्रचन्द्रबुधानामुदयो यदा ।
षण्मासं स्याच्च दुर्भिक्षमतिवृष्टिश्च जायते ॥ ५९ ॥
उदितौ च बुधक्षेत्रे यदि राहुशनैश्चरौ ।
पशुक्षयः प्रजापीडा धान्यानां च महर्घता ॥ ६० ॥
शुक्रक्षेत्रे सोमसूर्यसूर्यपुत्रोदयो यदा ।
उदयास्तमहीपीडा जायते च महर्घता ॥ ६१ ॥

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi



यदि मंगल की राशि पर चंद्रमा का उदय हो तो धान्य की वृद्धि होती है। एवं शुक्र के घर (वृ० तु०) पर हो तो खरीदने में कुछ वृद्धि हो, बुधक्षेत्र में चन्द्रमा और शुक्र का उदय हो तो प्रजाओं को पीड़ा होती है। एवं सिंह राशि पर शनि, चन्द्रमा, शुक्र के उदय होने से भाव की वृद्धि जाने। कर्कराशि पर शुक्र, चन्द्र, बुध का उदय हो तो छः महीने तक दुर्भिक्ष पड़े, बाद में अति वृष्टि हो। यदि बुध की राशि (मि० कन्या) पर राहु शनि का उदय हो तो पशुओं का नाश, प्रजा में पीड़ा और धान्यों की महंगी होती है। वृष, तुला राशि पर चन्द्र, सूर्य, शनिश्चर आवे तो समस्त देश में पीड़ा और अन्न की महंगी होती है ॥५७-६१॥

**यदोदयः शनिक्षेत्रे भौमभास्करयोर्भवेत्।**
**घृतानां च तदा वृद्धिर्गुडानां च महर्घता ॥ ६२ ॥**

यदि शनि की राशि (म० कु०) पर मंगल, सूर्य हो तो घी, तेल, दूध आदि की वृद्धि और गुड़ वगैरह की महंगी होती है ॥६२॥

**यदासावुदितश्चैव शनिक्षेत्रे शनैश्चरः।**
**तदा वै तृणकाष्ठानां लोहानां च महर्घता ॥ ६३ ॥**

यदि शनि अपनी ही राशि पर उदित हो तो तृण, काष्ठ एवं लोहा, पीतल आदि धातुओं की महंगी जाने ॥ ६३ ॥

**आर्द्रायां तु यदा भौमः शनिरग्निगतस्तथा।**
**बुधो भाद्रे च दुर्भिक्षं सुभिक्षं भृगुनन्दने ॥ ६४ ॥**

यदि मंगल आर्द्रा में, शनि कृत्तिका में और बुध पूर्वभाद्र नक्षत्र में रहें तो दुर्भिक्ष होता है, परन्तु शुक्र रहे तो सुभिक्ष जानना॥

**गुरुर्यदा विशाखायां तदा धान्यमहर्घता।**
**मङ्गले वृष्टिकालान्तं शनौ सर्वत्र मङ्गलम् ॥ ६५ ॥**

यदि बृहस्पति विशाखा नक्षत्र पर रहे तो धान्यों की महंगी होती है। मंगल रहे तो वर्षाकाल तक महंगी रहे, परन्तु शनि के

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi



रहने से सम्पूर्ण वर्ष मंगलमय होता है, यानी लोग सुखी रहते हैं ६५

सुभिक्षं चानुराधायां यदि कोऽपि ग्रहो भवेत्।
कल्याणं च सुभिक्षं चाऽश्लेषायां च स्थिते गुरौ ॥६६॥
कार्पासा बहवो मन्दे भौमे कटकपीडनम्।
बुधे तिलाश्च माषाश्च महर्घं वर्षकालतः ॥ ६७ ॥

यदि अनुराधा नक्षत्र पर कोई ग्रह हो तो सुभिक्ष जाने। एवं आश्लेषा पर बृहस्पति के रहने से कल्याण और सुभिक्ष होता है। शनिश्चर आश्लेषा पर रहे तो कपास अधिक उपजे, मंगल हो तो अधिक लड़ाई से पीड़ा पहुंचे, बुध हो तो तिल उर्द की महंगी एक वर्ष तक स्थिर रहे ॥ ६६-६७ ॥

सूर्ये सर्वाणि धान्यानि महर्घाण्यहिगे सदा।
शुक्रे च बहुला वृष्टिः सस्यवृद्धिश्च जायते ॥ ६८ ॥

यदि सूर्य आश्लेषा पर रहे तो धान्यमात्र सभी महगे हों, शुक्र हो तो अधिक वृष्टि एवं धान्य की वृद्धि होती है ॥ ६८ ॥

मूले कुलित्थमुद्गानां गुरौ वृद्धिः प्रजायते।
भौमे मुद्गस्य नाशः स्याद्बुधे सर्वसमृद्धयः ॥ ६९ ॥

यदि बृहस्पति मूल में आवें तो कुलथी और मूंग की महंगी हो, मंगल रहे तो मूंग का नाश हो जाय एवं बुध के रहने से सर्वविध समृद्धि मिले ॥ ६९ ॥

पूर्वाषाढागते भौमे पीडा च पशुपक्षिणाम्।
केतौ तत्र गते मन्दे जायते च महर्घता ॥ ७० ॥

यदि मंगल पूर्वाषाढ़ में रहे तो पशु-पक्षियों को पीड़ा हो, केतु और शनिश्चर रहें तो सब चीजों की महंगी हो ॥ ७० ॥

उत्तराषाढके जीवे गुडानां च महर्घता।
भौमे च पशुजातीनां जायते वै महर्घता ॥ ७१ ॥

यदि बृहस्पति उत्तराषाढ पर आवे तो गुड़ वगैरह की महंगी

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi


हो, मंगल हो तो पशुजाति अधिक मूल्य में बिके ॥ ७१ ॥

**अभिजिन्नामनक्षत्रे यदा छायासुतो भवेत् ।**
**सर्वसस्यानि जायन्ते सुभिक्षं च कुजे तथा ॥ ७२ ॥**

यदि राहु मंगल अभिजित् नक्षत्र पर आवें तो सभी धान्य काफी उपजे और देश में सुभिक्ष हो ॥ ७२ ॥

**श्रवणे च यदा जीवस्तदा स्युः सर्वसंपदः ।**
**बुधे राजसुतत्रासः शनिर्भूरीक्षुकारकः ॥ ७३ ॥**

बृहस्पति के श्रवण नक्षत्र पर रहने से सर्वसम्पत्तियां मिलती हैं । बुध हो तो राजकुमारों को भय उपस्थित हो, और शनि पड़े तो उस वर्ष गन्ना अधिक पैदा हो जिससे लोग सुखी रहें ॥ ७३ ॥

**कृत्तिकायां च रोहिण्यां यदा जीवो हि तिष्ठति ।**
**मध्यमानि च सस्यानि तदा वृष्टिश्च मध्यमा ॥ ७४ ॥**

यदि वही बृहस्पति कृत्तिका और रोहिणी नक्षत्र पर आवें तो वृष्टि मध्यम हो एवं फलतः सब धान्य मध्यम तरह से उपजें ॥ ७४ ॥

**आर्द्रायां मृगशीर्षे च यदा वाचस्पतिः स्थितः ।**
**दुर्भिक्षं स्यादनावृष्टिः प्रजानां च सदाऽशिवम् ॥ ७५ ॥**

यदि आर्द्रा, मृगशिरा पर बृहस्पति आवे तो जानना कि वृष्टि नहीं होगी, दुर्भिक्ष एवं प्रजाओं का अमङ्गल होगा ॥ ७५ ॥

**फल्गुनीद्वयहस्तेषु मघायां च यदा गुरुः ।**
**सुभिक्षं च सुवृष्टिश्च प्रजानां स्यादरोगता ॥ ७६ ॥**

पूर्वफल्गुनी, उत्तरफल्गुनी, हस्त एवं मघा इन नक्षत्रों में यदि बृहस्पति रहे तो अच्छी वृष्टि, सुभिक्ष तथा प्रजा नीरोग हो ॥ ७६ ॥

**चित्रास्वात्योर्यदा जीवस्तदा चित्रपयोधरः ।**
**विचित्राणि भवन्त्येव सस्यानि च क्वचित् क्वचित् ॥ ७७**

यदि वही बृहस्पति चित्रा स्वाती नक्षत्र पर रहे तो देशमें कहीं २ पर वृष्टि अच्छी हो, फलतः कहीं २ पर धान्य की उपज अच्छी जाने ॥

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi


विशाखामैत्रयोर्जीवे धान्यं वर्षा च मध्यमा।
ज्येष्ठामूले मासयुग्मं वृष्टिर्वा सिद्धये न च ॥ ७८ ॥

विशाखा, अनुराधा पर बृहस्पति के रहने से वृष्टि एवं धान्य मध्यम उपजे, ज्येष्ठा-मूल पर रहने से केवल दो महीने तक वृष्टि हो, बाद में वृष्टि के अभाव से पूर्ण धान्य न हो ॥ ७८ ॥

आषाढयोर्द्वयोर्जीवो यदि वा वाक्पतिः स्थितः।
तदारोग्यं सुभिक्षं च सुवृष्टिश्च प्रजायते ॥ ७९ ॥

यदि पूर्वाषाढ़, उत्तराषाढ़, इन दो नक्षत्रों पर बृहस्पति रहे तो प्रजाओं में आरोग्य रहे, सुभिक्ष हो, एवं वृष्टि भी अच्छी हो ॥ ७९ ॥

अनावृष्टिश्च दुर्भिक्षं रेवत्यां संस्थिते गुरौ।
धनिष्ठायां च शुक्रेऽपि पीडा भवति हस्तिनाम् ॥८०॥

बृहस्पति यदि रेवती नक्षत्र पर आवे तो देश में अनावृष्टि के कारण पूरा दुर्भिक्ष होता है। इसी तरह शुक्र के रहने से हाथियों को पीड़ा होती है ॥ ८० ॥

इति श्रीअनूपमिश्रकृत–सरलाटीकायां तृतीयं प्रकरणम्।

---

# चतुर्थं प्रकरणम्

तत्रादौ होडाचक्रम्—

चू, चे, चो, ला, अश्विनी १। ली, लू, ले, लो, भरणी २। आ, ई, उ, ए, कृत्तिका ३। ओ, वा, वी, वू, रोहिणी ४। वे, वो, का, की, मृगशिरा ५। कू, घ, ङ, छ, आर्द्रा ६। के, को, हा, ही पुनर्वसु ७। हू, हे, हो, डा, पुष्य ८। डी, डू, डे, डो, आश्लेषा ९। मा, मी, मू, मे, मघा १०। मो, टा, टी, टू, पूर्वफल्गुनी ११। टे, टो, पा, पी, उत्तरफल्गुनी १२। पू, ष, ण, ठ, हस्त १३। पे, पो, रा, री, चित्रा १४। रू, रे, रो, ता, स्वाती १५। ती, तू, ते, तो, विशाखा १६। ना, नी, नू, ने, अनुराधा १७। नो, या, यी, यू,

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi



: । भू, धा, फा, ढा,
उत्तराषाढ २१ । जू,
, खे, खो श्रवण २३ ।
ा, सी, सू, शतभिषा
, थ, झ, ञ, उत्तरभाद्र

पदैः ।
यः स्मृताः ॥ १ ॥
षः १ । कृत्तिकाया-
ः २ । मृगशिरोऽर्द्ध-
सुपादमेकं पुष्याश्ले-
तराफल्गुनीपादमेकं
ः, चित्रार्द्धं कन्या ६ ।
७ । विशाखापादमे-
, पूर्वाषाढोत्तराढ-
ः, श्रवणो धनिष्ठार्द्धं
भाद्रपादत्रयं कुम्भः
रेवत्यन्तं च मीनः १२ ।
ते हैं, इस प्रकार कुल
नमें एक भगण याने
श्विनी के ४, भरणी के
ाम मेष राशि के हुए,
शिरा के २ मिला कर
९ ह राशि के चरण हुए । इसी प्रकार आगे भी मिथुन, कर्क-
आदि राशियों के चरण का निरूपण होता है ॥ १ ॥

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi



## होड़ादर्पणचक्र—

| नक्षत्र | वर्ण १ | वर्ण २ | वर्ण ३ | वर्ण ४ | राशि |
|---|---|---|---|---|---|
| अश्विनी १ | चु | चे | चो | ला | मेष (१) |
| भरणी २ | ली | लू | ले | लो | मेष (१) |
| कृत्तिका ३ | अ | इ | उ | ए | मेष (१) / वृष (२) |
| रोहिणी ४ | ओ | वा | वी | वू | वृष (२) |
| मृगशिरा ५ | वे | वो | का | की | वृष (२) / मिथुन (३) |
| आर्द्रा ६ | कु | घ | ङ | छ | मिथुन (३) |
| पुनर्वसु ७ | के | को | हा | ही | मिथुन (३) / कर्क (४) |
| पुष्य ८ | हु | हे | हो | डा | कर्क (४) |
| आश्लेषा ९ | डी | डू | डे | डो | कर्क (४) |
| मघा १० | मा | मी | मू | मे | सिंह (५) |
| पूर्वाफल्गुनी ११ | मो | टा | टी | टू | सिंह (५) |
| उत्तराफल्गुनी १२ | टे | टो | पा | पी | सिंह (५) / कन्या (६) |
| हस्त १३ | पू | ष | ण | ठ | कन्या (६) |
| चित्रा १४ | पे | पो | रा | री | कन्या (६) / तुला (७) |
| स्वाती १५ | रू | रे | रो | ता | तुला (७) |
| विशाखा १६ | ती | तू | ते | तो | तुला (७) / वृश्चिक (८) |
| अनुराधा १७ | ना | नी | नू | ने | वृश्चिक (८) |
| ज्येष्ठा १८ | नो | या | यी | यू | वृश्चिक (८) |
| मूल १९ | ये | यो | भा | भी | धनु (९) |
| पूर्वाषाढ २० | भू | धा | फा | ढा | धनु (९) |
| उत्तराषाढ २१ | भे | भो | जा | जी | धनु (९) / मकर (१०) |
| श्रवण २२ | खी | खू | खे | खो | मकर (१०) |
| धनिष्ठा २३ | गा | गी | गू | गे | मकर (१०) / कुम्भ (११) |
| शतभिषा २४ | गो | सा | सी | सू | कुम्भ (११) |
| पूर्वभाद्रपद २५ | से | सो | दा | दी | कुम्भ (११) / मीन (१२) |
| उत्तरभाद्रपद २६ | दू | थ | झ | ञ | मीन (१२) |
| रेवती २७ | दे | दो | चा | ची | मीन (१२) |

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi


ज्येष्ठा १८ । ये, यो, भा, भी, मूल १६ । भू , धा, फा, ढा, पूर्वाषाढ २० । भे, भो, जा, जी, उत्तराषाढ २१ । जू, जे, जो, खा, अभिजित् २२ । खी, खू , खे, खो श्रवण २३ । गा, गी, गू , गे, धनिष्ठा २४ । गो, सा, सी, सू, शतभिषा २५ । से, सो, दा, दी, पूर्वभाद्र २६ । दू ,थ, झ, ञ, उत्तरभाद्र २७ । दे, दो, चा, ची, रेवती २८ ।

राशिविवरणम्—

सप्तविंशतिभानां च नवभिर्नवभिः पदैः ।
अश्विनीप्रमुखानां वै मेषाद्या राशयः स्मृताः ॥ १ ॥

अश्विनी, भरणी, कृत्तिकापादमेकं मेषः १ । कृत्तिकायास्त्रयः पादाः, रोहिणी, मृगशिरोऽर्द्धं वृषः २ । मृगशिरोऽर्द्धमार्द्रा, पुनर्वसुपादत्रयं मिथुनः ३ । पुनर्वसुपादमेकं पुष्याश्लेषान्तं कर्कः ४ । मघा, पूर्वाफल्गुनी, उत्तराफल्गुनीपादमेकं सिंहः ५ । उत्तराफल्गुनीत्रयः पादाः, हस्तः, चित्रार्द्धं कन्या ६ । चित्रार्द्धं, स्वाती, विशाखापादत्रयं तुला ७ । विशाखापादमेकमनुराधा, ज्येष्ठान्तं वृश्चिकः ८ । मूलं, पूर्वाषाढोत्तराढपादमेकं धनुः ६ । उत्तरायास्त्रयः पादाः, श्रवणो धनिष्ठार्द्धं मकरः १० । धनिष्ठार्द्धं, शतभिषा, पूर्वाभाद्रपादत्रयं कुम्भः ११ । पूर्वाभाद्रपदापदमेकमुत्तराभाद्रपद-रेवत्यन्तं च मीनः १२ ।

अश्विन्यादि २७ नक्षत्र चार २ चरण के होते हैं, इस प्रकार कुल चरणों की संख्या २७ × ४ = १०८ हुई, इनमें एक भगण याने १२ राशियों नौ २ चरण की होंगी, यथा—अश्विनी के ४, भरणी के ४ और कृत्तिका का १ मिला कर ९ चरण प्रथम मेष राशि के हुए, शेष कृत्तिका के ३, रोहिणी के ४ और मृगशिरा के २ मिला कर ६ वृषराशि के चरण हुऐ । इसी प्रकार आगे भी मिथुन, कर्क-आदि राशियों के चरण का निरूपण होता है ॥ १ ॥

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi



द्वादशभावसंज्ञाः—

तनुर्धनं भ्रातृसुहृत्पुत्रशत्रुकलत्रकाः ।
मृतिश्च धर्मकर्मायव्यया द्वादश राशयः ॥ २ ॥

इस का अर्थ स्पष्ट है ॥ २ ॥

तन्वादिद्वादशभावचक्रम्—

| तनु | धन | सहज | सुहृत् | सुत | रिपु | जाया | मृत्यु | धर्म | कर्म | आय | व्यय |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| प्रथम | द्वि. | तृ. | च. | प. | षष्ठ | सप्तम | अष्टम | नवम | दशम | एका. | द्वा. |

ग्रहदृष्टिनिरूपणम्—

तृतीये दशमे पंच नवपञ्चमयोर्दश ।
तिथयश्चाष्टमे तुर्ये सप्तमे विंशतिस्तथा ॥ ३ ॥
विश्वास्तु ग्रहदृष्टीनामेषु स्थानेषु कीर्त्तिताः ।
पंचविंशोपकं प्रोक्तं पादमेकं क्रमाद् बुधैः ।
आये व्यये धने षष्ठे लग्ने दृष्टिर्न कस्यचित् ॥ ४ ॥

कोई भी ग्रह अपने स्थान से तीसरे, दशवें पर, पांच विश्वा (पाद दृष्टि) से देखते हैं. नौवे, पाचवें पर दश विश्वा (अर्ध-दृष्टि = २ चरण) से; चौथे, आठवें पर १५ विश्वा (पादोन दृष्टि = ३ चरण) से तथा सातवें (जाया स्थान) पर वीशों विश्वा (सम्पूर्ण दृष्टि = ४ चरण) से देखते हैं । एक पाद में ५ विंशोपक (विश्वा) होते हैं । ग्यारहवें, दूसरे, बारहवें, छठे एवं लग्न पर किसी की दृष्टि नहीं पड़ती है ॥ ३–४ ॥

तृतीये दशमे मन्दो नवमे पंचमे गुरुः ।
विंशति वीक्षते विश्वांश्चतुर्थे चाष्टमे कुजः ॥ ५ ॥

शनिश्चर तृतीय, दशम स्थान को; बृहस्पति नवम, पञ्चम को;

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi


तथा मंगल चतुर्थ, अष्टम स्थानों को पूर्ण दृष्टि ( २० विश्वा ) से देखते हैं ॥ ५ ॥

अमाविशेषफलम्—

**रविवारेण संयुक्ता यदा स्याज्ज्येष्ठमाघयोः ।**
**अमावास्या तदा पृथ्वी रुण्डमुण्डाकुला भवेत् ॥ ६ ॥**

यदि माघ और ज्येष्ठ मास की अमावास्या तिथि में रविवार पड़े तो जानना कि पृथ्वी पर घोर युद्ध होगा जिसके कारण अधिक जनक्षति होगी ॥ ६ ॥

त्रयोदशतिथिपक्षफलम्—

**एकपक्षे यदैव स्युस्तिथयश्च त्रयोदश ।**
**त्रयस्तत्र क्षयं यांति वाजिनो मनुजा गजाः ॥ ७ ॥**

यदि किसी महीने के एक पक्ष में केवल १३ तिथियां हों ( दो का क्षय हो ) तो जानना कि उस वर्ष में घोड़े, मनुष्य एवं हाथी अधिक संख्या में मरेंगे ॥ ७ ॥

वह्निचक्रम्—

**सूर्ययुक्ताच्च नक्षत्राद्दिनभं च त्रयं त्रयम् ।**
**आदित्यश्च बुधः शुक्रः शनिश्चन्द्रः कुजस्तथा ॥ ८ ॥**
**जीवो राहुश्च केतुश्च होमे क्रूरा न शोभनाः ।**
**आदित्ये तु भवेच्छोको बुधे संपत्तिरुत्तमा ॥ ९ ॥**
**शुक्रे चैव धनप्राप्तिः शनौ पीडा च जायते ।**
**चन्द्रे भवति लाभश्च भौमे च बंधुबंधनम् ॥ १० ॥**
**गुरौ परमकल्याणं राहौ हानिश्च सर्वदा ।**
**केतौ च प्राणसंदेहो वह्निचक्रमुदाहृतम् ॥ ११ ॥**

सूर्य-नक्षत्र से इष्ट दिन के चान्द्र नक्षत्र पर्यन्त गिनने से जो

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi


संख्या हो उसमें प्रथम तीन नक्षत्र सूर्य के भाग में रखे, फल शोक हो। उसके वाद तीन बुध के भाग में ( फल उत्तम सम्पत्ति मिले ) एवं तीन २ नक्षत्र आगे भी शुक्र, शनि, चन्द्रमा, मंगल, बृहस्पति, राहु तथा केतु इन ग्रहों के भाग में स्थापित करे, जिनका फल क्रमसे धनलाभ, पीड़ा, लाभ, वन्धुवर्ग का बन्धन, परम कल्याण, हानि तथा प्राणों का सन्देह जाने। अर्थात् शुभ ग्रह के भाग में होम का नक्षत्र पड़े तो शुभ और पाप ग्रह के भाग में पड़े तो अशुभ जानना चाहिए ॥ ८–११ ॥

स्पष्टार्थं चक्रम् ( सूर्यभात् )—

| ग्रह | सूर्य | बुध | शुक्र | शनि | चन्द्र | मंगल | गुरु | राहु | केतु |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| न०सं० | ३ | ३ | ३ | ३. | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| फलम् | शोक | सम्पत्तिलाभ | धनलाभ | पीड़ा | लाभ | बन्धुबन्धन | परमकल्याण | हानि | प्राणसन्देह |

वह्निवासः फलं च—

सैका तिथिर्वारयुता कृताप्ता
शेषे गुणेऽभ्रे भुवि वह्निवासः।
सौख्याय होमे शशियुग्मशेषे
प्राणार्थनाशौ दिवि भूतले च ॥ १२ ॥

जिस तिथि में हवन करना हो उसकी संख्या में दिनकी संख्या

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi



जोड़ कर चार से भाग दे, तब यदि ३ या शून्य शेष बचे तो पृथ्वी पर अग्निवास जानना, उस तिथि में हवन करने से सौख्य प्राप्त होता है। परन्तु यदि एक शेष रहे तो स्वर्ग में अग्नि का वास जाने, उसमें हवन करने का फल प्राणनाश होता है। ऐसे ही दो शेष रहने पर पाताल में वह्निवास जाने और फल धन नाश होता है। (अतः केवल पृथ्वी पर वह्निवास रहने से होम करना शुभकारक है)॥

षष्टिसंवत्सरनाम—

प्रभवो विभवः शुक्लः प्रमोदोऽथ प्रजापतिः।
अंगिराः श्रीमुखो भावो युवा धाता तथेश्वरः॥ १३॥
बहुधान्यः प्रमाथी च विक्रमो वृषभस्तथा।
चित्रभानुः सुभानुश्च तारणः पार्थिवो व्ययः॥ १४॥
ब्रह्मविंशतिरित्येका सृष्टिरत्र प्रजायते।
सर्वजित्सर्वधारी च विरोधी विकृतिस्तथा॥ १५॥
खरो नंदननामा च विजयश्च जयोऽपरः।
मन्मथो दुर्मुखश्चैव हेमलंबिविलम्बकौ॥ १६॥
विकारी शार्वरी चाथ प्लवश्च शुभकृत्तथा।
शोभनश्च तथा क्रोधी विश्वावसुस्तथापरः॥ १७॥
पराभवाख्यो ह्यपरा विष्णुर्विंशतिका ततः।
प्लवंगः कीलकः सौम्यस्तथा साधारणोऽपरः॥ १८॥
विरोधकृत्समः ख्यातः परिधावी प्रमोदकृत्।
आनन्दो राक्षसश्चाथ नलश्च पिङ्गलस्तथा॥ १९॥
कालः सिद्धार्थिरौद्री च दुर्मतिर्दुन्दुभिस्तथा।
अपरो रुधिरोद्गारी रक्ताक्षो क्रोधनस्तथा॥ २०॥
क्षयकृत्परतश्चान्यो रुद्रस्यापि तु विंशतिः।
वत्सराः षष्टिराख्याता नामतुल्यफलप्रदाः॥ २१॥

अर्थ मूल एवं चक्र से साफ है॥ १३-२१॥

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi



| ब्रह्मविंशति | | विष्णुविंशति | | रुद्रविंशति | |
|---|---|---|---|---|---|
| संख्या | वत्सर–नाम | संख्या | वत्सर–नाम | संख्या | वत्सर·नाम |
| १ | प्रभव | २१ | सर्वजित् | ४१ | प्लवङ्ग |
| २ | विभव | २२ | सर्वधारी | ४२ | कीलक |
| ३ | शुक्ल | २३ | विरोधी | ४३ | सौम्य |
| ४ | प्रमोद | २४ | विकृति | ४४ | साधारण |
| ५ | प्रजापति | २५ | खर | ४५ | विरोधकृत् |
| ६ | अङ्गिरा | २६ | नन्दन | ४६ | परिधावी |
| ७ | श्रीमुख | २७ | विजय | ४७ | प्रमोदकृत् |
| ८ | भाव | २८ | जय | ४८ | आनन्द |
| ९ | युवा | २९ | मन्मथ | ४९ | राक्षस |
| १० | धाता | ३० | दुर्मुख | ५० | नल |
| ११ | ईश्वर | ३१ | हेमलम्बी | ५१ | पिङ्गल |
| १२ | बहुधान्य | ३२ | विलम्बक | ५२ | काल |
| १३ | प्रमाथी | ३३ | विकारी | ५३ | सिद्धार्थि |
| १४ | विक्रम | ३४ | शार्वरी | ५४ | रौद्र |
| १५ | वृषभ | ३५ | प्लव | ५५ | दुर्मति |
| १६ | चित्रभानु | ३६ | शुभकृत | ५६ | दुन्दुभि |
| १७ | सुभानु | ३७ | शोभन | ५७ | रुधिरोद्गारी |
| १८ | तारण | ३८ | क्रोधी | ५८ | रक्ताक्ष |
| १९ | पार्थिव | ३९ | विश्वावसु | ५९ | क्रोधन |
| २० | व्यय | ४० | पराभव | ६० | क्षयकृत् |

राश्यधिपतयः—

मेषवृश्चिकयोर्भौमः शुक्रो वृषतुलाधिपः।
बुधः कन्यामिथुनयोः पतिः कर्कस्य चन्द्रमाः॥ २२॥
स्वामीज्यो मीनधनुषोः शनिर्मकरकुम्भयोः।

Jayatu Sanskritam, Kathmandu, Nepal